परालौकिक विज्ञान
मूल्य १५/-
मंत्र-तंत्र-यंत्र
विज्ञान
जनवरी ९४
अलौकिक योगिनी जिसकी झोली स्वर्ण मुद्राओं से भरी रहती थी!
उर्वशी का वह उद्दाम यौवन
मैंने यमदूत को लाठी मारी
आदिवासियों के तंत्र प्रयोग
सम्भव है परकाया प्रवेश
अघोरी की शव साधना
ज्योतिष की दृष्टि से विश्व की ये आश्चर्यजनक घटनाएं जो इस वर्ष घटेंगी

परम पूज्य गुरुदेव

श्रद्धेय

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी

के अवसर पर समस्त शिष्यों का आह्वान

अद्वितीय गुरुदेव -

वर्तमान युग के श्रेष्ठ मंत्र मर्मज्ञ, ज्योतिर्विद, विद्वान और लाखों- लाखों शिष्यों - साधकों तपस्वियों एवं सन्यासियों के हृदय आराध्य हैं। जिन्होंने अपने जीवन का एक - एक क्षण भारत की लुप्त विद्याओं एवं साधनाओं को उजागर करने में व्यतीत किया है, जिनके पास बैठना ही जीवन का सौभाग्य होता है, उनका स्पर्श ही ऐसा प्रतीत होता है मानों हम किसी देवतात्मा को स्पर्श कर रहे हैं, उनका सुखद साहचर्य ही जीवन की पूर्णता और श्रेष्ठता है।

हम लोगों का सौभाग्य -

पूरे भारत वर्ष में सदियों से गुरु परम्परा रही हैं, और गुरु आते जाते रहे हैं, जिन्होंने अपने ज्ञान के बल पर भारतवर्ष में प्रकाश की किरणें बिखेरी हैं, पर परम पूज्य गुरुदेव तो अपने आप में सम्पूर्ण हैं - **ज्योतिष, आयुर्वेद, धर्म, कर्म, योग, दर्शन, कर्मकाण्ड, लेखन, प्रवचन, मंत्र, तंत्र और जीवन की जितनी और जो भी वियाएं है उन सभी में उनकी पूर्णता और पारंगतता** इस बात की सूचक है कि भारतीय ऋषि परम्परा के वे अग्रणी पुरोधा हैं, सर्वोच्च हैं, सर्वश्रेष्ठ हैं, अद्वितीय हैं और यह हम लोगों का सौभाग्य

अजय कुमार उत्तम "निखिल"

आनो भद्रा ः क्रतवो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और

भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

प्रार्थना

ॐ गणानां त्वा गणपति (गूं) हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति (गूं)
हवामहे निधीनां त्वा निधिपति (गूं) हवामहे
वसो मम आहमजानि गर्भमात्व मजासि गर्भधम् ।

हे गणों के स्वामी! हम सब इस नव वर्ष में सर्व प्रथम आपका आह्वान करते हैं, क्योंकि आप हमारी सभी प्रिय वस्तुओं के स्वामी हैं। इस रूप में हम आपका पुनः - पुनः वन्दन करते हैं। धन आदि ऐश्वर्य के अधिपति भी आप ही हैं एवं समस्त विघ्नों से रक्षा करने में भी समर्थ आप ही हैं। आप भविष्य के गर्भ में छुपे हुए रहस्यों को हमारे समक्ष स्पष्ट करें, क्योंकि उनके समर्थ ज्ञाता एकमेव आप ही हैं।

नियम

नव वर्ष अभिनन्दन
विषय-सूची

साधना

कथ्य

मंथन

सद् गुरुदेव

स्तम्भ

विशेष

सम्पादकीय

जब से मानव सभ्यता का इतिहास पुरातात्विक वस्तुओं, साक्ष्यों अथवा लिखित रूप में प्राप्त होता है, वर्णन मिलने प्रारम्भ हो जाते हैं कि किस प्रकार से मानव ने इस पृथ्वी ग्रह के अतिरिक्त भी अन्य ग्रहों में अपनी उत्कंठा प्रकट की. . . विस्तृत फैला हुआ स्वच्छ नीला आकाश, तेजस्विता से भरा सूर्य, उमड़ती - घुमड़ती घटाएं और रात्रि की नीलिमा को आलोकित करता चन्द्र. . . ग्रह और नक्षत्र या अपनी इसी पृथ्वी पर विविध रत्नों और अनूठी प्रकृति को समेटे निरन्तर मिलते रहने वाले रहस्य. . . जिनकी अटूट श्रृंखला आज तक विद्यमान है। प्रत्येक ऐसी वस्तु जो सामान्य बुद्धि से परे रही हो या मनुष्य को आकर्षित और उद्वेलित करती रही हो परालौकिक ही कही जा सकती है। प्राचीन सभ्यता में जहां यह सब भय - मिश्रित और कौतूहल का विषय रहा फिर वहीं आगे आकर उपनिषद काल में ऋषियों और श्रेष्ठतम चिन्तकों ने इसी प्रकृति के मध्य उस अद्वितीय तत्व की खोज की जिसे उन्होंने एकमेव ब्रह्म की संज्ञा दी और इसी रूप में प्रकृति के अनेक रहस्योद्‌घाटन भी सम्भव हो सके, परालौकिक ज्ञान को अर्जित करने की भारत में प्राचीनतम परम्परा रही है।

क्या पृथ्वी के अतिरिक्त कहीं और जीवन है? क्या वह सभ्यता युक्त जीवन है? क्या ज्ञान - विज्ञान की अन्य परम्पराएं हमारे ग्रह के अतिरिक्त अन्य ग्रहों पर भी वियमान हैं? क्या पुराणों में वर्णित सूर्य लोक, चन्द्रलोक, देव लोक, इन्द्रलोक, विष्णुलोक वस्तुतः इसी ब्रह्माण्ड में वियमान हैं. . . यह सब प्रत्येक चिन्तनशील व्यक्ति को सोचने के लिए बाध्य करता ही है। इन्हीं विषयों पर ऋषियों ने अपने ढंग से चिन्तन किए और वैज्ञानिक अपने ढंग से खोज करते हुए वस्तु परक ढंग से शोधरत. . . और कवि व साहित्यकार इसे अपने ढंग से परखते रहे क्योंकि जो कुछ भी ललित है उसका आधार इस भूमि से, इस [illegible] चिन्तन से कुछ ऊपर उठना परालौकिक ही तो है!

नव वर्ष का प्रथम अंक "परालौकिक रहस्य - रोमांच विशेषांक" के रूप में प्रस्तुत करते हुए हम सभी इन्हीं चिन्तनों से ओतप्रोत और अपने प्रबुद्ध पाठक वर्ग को ज्ञान, शोध व साहित्य के मिले - जुले इस विशेष अंक में सहभागिता के लिए आमन्त्रित करते हुए हर्ष अनुभव कर रहे हैं। पत्रिका परिवार का यही प्रयास रहा है कि प्रत्येक अंक पिछले अंक से नितान्त भिन्न व श्रेष्ठ हो और पाठकों के पत्रों से इसकी पुष्टि प्राप्त कर हमें सन्तोष मिला है।

इस पृष्ठ के माध्यम से मुझे यह सौभाग्य मिला है कि मैं नव - वर्ष के अवसर पर पूज्यपाद गुरुदेव के मंगलमय आशीर्वाद को आप सभी तक पहुंचाने का माध्यम और वाहक बन रहा हूं।

मैं अपने समस्त सहयोगियों एवं मंत्र-तंत्र-यंत्र परिवार की ओर से आप सभी के लिए नव-वर्ष की शुभकामनाएं अर्पित कर रहा हूं।

आपका

नन्दकिशोर श्रीमाली

पाठकों के पत्र

⊙ . . . आपकी "मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान" पत्रिका पढ़कर हमें लगा कि इस पत्रिका और आपके शुभ आशीर्वाद के द्वारा ही सही मार्ग मिल सकता है। मैं भी कुछ साधना करना चाहता हूं, अब सब कुछ आप पर ही निर्भर है कि मुझे कौन सी साधना करनी पड़ेगी और कौन सी दीक्षा लेनी पड़ेगी . . .

पवन अग्रवाल,
मालवा

⊙ मैं नेपाल से लिख रहा हूं। मैंने आपकी पत्रिका को देखा और बहुत पसन्द आयी और मैं गुरुदेव जी से दीक्षा लेना चाहता हूं। मुझे लगता है दीक्षा लेने से मेरे जीवन में प्रगति होगी।

अरुण श्रेष्ट ,भोटाहिटी
काठमाण्डू

⊙ अगस्त के "योग से सौन्दर्य" विशेषांक में दिया गया "अनंग रति नमस्कार" चौथे पांचवें दिन ही अपना रंग दिखाने लग'गया . . .इसे पाकर लगता है जैसे इस मशीनी युग में कोई चमत्कारी सिद्धान्त मेरे हाथ लग गया जो स्वीच ऑन करते ही मेरे शरीर में नृत्य जैसा आरम्भ कर देता है। सौन्दर्य से सम्बंधित लेख तथा आसन आगे भी इसी प्रकार देते रहें।

जय प्रकाश पटेल,
छोटे मुड़पार , खरसिया

⊙ मैं पत्रिका का नियमित पाठक हूं लेखन के क्षेत्र में रुचि रखता हूं। मेरे मत में पत्रिका में ज्योतिष प्रश्नोत्तर की संख्या और अधिक बढ़ाई जाए, "पाठकों के पत्र" स्तम्भ के अन्तर्गत विविधता बढ़ाई जाए, राशिफल तथा मूलांक द्वारा भविष्य कथन में से एक स्तम्भ समाप्त कर उसके स्थान पर पाठकों को साधनात्मक मार्ग देने से सम्बन्धित कोई नया स्तम्भ प्रारम्भ किया जाए। पत्रिका में विज्ञापन लेने की नीति स्वागत योग्य है।

⊙ मैं आपके द्वारा सम्पादित हमेशा पढ़ता हूं। इस तरह की कोई भी पत्रिका बाजार में नहीं है। मुझे जून का अंक अब तक सबसे रोचक लगा है, प्रत्येक अंक से मेरी व्यक्तिगत कठिनाइयों का निवारण हुआ है। जिसके लिए अत्यन्त आभारी हूं।

श्याम प्रसाद गुप्ता,
[illegible]

⊙ मैं इसी वर्ष पत्रिका का सदस्य बना हूं और पूज्य गुरुदेव से दीक्षा ली है, दीक्षा लेने के बाद से मेरा मन पढ़ने में बेहद लगने लगा है और अब मैं पत्रिका का प्रसार करना चाहता हूं। मेरा इस पत्र के माध्यम से सभी पाठकों से कहना है कि वह भी पत्रिका पढ़ने के साथ - साथ शिविरों में भाग लेकर गुरुदेव के द्वारा प्राप्त ज्ञान का लाभ भी प्राप्त करें।

रामदेव कुमार यादव,
बरारी, भागलपुर

⊙ " मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान" का नियमित पाठक रहा हूं। कृपया बताएं कि जिन मंत्रों के अंत में 'नमः' एवं 'स्वाहा' आता है क्या उनका उच्चारण किया जाता है -- (हां) क्या वशीकरण माला से सामान्य जप किया जा सकता है? (नहीं)

पं. अर्जुनदत्त,
मुजफ्फर नगर

⊙ मुझे जून का सम्मोहन विशेषांक बहुत पसंद आया, मेरी इच्छा है कि गुरुजी मेरे फोटो पर सम्मोहन द्वारा मेरे शरीर में हमेशा बनी रहने वाली पीड़ा का निवारण कर दें।पत्रिका में कुछ कॉलम तथा स्थायी स्तम्भ बढ़ाने पर भी विचार करें।

भजन लाल थदानी,
कामठी, नागपुर

⊙ पत्रिका का अलौकिक कुछ लेखों के कारण तो अद्भुत बन गया जिसमें से "क्या सिद्धाश्रम की दिव्य आत्माएं . . ." लेख मुझे आध्यात्मिक एवं अलौकिक दोनों दृष्टियों से सर्वाधिक रुचिकर लगा। पत्रिका की प्रस्तुति प्रतिदिन निखरती जा रही है।

यादवेन्द्र सिंह राय,
कछवा, मिर्जापुर

⊙ अलौकिक विशेषांक रोचक भी रहा और ज्ञानवर्धक भी, आपने जिस प्रकार से अलौकिक शब्द सम्पादकीय में समझाया, वह नया लगा। काश! अन्य पत्रिकाएं भी इसी तरह परम्परा से हटकर चलें तथा जिस प्रकार से आप की भोंडी नकल करने का प्रयास कर रही हैं, उससे बचें . . . ।

रेणुका भारद्वाज,
भोपाल

⊙ 'मंथन' के अन्तर्गत आपने मौन रहते हुए भी बहुत कुछ कह ही दिया है और पाठक आसानी से आपके संकेत को समझ सकते हैं। ऐसा गम्भीर विवेचना पूर्ण लेख प्रकाशित करने के लिए बधाई। मंथन के अन्तर्गत पूर्व अंकों की ही भांति भविष्यवाणियों से सम्बंधित देश एवं विदेश की घटनाओं की विवेचना पुनः आरम्भ करें। क्या आप पाठकों की भविष्यवाणियां भी स्वीकार करेंगे?

अभ्यंकर डी. देशपाण्डे
धुलिया

कुसुम से अनंग रति का संयुक्त पर्व है यह

सरस्वती प्रकट दिवस

शीत की तीक्ष्णता कम हुई नहीं कि प्रत्येक कोने से निकल कर वसन्त मुस्कराने लग गया, कहीं रंग - बिरंगे पुष्पों के रूप में, तो कहीं शीत की तीक्ष्णता में यौवन की ऊष्णता को घोलता हुआ . . . पुष्पों से ही रंग - बिरंगे परिधानों और बयार सी ही अठखेलियों का मदमाता काल पुनः आ गया . . . शीत के भारी - भरकम वस्त्र जीवन पर लदी उदासी की तरह फेंक देने का ही तो पर्व है यह . . . वसन्त एक ऋतु से भी अधिक जीवन की एक घटना जो है।

वसन्त . . . एक ऐसा नाम जो पर्व से अधिक [illegible] हो चुका है . . . [illegible]

और यह जीवन की घटना घटित हो सकती है कभी भी किसी के भी जीवन में , इसी उल्लासमय माह के मध्य जीवन को पूरी तरह से सजा - संवार देने का, अपने- आप को तरोताजा कर लेने का और उमंगों से भर लेने का यही तो सिद्ध मुहूर्त है जिसके आधार में है भगवती महासरस्वती का तेज और बल . . . सौन्दर्य के सांथ-साथ समाई हुई तेज की ओस जैसी ताजगी ही तो व्यक्ति के मन में सौ-सौ उमंगों की कलियां खिलने देने के लिए बाध्य कर देती है, इठलाती हवाएं सोये हुए सपनों को

हौले से थपथपा कर जगा देती हैं, और विशेष रूप से वे युवक और युवतियां जिन्होंने बस अभी-अभी यौवन में कदम रखा हो . . .

और आरम्भ हो जाती है किसी योग्य जीवन साथी की तलाश . . . तन और मन की सारी उमंगों के साथ - साथ. . . कामदेव द्वारा पुष्प बाण का संधान होते ही इसी वसन्त ऋतु में ऐसी उमंगें उमड़ आएं कि . . .

लेकिन यही सब कुछ अभिशाप और जीवन पर बोझ बन जाता है किसी भी युवक और युवती के लिए जब उसकी विवाह योग्य आयु हो गई हो किंतु उचित वर या वधु न मिल पायी हो . . . कारण कोई भी हो सकता है, शारीरिक असुन्दरता हो ग्रहों का सही मेल - मिलाप न हो पाना सर्वांग गुण सम्पन्न होते हुए भी मनोनुकूल जीवन साथी न मिल पाना और उम्र की पर्तों के साथ मन पर भी बोझिलता व उदासी की पर्तें जमा हो जाती हैं, जो व्यक्ति को असमय ही हताश और रुखा-सूखा बना देती हैं। ऐसे में सारी सतर्कता सारी योजनाएं, सारे मेल-मिलाप एक ओर धरे रह जाते हैं, और व्यक्ति अपने मनोवांछित को पाने में सफल नहीं हो पाता।

विवाह जीवन का एक अत्यन्त आवश्यक, अत्यन्त नाजुक मोड़ है इसके सम्बंध में हल्के ढंग से निर्णय नहीं लिया जा सकता और ऐसी स्थितियों में जहां कोई लड़का अथवा लड़की मंगली दोष से ग्रस्त हो वहां तो बेहद सावधानी पूर्वक विचार कर निर्णय लेने की आवश्यकता होती है।

विवाह के संदर्भ में कई प्रयोग शास्त्रों में दिए गए हैं, पत्रिका में हमने ऐसे प्रयोग भी प्रकाशित किए जहां कोई मन चाहा वर अथवा वधु पाने की बात हो और साधक सरल प्रयासों से ही अपने अभीष्ट को प्राप्त कर सके, लेकिन इन सभी प्रयोगों से श्रेष्ठ प्रयोग, ऐसी साधनाओं का सिद्ध मुहूर्त होता है वसन्त पंचमी का दिवस, क्योंकि वसन्त पंचमी का दिवस अपने-आप में अनंग - रति का संयुक्त दिवस है। अन्य प्रयोग किसी देवी या देवता से सम्बन्धित होंगे वहीं यह प्रयोग गृहस्थ जीवन के आधार अनंग व रति के समवेत प्रभाव से संयुक्त है और इसी से इस अवसर पर वायुमण्डल में एक ऐसी मधुरता व्याप्त होती है जिसके कारण विवाह सम्बन्धित किया जाने वाला यह प्रयोग अवश्य ही सिद्ध होता है और साधक या साधिका अपने मनोनुकूल जीवन साथी प्राप्त करने में निश्चय ही सफल होता है।

> वसंत पंचमी . . .
> गुन - गुनाहटों और उमंगों का पर्व जिसकी पूर्णता होती है जीवन में योग्य जीवन साथी प्राप्त कर . . .
> ज्यों पुरुषों में सुगन्ध को घोल दिया जाए. . .किन्तु सभी प्रयास असफल हो रहे हों या मंगली दोष हो तो. . .

वसन्त पंचमी के दिन ऐसा साधक या साधिका प्रातः स्नान कर जितना भी शीघ्र हो सके सूर्योदय के तुरन्त बाद साधना में बैठ जाए। शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण करे और सामने श्वेत पुष्पों पर अनंग रति यंत्र स्थापित कर अपने विवाह में जैसी भी बाधा आ रही हो, उसका मन ही मन निराकरण करने की प्रार्थना करे अथवा जिस विशेष वर या वधु की कामना हो उसके नाम का संकल्प लेकर चार कामदेव हेत्वा यंत्र पर अर्पित करें जिस का तात्पर्य है कि

इस विवाह के द्वारा जीवन के चारों पुरुषार्थों को प्राप्त करने की कामना रखता हूं, और ऐसा करने के पश्चात् किसी भी पीले पुष्प की पंखुड़ियों को यंत्र पर बरसायें तथा मंजरी माला से निम्न मंत्र की पांच माला मंत्र जप करे।

मंत्र -

ॐ ह्रीं ऐं अनंग रत्यै फट्

मंत्र जप के उपरान्त चारों कामदेव हेत्वा एक पीले वस्त्र में बांध कर अपने पास सुरक्षित रखें तथा यंत्र व माला किसी आम के पेड़ के नीचे चढ़ा दें। इसके पश्चात् आगे भी उपरोक्त मंत्र का जप स्फटिक माला पर यदि नियमित रूप से करते रहें तो साधना की दृष्टि से अनुकूल माना गया है। **साधना ही एक ऐसा माध्यम है जो कैसी भी विपरीत दशा हो, साधक को अनुकूलता प्रदान करती ही है और यदि साधक के जन्मकुण्डली में मंगली दोष हो तो उसका शमन भी सफलता पूर्वक सम्भव होता है।** यह वास्तव में तंत्र का एक तीव्र प्रयोग है और इसी से उचित रहता है कि साधक अथवा साधिका इसका कम से कम प्रचार करें तथा अपनी मनोकामना पूर्ण हो जाने पर वैवाहिक जीवन में प्रवेश करने के बाद भी मंत्र को नियमित रूप में अवश्य जपें।

यह एक प्रकार से इसी प्रयोग की सम्पूरक है जिससे सम्पूर्ण वैवाहिक जीवन में अनुकूलता व श्रेष्ठता बनी रहती है।

सरस्वती श्रुति महती न हीयताम्।

सरस्वती देवी सम्पूर्ण संशयों का उच्छेद करने वाली तथा बोध स्वरूपिणी है, इनकी उपासना से समस्त सिद्धियां प्राप्त होती हैं।

सप्तविध स्वरों का ज्ञान प्रदान करने के कारण ही इनका नाम सरस्वती है।

सरस्वती प्रयोग

ज्ञान व बुद्धि की अधिष्ठात्री देवी भगवती सरस्वती का चिंतन तो वास्तव में सुसंस्कृत जीवन में आवश्यक है। जीवन में यदि यथार्थ रूप से प्रतिष्ठा मिलती है, सम्मान और अपनत्व मिलता है तो केवल एक श्रेष्ठ ज्ञानी और विद्वान को ही मिलता है।

संस्कृत का एक श्लोक है जिसका तात्पर्य है कि राजा तो केवल अपने देश में ही पूज्य होता है जबकि विद्वान सर्वत्र पूज्य होता है और जीवन में ऐसी स्थिति प्राप्त करने के लिए जहां कोई व्यक्ति भगवती महासरस्वती साधना सम्पन्न करता है, वहीं फिर आवश्यक हो जाता है कि अपनी संतानों को संस्कार रूप में और उनके अन्दर बीज रूप में सरस्वती साधना का प्रवेश दिलाएं जिससे वे कुशल वक्ता, अध्यापक, इंजीनियर, डाक्टर, प्रशासनिक अधिकारी, विधिवेता, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट या बिजनेस मैनेजमेंट जैसे श्रेष्ठ क्षेत्रों में प्रवेश कर अपना जीवन उन्नतिदायक बनाने के साथ ही साथ अपने माता-पिता और कुल का नाम प्रकाशित करे। प्रत्येक माता-पिता की इच्छा होती है कि उनका पुत्र अथवा पुत्री श्रेष्ठ और योग्य बन सकें, लेकिन इसकी पूर्ति बच्चों को अधिक समय तक पढ़ने के लिए कह कर नहीं, सहज रूप से सरस्वती साधना सम्पन्न करा कर हो सकती है।

वसन्त पंचमी ऐसी ही श्रेष्ठ नींव डालने का, ऐसी ही साधना के बीज बालक के सुकोमल मन में बिखेर देने का सिद्ध मुहूर्त है, अधिक आयु का हो जाने पर तो बालक का मन कई प्रकार की भावनाओं से, कई प्रकार के विचारों और प्रवृत्तियों से ढंक जाता है।

यदि अल्पायु में ही इस साधना का प्रवेश बालक के मन में दिला दिया जाए, तो यह संभव ही नहीं कि वह भविष्य में चलकर एक श्रेष्ठ विद्यार्थी न सिद्ध हो।

इसके लिए कोई लम्बी-चौड़ी साधना या मंत्र जप का विधान नहीं है। इस सिद्ध मुहूर्त पर एक छोटा सा प्रयोग सम्पन्न करना है। वशिष्ठ प्रणीत सिद्ध वागम्भरी मंत्रों से आपूरित सरस्वती यंत्र लाल धागे में बांधकर यदि बालक के गले में पहना दिया जाए तो फिर उसे आगे के जीवन में स्वतः ही अनुकूलता प्राप्त होने लग जाती है एक प्रकार से उसकी बुद्धि का विकास होने लग जाता है। वह विषय को तीव्रता से ग्रहण करने लगता है।

किसी चांदी की सलाका से बालक की जिह्वा पर उपरोक्त काल में अष्ट गंध से 'ऐं' बीज अंकित करें तथा एक माला 'ऐं' बीज मंत्र की स्फटिक माला से जपने की क्रिया भी सम्पन्न कर ली जाए। भविष्य में बालक को उसी माला से 'ऐं' बीज का निरंतर सरस्वती चित्र के आगे जप करने की प्रवृत्ति विकसित कराई जाए तो इससे कैसा भी मंद बुद्धि अथवा पढ़ाई से मन चुराने वाला बालक हो, उसकी अभिरुचि पढ़ाई व शिक्षा के क्षेत्र में जाग्रत होने लग जाती है।

मंत्र -

"ऐं"

वसन्त पंचमी वर्ष का अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध दिवस है। वसन्त पंचमी एक प्रकार से शीत और ग्रीष्म के मध्य का परिवर्तन काल है तथा संधि बिंदु है और प्रकारान्तर से मानव जीवन में भी संधि का काल है, जिसका उपयोग कर वह किसी सुखद भविष्य में प्रवेश कर सकता है।

यहां पर हमने इस दिवस विशेष से सम्बंधित दो प्रयोग ही स्पष्ट किए हैं किंतु योग्य साधक जानते हैं कि वसंत पंचमी के दिन कोई भी सात्विक साधना सम्पन्न की जा सकती है अतः आपके मन में किसी विशेष साधना को करने की इच्छा हो और वह इच्छा, उचित मुहूर्त के अभाव में न सम्पन्न कर पा रहे हों तो निःसंकोच इस दिवस का प्रयोग कर सकते हैं।

जिस प्रकार से गुरु पुष्य का संयोग अपने - आप में परम दुर्लभ और सात्विक साधनाओं हेतु विशिष्ट माना गया है, इसी प्रकार वसंत पंचमी का पर्व भी एक देव दुर्लभ क्षण - विशेष है। जीवन की सम्पूर्ण रसमयता और तेज को अपने- आप में समेटे हुए. . . साधक के जीवन में घोलने का प्रयास करता हुआ।

कस्तूरी - मृग भटकता रहता है. . .सुगन्ध अनुभव करता है किन्तु उद्गम नहीं जान पाता!
यह समाज भी आज किसी अव्यक्त सुगन्ध से आप्लावित तो है किन्तु इसका उद्गम . . .?
वह उन्हीं के मध्य ही छिपा है

अष्ट सिद्धि और नौ निधि . . . किन्तु वास्तविक नौ निधियां क्या हैं?

साधना जगत का एक लुप्त पृष्ठ जिसके माध्यम से ही इनका यथार्थ परिचय पहली बार सप्रमाण प्रस्तुत कर रहे हैं योगी चैतन्य देव. . . श्रीमाली जी के सुयोग्य शिष्य एवं मदालसा साधना के सिद्ध हस्त आचार्य!

भारतीय ज्ञान - विज्ञान अपनी श्रेष्ठता के कारण एक समय में सम्पूर्ण विश्व का आध्यात्मिक नेतृत्व कर ही चुका है और उसी का परिणाम है कि आज तक पश्चिम के देश अपनी समस्त भौतिक उन्नति के पश्चात भी आंतरिक संतोष और मानसिक शांति के लिए टकटकी बांध कर केवल और केवल भारत की ओर ही देखते हैं। विचार कर के देखिए कि क्या विश्व में किसी अन्य देश को ऐसा गौरव, ऐसी प्रतिष्ठा प्राप्त है? और इसका कारण है कि भारत के ऋषियों व मुनियों के पास ऐसी विद्याएं ऐसा ज्ञान और ऐसी श्रेष्ठता रही, जिससे वे न केवल जीवन- पर्यन्त अनेक दुर्लभ सिद्धियों के स्वामी बने रहे, अपितु इन्हीं साधनाओं और सिद्धियों के बल पर वे सभी के जीवन का कल्याण करने वाले अलौकिक शक्तियों से युक्त भी बन सके। प्रकृति एक प्रकार से उनकी दास बन कर रही और उन्होंने जीवन को पूर्ण उदात्तता और गौरव से जीकर दिखा दिया कि किस प्रकार से जीवन में भौतिकता और आध्यात्मिकता दोनों ही स्थितियों को साथ रखते हुए भी एक उच्चता और जीवन की पूर्णता प्राप्त की जा सकती है।

कालान्तर में अनेक कारणों से इस परम्परा में ह्रास आ गया है। जीवन मूल्यों में आए परिवर्तन और व्यक्ति की प्राणश्चेतना में कमी के कारण यह तो सम्भव नहीं रह गया कि देश में उसी ऋषि युग की भांति गौरवशाली परम्पराएं एवं अलौकिक ज्ञान शक्ति उपलब्ध हो किन्तु ऐसा भी नहीं है कि ये विद्याएं, यह ज्ञान सर्वथा लुप्त हो गया है।

आज भी हमारे आपके मध्य ऐसे श्रेष्ठ तपस्वी, ऐसे श्रेष्ठ चिन्तक, ऐसे श्रेष्ठ ज्ञाता और सबसे बड़ी बात कि उसी परम्परा के मूर्तिमंत स्वरूप उपस्थित हैं ही। केवल वर्णन और विवरण की दृष्टि से ही नहीं, वरन साकार रूप में, जिनके समक्ष ऐसी विद्याएं एक प्रकार से नर्तन करती रहती हैं।

यहां यह संक्षिप्त विवरण रुचिकर रहेगा कि कौन- कौन सी विद्याएं एवं सिद्धियां हैं जिनके कारण भारत विश्व में न केवल लौकिक वरन परालौकिक ढंग से भी नेतृत्व कर सका। योगियों के जीवन से सम्बन्धित जिन चमत्कारिक घटनाओं की कथाएं पढ़ने - सुनने को मिलती हैं, उनके पीछे आधारभूत विद्याएं कौन सी हैं? **ऐसी नौ विद्याएं मानी गयी हैं --**

१. परकाया प्रवेश -

परकाया प्रवेश का तात्पर्य अपने शरीर में से प्राणों को निकाल कर किसी दूसरे के मुर्दा शरीर में प्राणों का संचार करना है।

आज से मात्र तीन हजार वर्ष पहले शंकराचार्य ने परकाया प्रवेश सम्पन्न कर मण्डन मिश्र को शास्त्रार्थ में हराया था, परन्तु उसके बाद धीरे- धीरे यह विद्या लोप होती चली गई और आज इस विद्या के बहुत ही कम या गिने - चुने योगी ही बचे होंगे जो इस विद्या के प्रामाणिक जानकार होंगे।

इस विद्या के द्वारा किसी भी मृत व्यक्ति को कुछ वर्षों के लिए जीवन दान दिया जा सकता है, जिससे कि वह जीवन के शेष रह गए कार्य पूर्ण कर सके।

यह विद्या महत्वपूर्ण और गोपनीय रही है, यद्यपि मेरी नजर में दो- चार योगी अवश्य हैं, जो इस विद्या के जानकार हैं, परन्तु उनके बाद यह विद्या भी समाप्त हो जाएगी।

२. हादी विद्या

कई ग्रन्थों में इसका उल्लेख मिलता है, इस विद्या को सिद्ध करने पर व्यक्ति को भूख, प्यास नहीं लगती, न तो वह खाना खाता है, और न जल ही स्वीकार करता है, यद्यपि यह प्रकृति के विरुद्ध कार्य है, परन्तु हिमालय स्थित कन्दराओं में निवास करने वाले योगी इसी साधना के बल पर बिना खाये-पिये साधना में रत रहते थे। जब भोजन और पानी की आवश्यकता नहीं होती, तब फिर उन्हें मल-मूत्र विसर्जन क्रिया की भी जरूरत नहीं रहती। अतः इस विद्या के बल पर साधक कई वर्षों की समाधि लगाते हैं, ऐसा मंत्र सिद्ध होने पर बिना खान-पान के भी उनके शरीर में किसी प्रकार की कोई कमजोरी नहीं आती। नेपाल के तांत्रिक आचार्य विष्णु सारंग, केदारनाथ के योगी मनोहर जी आदि इस विद्या के जीवन्त प्रमाण हैं।

३. कादी विद्या

जिस प्रकार से हादी विद्या में भूख - प्यास नहीं मालूम होती, उसी प्रकार से कादी विद्या सिद्ध करने पर सर्दी,गर्मी, बरसात आदि व्याप्त नहीं होती , ऐसी विद्या सिद्ध करने वाला व्यक्ति चाहे बर्फीले पहाड़ों पर बैठ जाए, तब भी उसे सर्दी नहीं लगती और चाहे वह धधकती अग्नि के बीच में बैठ जाए तब भी उसे गर्मी का अहसास नहीं होता। ऐसी विद्या सिद्ध होने पर साधक किसी भी परिस्थिति में अपने आपको अविचलित बनाए रख सकता है।

१५ वीं शताब्दी में जैन आचार्य प्रज्ञासुरि कादी और हादी दोनों ही विद्याओं के जानकार थे, और इसका उल्लेख कई जैन ग्रंथों में हैं। गुरु गोरखनाथ, मत्स्येन्द्र नाथ आदि भी इसके जानकार रहे हैं, आज के युग में भी महाबलीपुरम मे जैनाचार्य महाबलि सुरि महाराज और बद्रीनाथ के योगी विश्वम्भर जी ऐसे ही जीवन्त उदाहरण हैं जिनके बल पर यह विद्या फिलहाल अस्तित्व में है।

४. मदालसा विद्या

इसका उल्लेख कई स्थानों पर आया है, इस विद्या को सिद्ध करने पर व्यक्ति अपने शरीर के आकार को छोटे से छोटा बना सकता है और चाहे तो शरीर को चार गुना लम्बा आकार दे सकता है। समुद्र को पार करते समय हनुमान ने इसी विद्या के बल पर अपने शरीर को अत्यधिक लघु और दीर्घ बनाया था।

सामान्यतः व्यक्ति की ऊंचाई छः फीट के लगभग होती है, इस विद्या के बल पर वह इस शरीर को मच्छर के आकार का बना सकता है, और चाहे तो सौ फीट लम्बा चौड़ा आकार दे सकता है।

कुछ वर्षों पूर्व देहरादून के आगे लाल टीबे के उस तरफ भैरव पहाड़ी पर योगियों के सम्मेलन में तैलंग बाबा ने इस विद्या के द्वारा अपने शरीर के आकार को लघुत्तम और महत्तम बनाकर सिद्ध कर दिया था कि इस विद्या के द्वारा ऐसा सब कुछ सम्भव है, फिर भी यह विद्या लुप्त प्रायः है और मेरी जानकारी में एक मात्र तैलंग बाबा ही इस विद्या के जानकार बचे हैं।

''मैं नमन युक्त हूं अपनी वायु गमन सिद्धि के लिए. . . पूज्य गुरुदेव श्रीमाली जी के प्रति, उनकी नौ निधियों के प्रति. . . जिनके कंठ में सरस्वती पूर्णता से विद्यमान है।''

-- स्वामी प्रज्ञानन्द

५. वायु- गमन सिद्धि

जैन ग्रंथों में कई स्थानों पर उल्लेख मिलता है, कि जैन साधु एक स्थान से दूसरे स्थान तक कुछ ही सेकण्डों में वायु-गमन प्रक्रिया से पहुंच जाते थे, स्वामी दिवाकरसूरि, स्वामी प्रज्ञासूरि आदि ऐसे ही सिद्धहस्त जैन साधु रहे हैं। उन्होंने इन क्रियाओं के माध्यम से सिद्धियां स्पष्ट की थीं।

आज से मात्र साठ वर्ष पहले वाराणसी में स्वामी विशुद्धानन्द जी ने ऐसा ही प्रयोग सिद्ध कर दिखा दिया था कि यह विद्या मात्र कपोल कल्पना नहीं है।

आज के युग में दक्षिण में मदुराई स्थिति योगी चैतन्य स्वामी तथा कन्या कुमारी से १५ किलोमीटर दूर समुद्र की चट्टान पर स्थित योगी निरंजन स्वामी इस विद्या के जानकार सिद्ध हैं, उन्होंने कई बार इन सिद्धियों का प्रदर्शन किया, परन्तु यह विद्या भी अब लुप्त प्रायः है और इन चार - छः योगियों के देहावसान के बाद यह विद्या भी समाप्त ही हो जाएगी।

६. कनकधारा सिद्धि

शंकराचार्य के समय तक यह विद्या सिद्ध थी, जब एक ब्राह्मणी की दुर्दशा और विपन्नता शंकराचार्य ने देखी तो उन्होंने उसी समय कनकधारा यंत्र के माध्यम से उसके घर में स्वर्ण वर्षा कर दी थी, कनकधारा में चांदी के पत्र पर सात स्वर्णिम धाराएं खड़ी तथा सात आड़ी अंकित कर ३६ कोष्ठकों में बीजमंत्र अंकित करते हैं। अब यह विद्या कुछ गिने-चुने लोगों के पास ही है, और धीरे-धीरे लुप्त हो रही है।

७. प्रज्ञा साधना

जब किसी को सन्तान नहीं हो रही हो या गर्भाशय में ही कोई बाधा हो अथवा पुत्र - योग नहीं हो तो योगी अपने शिष्य को आज्ञा देकर उसको गर्भ में जन्म लेने को कह सकते हैं, इसे प्रज्ञा साधना कहा जाता है, अनेक योगियों को इस प्रकार से बांझ स्त्रियों

(शेष पृष्ठ ५८ पर)

योगीराज निरूपानंद जी एक प्रसिद्ध साधक हैं। एक बार चर्चा के मध्य उनके किसी भक्त शिष्य ने पूछ लिया कि भगवान श्रीकृष्ण तो एक ही थे फिर वे रास में प्रत्येक गोपी के संग रहकर कैसे उसको संतुष्ट करते थे? योगीराज एक क्षण मुस्कराये और बोले - ''इस एक देह से भी कई देह बनाई जा सकती हैं यदि व्यक्ति प्रयास कर सके तो . . .''

. . . जो बात योगीराज ने अधूरी ही रहने दी उसका रहस्य छुपा है छिन्नमस्ता साधना में। एक देह के हजार रूप ही नहीं, वायुगमन साधना, अदृश्य हो जाने की शक्ति और शून्य साधना इन सभी सिद्धियों को साधक छिन्नमस्ता साधना सम्पन्न कर ही प्राप्त कर सकता है।

दस महाविद्याओं में सबसे अधिक तीक्ष्ण सर्वाधिक दुष्कर और रहस्यमयी विद्या का स्पष्टीकरण पूर्ण प्रामाणिकता से . . .

कहते हैं साधक जिस दिन से छिन्नमस्ता साधना करने का विचार कर लेता है, उसी दिन से उसके सौभाग्य के क्षण प्रारम्भ हो जाते हैं। यह तो सम्पूर्ण रूप से तंत्र की ही साधना है। दस महाविद्याओं में सर्वाधिक दुष्कर भी और सर्वाधिक फलदायी भी। एक प्रकार से जब साधक अन्य नौ महाविद्याएं सिद्ध कर लेता है तभी इस साधना में प्रवृत्त होने की कल्पना करता है।

छिन्नमस्ता . . . स्वयं अपने ही मस्तक को विदीर्ण कर देने की रहस्यमयी विद्या न केवल भौतिक दृष्टि से वरन आध्यात्मिक दृष्टि से भी सर्वोच्च साधना है। छिन्नमस्ता का अर्थ ही है जो अपने मस्तक अर्थात् अपने अहं को नष्ट कर दे। देवी का यह स्वरूप सबसे अधिक विलक्षण, सबसे अधिक विचित्र है, विपरीत रति मुद्रा में शिव पर विराजमान देवी जिनके मस्तक से

छिन्नमस्ता द्वादशनाम स्तोत्र

ॐ छिन्ना छिन्नमस्ता छिन्नमुण्डधरा क्षता।
क्षोद-क्षेमकरी स्वक्षा क्षोणीशाच्छादन क्षमा।।
वैरोचनी वरारोहा बलिदान -- प्रहर्षिता।
बसि-पूजित-पादाब्जा वासुदेव- प्रपूजिता।।
इति द्वादश - नामानि छिन्नमस्ता - प्रियाणि च।
स्मरेत् प्रातः समुत्थाय तस्य नश्यन्ति शत्रवः।।

निकलती हुई रक्त की धाराएं जया डाकिनी व विजया शाकिनी के मुख में जा रही है उसका रहस्य आज तक शास्त्रकार पूर्ण रूप से समझ न सके और अपनी क्षमता भर व्याख्यित करके ही रह गए।

वास्तव में छिन्नमस्ता की इस विपरीत रति मुद्रा का अर्थ है - भूमि तत्व से परे हो जाने की क्रिया। भूमि तत्व से परे होना ही परालौकिक विद्याओं में सफलता का आधार है।

जब तक हम लौकिक रूप में भूमि तत्व के माध्यम से इस पृथ्वी से जुड़े हैं, तब तक पृथ्वी से परे परालौकिक जगत की सिद्धियों में प्रवेश भी कैसे कर सकते हैं? लौकिक से परालौकिक होने का रहस्य छिन्नमस्ता ही अपने-आप में छुपाए है।

वायुगमन, शून्य से इच्छित पदार्थ प्राप्ति, अदृश्य हो जाने की शक्ति अर्थात् इस भौतिक देह के विलक्षण प्रयोग, बिना छिन्नमस्ता की कृपा के संभव ही नहीं और न छिन्नमस्ता साधना सम्पन्न किए बिना आध्यात्मिक श्रेष्ठता में प्रवेश मार्ग सम्भव है।

छिन्नमस्ता साधना का मंत्र ही इसके पूरे रहस्य का विवेचन करने वाला है अभी तक इसके बीजाक्षरों का महत्व पूर्ण-रूपेण समझा नहीं गया और मुख्य रूप से छिन्नमस्ता साधना को राज्यबाधा विनाश, और तांत्रोक्त क्रियाओं की आधारभूत देवी ही माना गया है लेकिन छिन्नमस्ता सम्पूर्ण सिद्धिप्रदायक देवी है और तभी छिन्नमस्ता के विषय में उल्लेख है - **छिन्नमस्ता भवेत् सुखी**। ऐसी तीव्र शक्ति की उपासना करने के बाद कोई दग्ध करने वाली स्थिति सम्भव रह ही नहीं सकती। जो देवी लौकिक से परालौकिक की ओर ले जाने में समर्थ है, वह इस धरा के कष्टों से भी मुक्ति दिलाने में भला क्यों नहीं सहायक होगी।

छिन्नमस्ता का मूल मंत्र है -

।।श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्र वैरोचनीये हुं हुं फट् स्वाहा।।

सोलह अक्षरों के इस मंत्र में प्रत्येक मंत्र का अर्थ इस प्रकार है --

श्रीं - यह लक्ष्मी बीज है। **ह्रीं** - यह लज्जा बीज है, जो कि जीवन में सभी दृष्टियों से उन्नति में सहायक है। **क्लीं** - यह मनोभव बीज है, जो कि समस्त पापों का नाश करने वाला है। **ऐं** - यह जीवन में समस्त गुणों को देने वाला और संजीवनी विद्या प्रदान करने वाला बीज है। **ब-** यह पृथ्वी पति बीज है, जिससे कि साधक पूरी पृथ्वी पर नियंत्रण करने में समर्थ होता है। **ज-** यह इंद्र प्रतीक है जो कि एक स्थान से दूसरे स्थान पर एक ही क्षण में ले जाने में सहायक है। **र-** यह रेफ युक्त है, जो कि अग्निदेव का प्रतीक है, यह बीज जीवन की पूर्णता का प्रतीक है। **व-** यह वरुण देव का प्रतीक है जिससे स्वयं के शरीर पर नियंत्रण रहता है, और अपने स्वरूप को कई रूपों में विभक्त कर सकता है। **ऐ-** यह त्रिपुर देवी का प्रतीक है। **र-** यह त्रिपुर सुंदरी का बीजाक्षर है। **औ** - यह सदैव त्रैलोक्य विजयनी देवी का आत्मरूप प्रतीक है। **च-** चंद्र का प्रतीक है, जो कि पूरे शरीर को नियंत्रित, सुंदर व सुखी रखता है। **न-** यह गणेश प्रतीक है, जो कि ऋद्धि-सिद्धि देने में समर्थ है। **ई-** यह साक्षात कमला का बीजाक्षर है। **य-** सरस्वती का बीज है, जिससे साधक को वाक् सिद्धि प्राप्त होती है। **हुं-** यह माया युग्म बीज है, जो आत्म और प्रकृति का संगम है, इससे साधक सम्पूर्ण प्रकृति पर नियंत्रण स्थापित कर सकता है। **फट्** - यह वैखरी प्रतीक है, जिससे साधक किसी भी क्षण मनोवांछित कार्य सम्पन्न कर सकता है। **स्वा-** यह कामदेव का बीज है, जिससे साधक का शरीर सुंदर, स्वस्थ व आकर्षक बन जाता है। **हा-** रति बीज है, जो कि पूर्ण पौरुष प्रदान करने में समर्थ है।

सोलह बीजाक्षरों की संयुक्त साधना और वह भी तीक्ष्ण तांत्रोक्त साधना, सम्भवतः विश्व में कोई अन्य नहीं होगी। केवल साधना ही नहीं महाविद्या साधना जिसमें मां भगवती जगदम्बा का पूर्ण शक्ति स्वरूप उतर आया है और तीक्ष्ण होते हुए भी माधुर्य समाहित किए ही है।

छिन्नमस्ता साधना से भयभीत होने की अथवा उसको मात्र वामाचारी पद्धति की साधना मानना ही उचित नहीं है। यह महाविद्या मूलतः मां भगवती जगदम्बा की ही साधना है जिस प्रकार एक मां जहां एक ओर

शिशु के लिए वात्सल्यमय होती है, वहीं उसकी रक्षा करने के लिए क्रुद्ध और उग्र स्वरूप भी धारण कर लेती है। देवी के तीक्ष्ण स्वरूपों का यही रहस्य है।

यद्यपि छिन्नमस्ता साधना तांत्रोक्त साधना होने से अपने विधि-विधान में जटिलता लिए हुए है किंतु इसकी संक्षिप्त और प्रामाणिक रूप से भी साधना सम्भव है।

छिन्नमस्ता साधना दो रूपों में की जाती है, प्रथमतः यदि साधक एक दिवस का प्रयोग करता है तो उसे छिन्नमस्ता साधना में सफलता मिलती है और द्वितीयतः यदि वह अनुष्ठान रूप में एक माह तक सम्पन्न करता है तो पूर्ण परालौकिक सिद्धि प्राप्त होती है और फिर ऐसे सिद्ध साधक को परालौकिक विद्याएं प्राप्त करने के लिए आधार भूमि प्राप्त हो जाती है।

विश्व के सभी तांत्रिकों ने एक मत से छिन्नमस्ता साधना की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। प्रख्यात योगी ज्योतिनंद जी के अनुसार छिन्नमस्ता साधना प्रकारांतर से त्रिपुर सुंदरी षोडषी के ही तांत्रोक्त स्वरूप की ही साधना है।

अतः इसमें 'श्री' और सम्पन्नता का मूल रहस्य तो विद्यमान है ही, वहीं प्रख्यात योगी **नियोगानंद** जी के अनुसार यदि जीवन में सम्पूर्ण रूप से शुद्ध ताप व पाप रहित होना है, अखण्ड समाधि प्राप्त करनी है, सभी पापों और पूर्व जन्मकृत दोषों से मुक्त होना है तो छिन्नमस्ता साधना से श्रेष्ठ कोई अन्य साधना सम्भव ही नहीं।

छिन्नमस्ता सहस्रनाम में जिस प्रकार से छिन्नमस्ता की लघु प्रामाणिक व तांत्रोक्त पद्धति दी गयी है वही वास्तव में आज के युग के लिए सर्वाधिक अनुकूल है।

साधना विधि

इस साधना के लिए ताम्र पत्र पर अंकित **छिन्नमस्ता यंत्र** तो आवश्यक है ही, साथ ही मां भगवती छिन्नमस्ता के ६ आयुधों की भी आवश्यकता पड़ती है, जिन्हें **छिन्नमस्ता खड्ग, छिन्नमस्ता सुख-खड्ग, छिन्नमस्ता वज्र, छिन्नमस्ता पाश, छिन्नमस्ता अंकुश एवं छिन्नमस्ता कवच** की संज्ञा दी गई है और इन्हें विशेष तांत्रोक्त क्षणों में मंत्रों द्वारा प्राण प्रतिष्ठित कर देवी को भेंट करने से वे अत्यन्त प्रसन्न होती है। ऐसा विधान है।

विनियोग

अस्य शिरश्छन्द मंत्रस्य, भैरव ऋषिः। सम्राट छंद। छिन्नमस्ता देवता। ह्रीं ह्रीं बीजं स्वाहा शक्तिः। अभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

उपरोक्त ढंग से उच्चारण कर जल भूमि पर छोड़ दें तथा छिन्नमस्ता यंत्र पर तेल मिश्रित सिंदूर से तिलक कर लाल पुष्प अर्पित करें एवं बलि स्वरूप में सेब अथवा कोई अन्य बड़ा गोल फल बिना काटे अर्पित करें, तथा उपरोक्त समस्त आयुधों को **ॐ आं खड्गाय नमः, ॐ ईं वज्राय नमः, ॐ ऐं पाशाय नमः, ॐ ओं अंकुशाय नमः ॐ अं कवचाय नमः**, उच्चारण कर यंत्र पर भगवती छिन्नमस्ता को श्रद्धापूर्वक भेंट करें तथा **छिन्नमस्ता माला** से मूल मंत्र का ५१ माला मंत्र जप करें।

मंत्र

।। श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्र वैरोचनीये हुं हुं फट् स्वाहा।।

यह साधना किसी शुक्ल पक्ष के मंगलवार अथवा रविवार की रात्रि मे सम्पन्न की जा सकती है। यदि साधक एक बार में सम्पूर्ण मंत्र जप करने में असमर्थ हो तो वह २१ माला के बाद विश्राम कर शेष मंत्र जप कर सकता है किंतु एक ही रात्रि में ५१ माला मंत्र जप सम्पन्न करना अनिवार्य है।

मंत्र जप के बीच में साधक को विभिन्न प्रकार के अनुभव हो सकते हैं। भयावह स्थितियां भी आ सकती हैं लेकिन साधक बिना विचलित हुए मंत्र जप करता रहे। कई बार साधना की तीव्रता के कारण साधक को मंत्र जप के मध्य हल्का सा चक्कर भी आ सकता है अथवा आभूषणों की ध्वनि या तीव्र गंध भी अनुभव हो सकती है- यह सब वास्तव में साधना क्रम का सफलतापूर्वक गतिशील होना ही है।

एक दिवसीय प्रयोग से जहां साधक को राज्य पक्ष से अनुकूलता, पूर्वजन्म कृत दोषों से मुक्ति, शत्रुओं का समूल विनाश एवं आकस्मिक संकटों से मुक्ति मिलती है, फिर वहीं इस साधना को नियम पूर्वक व ब्रह्मचर्य पूर्वक एक माह तक करने पर, स्वतः ही ऐसी स्थितियां प्राप्त होने लगती हैं कि उसके समक्ष विश्व का कोई रहस्य, रहस्य नहीं रह जाता। और कहते हैं, **पूर्ण सिद्ध साधक के समक्ष देवी वह मंत्र स्पष्ट कर देती है जिसके लोम व विलोम उच्चारण द्वारा साधक दृश्य व अदृश्य होने की शक्ति प्राप्त कर लेता है।**

वास्तव में छिन्नमस्ता साधना इस युग की एक ऐसी साधना है जिसको प्रत्येक योग्य साधक समय प्राप्त कर सम्पन्न अवश्य करता है। अपने भौतिक जीवन के लिए भी और भौतिक जीवन के ऊपर उठकर विश्व की उन दुर्लभ साधनाओं को हस्तगत करने लिए, उन सिद्धियों को प्राप्त करने के लिए जिसके कारण भारत की ख्याति आज तक अक्षय है।

ज्योतिष की दृष्टि से विश्व की ये आश्चर्यजनक घटनाएं जो इस वर्ष घटेंगी

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान कार्यालय का **''ज्योतिष प्रकोष्ठ''** अचूक भविष्य वाणियां करने में इसलिए समर्थ है कि यह भविष्य के ललाट पर लिखी पंक्तियां पढ़ लेता है, और इसीलिए इसने जो भी भविष्य वाणियां की, वे अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई है और पूरे भारत वर्ष ने एक स्वर में यह माना है कि ज्योतिष विज्ञान अपनेआप में प्रामाणिक और अचूक विज्ञान है, और फिर जिस पर परम पूज्य गुरुदेव (वर्तमान समय के वराह मिहिर) **''डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली जी''** का आशीर्वाद और वरद हस्त हो वह भविष्य को पढ़ने और आंकने में समर्थ हों तो इसमें आश्चर्य भी क्या?

सन् १९९४ अपने- आप में उथल - पुथल का वर्ष है, केवल भारत वर्ष ही नहीं अपितु पूरा संसार एक अजीब से उहापोह में सांस ले रहा है दिग्भ्रमित सा है, अनिश्चय और अनिश्चितता के वातावरण में सांस ले रहा है, फलस्वरूप कुछ स्पष्ट नहीं है कि अगले पल क्या होने वाला है, १९९४ में क्या- क्या घटनाएं घटित होंगी और इस कार्य का बीड़ा उठाया है पत्रिका के **''ज्योतिष प्रकोष्ठ ''** ने, और उसने ग्रहों की चाल तथा ग्रह स्थिति का अध्ययन कर जो कुछ देखा है, वह आश्चर्यजनक है,वर्ष १९९४ में कई ऐसी घटनाएं घटित होने वाली हैं जो जनमानस को झकझोर कर रख देने में पर्याप्त है।

▫ चीन और भारत वर्ष प्रगाढ़ मित्र

आज भारत और चीन लगभग विरोधी है, यद्यपि पिछले कुछ समय से बर्फ टूटी है, परन्तु अभी तक इन दोनों देशों को मित्र नहीं कह सकते, चीन का झुकाव पकिस्तान की ओर है और इस छोटे से देश ने चीन की शह पर भारत वर्ष के खिलाफ बराबर अघोषित युद्ध की स्थिति सी बना रखी है।

पर इस वर्ष चीन, पाकिस्तान की अपेक्षा भारत की तरफ झुकेगा, झुकेगा ही नहीं, मित्रता की ओर तेजी से बढ़ेगा, भारत और चीन मिलकर एक नया शक्ति समीकरण तैयार करेंगे तथा वर्ष के समाप्त होते - होते सीमा सम्बन्धी विवाद भी सुलझने की ओर तेजी से प्रगति होगी और भारत को इस सम्बन्ध में लाभ ही रहेगा।

▫ अमेरिका के विरुद्ध भारत तन कर खड़ा होगा -

पिछले काफी समय से जो घटनाएं घटित हुई हैं, उससे तो अमेरिका भारत वर्ष पर हावी ही होता नजर आ रहा है और भारत बराबर दब सा रहा है, उसकी हर बात मानने के लिए बाध्य सा प्रतीत हो रहा है. . . पर इस वर्ष के मध्य में स्थिति में अन्तर आएगा, जबरदस्त अन्तर . . . और भारत वर्ष अमेरिका के सामने तन कर खड़ा होगा, ताकत के साथ . . . धौंस- पट्टी सहन करने से इन्कार कर देगा, इस प्रकार भारत इस वर्ष के अन्त तक एक शक्ति के रूप में अमेरिका के सामने तनकर खड़ा हुआ सा प्रतीत होगा।

▫ पाकिस्तान गृह युद्ध की आग में --

ऊपर से पाकिस्तान भले ही शांत दिखाई दे पर ग्रह स्थिति से यह अनुभव हो रहा है कि पाकिस्तान धीरे-धीरे गृह युद्ध की आग की ओर अग्रसर हो रहा है, और यह पूरा वर्ष उसे आन्तरिक उलझनों में उलझने के लिए

बाध्य कर देगा और कोई आश्चर्य नहीं कि बेनजीर को प्रधान मंत्री के रूप में लेने के देने पड़ जाएं।

❑ फिर भूकम्प -

राहु की युति इस बात को फिर आगाह कर रही है, कि मध्यप्रदेश का कुछ भू-भाग, महाराष्ट्र तथा बम्बई का कुछ हिस्सा फिर भूकम्प की चपेट में आयेगा और यदि समय रहते सावधान नहीं रहे तो जरूरत से ज्यादा धन-जन की हानि सहन करने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा।

❑ भारतीय प्रदेश -

उत्तर प्रदेश राज्य व्यवस्था की दृष्टि से अस्थिर सा रहेगा और वर्ष के उत्तरार्द्ध में एक बार फिर सत्ता परिवर्तन होगी। यही स्थिति मध्य प्रदेश में भी सम्भव है। राजस्थान में राजनीतिक स्थिति पूरे वर्ष भर डांवा डोल रहेगी।

❑ रूस और अन्य गणतंत्र -

पारस्परिक मतभेद, सन्देह और गृह युद्ध में ही उलझे रहेंगे, और सत्ता परिवर्तन तो वर्ष के अन्त तक होना ही है, गोर्बाच्योव एक बार फिर सत्ता की तरफ अग्रसर होंगे।

❑ केन्द्र -

केन्द्र की स्थिति का यदि अध्ययन करें तो ग्रह स्थिति यह स्पष्ट कर रही है कि केन्द्र के नेतृत्व में काफी कुछ परिवर्तन होंगे और कुछ ऐसे नये चेहरे केन्द्र के मंत्रीमण्डल में स्थान पायेंगे जिनसे हम ज्यादातर परिचित ही नहीं हैं।

केन्द्रीय सत्ता निर्णय लेने में भी काफी कुछ गलतियां करेगा और यदि सही कहा जाए तो हमारी विदेश नीति एक बार फिर असफल सी प्रतीत होगी।

❑ लंका - नेपाल - बंगला देश -

लंका में भीषण जातीय दंगे होंगे और पूरे वर्ष भर यह छोटा सा देश आग की लपटों में झुलसता रहेगा, बंगला देश में इस वर्ष काफी धनजन की हानि होगी और बाढ़ से बहुत अधिक नुकसान होगा। नेपाल शान्त सा रहेगा, पर वर्ष के मध्य में सत्ता परिवर्तन होने के संकेत स्पष्ट हैं।

❑ काश्मीर -

काश्मीर की स्थिति में सुधार होगा तो सही पर अत्यधिक धीमी गति से, अभी राजनीतिक समीकरण स्पष्ट नहीं है।

❑ हम और आप -

राशि	अक्षर	वर्ष फल	रत्न
मेष	च, ल, अ	वर्ष सामान्य	विद्रभ रत्न पहनें
वृष	उ, व	वर्ष ठीक नहीं	पन्ना रत्न पहिने
मिथुन	क,छ	सामान्य वर्ष	पुननेवा की जड़ पहिनें
कर्क	ड, ह	वर्ष शुभ	फिर भी केलवांग उपरत्नधारण करें
सिंह	म, ट	सामान्य वर्ष	निलक्ंग रत्न धारण करें
कन्या	प, ट	अनुकूल वर्ष	चिचियांग की जड़ भुजा पर बांधे
तुला	र, त	शुभ कार्य	पन्ना रत्न पहिने
वृश्चिक	न, झ	शुभ वर्ष	हेमांग उपरत्न पहिने
धनु	भ, ध, फ, ढ	विपरीत वर्ष	केमडुज जड़ भुजा पर बांधनी जरूरी
मकर	ख, ज	अशुभ वर्ष	चलेंग वनस्पति पहिननी जरूरी
कुम्भ	ग, स	अशुभ वर्ष	नीलम पहिने
मीन	दे, छ	अशुभ वर्ष	वेलांग वनस्पति की जड़ दाहिनी भुजा पर बांधे

अगले अंकों में सटीक भविष्यवाणियां दे रहें हैं--

- **''मिड टर्म इलेक्सन''** कब हो रहे हैं?
- केन्द्रीय सत्ता परिवर्तन किस तारीख को होगी?
- कब और किस तारीख को भारत-पाक युद्ध होने का योग है?
- विश्व युद्ध कब, कहां?

और इक्कीस चौंकाने वाली भविष्यवाणियां भी अगले अंकों में. . .

अलौकिक योगिनी

कोई बात नहीं यदि आप राजोला से पहले न मिले हों, कोई आवश्यक नहीं कि आप उसकी भाषा से भी परिचित हों, क्योंकि सारे चेहरे पर बोलती सी उसकी बड़ी-बड़ी आंखें सारी बात खुद ही कह सुन लेती हैं और रही-सही कसर पूरी कर देती है वह अपनी आत्मीयता भरी निश्छल मुस्कान से . . . लम्बोतरा चेहरा, गालों की हड्डियां कुछ उभरी हुई, इकहरा बदन और खुलता हुआ गोरा रंग, लम्बी भुजाएं और भूरे-सुनहरे रंग की आभा झलकाते हुए उसके केश . . . तन पर पड़ी हुई मामूली सी स्थानीय कारीगरों द्वारा बुनी गई एक साड़ी . . . ज्यों कोई विदेशी महिला अपना देश छोड़कर भारत में शांति की खोज में आ गई हो . . . ऐसा ही लगा उससे मिलकर मुझे।

कंधे पर लटकता हुआ एक साधारण सा झोला और योगिनी से भी अधिक वह एक सामाजिक कार्यकर्त्री ही लगी, जो शायद किसी मिशन की होगी और यहां की प्राकृतिक सुंदरता और सीधे- सरल निवासियों की जीवन शैली से मुग्ध होकर अपना जीवन बिताने का निश्चय कर चुकी होगी।

रोहतांग दर्रे से मनाली की तरफ चलने पर व्यास ऋषि के आश्रम से थोड़ा और आगे मढ़ी से जो रास्ता दाहिनी ओर गया है, उसी पर आगे जाकर बस्ती से अलग एकान्त में पर्वत के एक कोने से निकली हुई भूमि पर स्थानीय ढंग की बनी सामान्य सी झोपड़ी और स्लेट पत्थरों से ढांकी गई छत . . . कमरे में जीवन-यापन के अति आवश्यक सामानों को छोड़कर कोई चिन्ह ही नहीं, जिससे उसके व्यक्तित्व का पता लगाया जा सके।

पूज्यपाद गुरुदेव के जीवन की बिखरी हुई घटनाओं को एकत्र करने के संदर्भ में जब मैं यत्र-तत्र विचरण कर रहा था, तभी मेरी भेंट राजोला से हो गई। राजोला का पता मुझे भूमानंद जी ने व्यास ऋषि के आश्रम पर हुई भेंट में दिया था और बताया था कि यदि तुम राजोला से मिले तो उसके माध्यम से तुम्हें पूज्यपाद गुरुदेव के जीवन की अनेक ज्ञात-अज्ञात घटनाएं तो पता लगेंगी ही, साथ ही कुछ ऐसे तथ्य भी मिलेंगे जो तुम्हारे साधनात्मक ज्ञान के लिए भी अनूठे ही कहे जा सकते हैं।

सरलता से पता चल गया मुझे राजोला का, क्योंकि अपने व्यवहार और अनोखी जीवन - शैली के कारण वह उस क्षेत्र में विख्यात थी ही और सचमुच वहां के लोग उसे कोई विदेशी महिला ही मानते थे, उसके निडरता से, रूप से, एकान्त में

राजोला . . . एक जाना माना नाम, जो लोग परिचित रहे हैं साधना के जगत से . . . यात्रायें की हैं जिन्होंने छुपे हुए साधना स्थलों की . . . ढूंढना चाहा है साधना जगत के वे रहस्य और व्यक्तित्व, जो अज्ञात ही रहे . . . ऐसी ही एक विलक्षण योगिनी . . . राजोला।

जिसकी झोली स्वर्ण मुद्राओं से भरी रहती थी !

रहने की शैली से, उस क्षेत्र के लोगों के मन में भय और श्रद्धा की एक ऐसी मिली-जुली भावना थी कि वे सहज ही उसे अपने से श्रेष्ठ, अपने से ज्यादा दिव्य स्त्री समझ कर उसको दूर से ही प्रणाम करते थे . . . और बदले में राजोला भी क्या कुछ कम नहीं करती थी उनके लिए चाहे वह आए दिन बच्चों के बीच कपड़े बांटने की बात हो या वक्त जरूरत पर किसी को कुछ धन देने की, . . . कितने प्रकार की घटनाएं, कितने प्रकार की कथाएं और इन सब का मूल रहस्य अपरिचित ही रहा सबसे कि कहां से प्राप्त करती रही वह धन की निरंतर आपूर्ति . . .

शायद भूमानंद जी का नाम मैं न लेता तो वह मेरे सामने भी एक अनजान सी स्त्री बनी रहती, लेकिन भाई भूमानंद जी का नाम लेते ही उसके चेहरे की तो मुद्रा ही बदल गई और यह ज्ञात होने पर कि मैं **परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी** के जीवन के ज्ञात-अज्ञात तथ्यों की खोज कर रहा हूं . . . फिर तो वह अत्यन्त सहज हो गई मुझसे . . . पूज्य गुरुदेव की शिष्या, और पारद विज्ञान के क्षेत्र में उनके द्वारा विशिष्टतम ज्ञान प्राप्त सिद्ध साधिका . . . एक ही परिवार के तो दो सदस्य थे हम लोग, आत्मीयता फिर क्यों नहीं विकसित हो जाती . . . वास्तविक आयु तो पता नहीं लेकिन देखने में २५ से ३० वर्ष के मध्य लगती, अत्यन्त सामान्य होने पर भी सारे शरीर से दमकती ऐसी स्वर्णिम आभा जो विलक्षण योगिनी की ही पहचान थी और जिसके कारण सभी उसको विदेशी या अंग्रेज समझने की भूल कर बैठते थे . . . एक ही क्षण में ज्ञात हो गया मुझे **यह तो 'रससिद्ध योगिनी' है। पारद भक्षण का इतना स्पष्ट प्रभाव दिख रहा था उसके सारे शरीर पर,** सामान्य व्यक्ति के पास से इतनी मधुर गंध आ ही नहीं सकती . . . पद्मगंध को भी और अधिक मधुर करती हुई ऐसी दिव्य गंध जो वास्तव में देव गंध ही थी और राजोला भी क्या किसी देव कन्या से कम थी? अपने व्यवहार, सरलता और आत्मीयता में . . .

कितने संस्मरण, कितनी यादें . . . पूज्यपाद गुरुदेव के संग बिताए गए एक-एक क्षण की स्मृतियां और साधक जीवन में साधना के उतार-चढ़ाव के पल-पल की कथाएं, साधनात्मक जीवन की कठिनाइयां, उनका निवारण, ज्ञान के एक-एक पृष्ठ का अपने सामने उद्घाटित होना और सबसे बड़ी बात पूज्याद गुरुदेव सदृश्य व्यक्तित्व का स्नेह व वरद हस्त . . . यही सब तो मिल कर गठित होती है पूज्यपाद गुरुदेव की जीवन कथा, उनके शिष्यों ने जो जीवन जिया वह उनके गुरु की ही तो गाथा है **. . . कोई भूल हो गई थी मुझसे, राजोला की सुंदर शांत बड़ी-बड़ी दो आंखों में कुछ छिप भी तो नहीं सकता था** और पूज्य गुरुदेव के संग बीते हुए क्षणों में खोकर वह सहज ही भावुक ही नहीं भावविह्वल हो उठी। अंतरंग क्षणों की तरलता में हम दोनों ही स्तब्ध होकर मौन हो गए, पूज्यपाद गुरुदेव का स्मरण कर . . .

क्या होता है गुरु परिवार का अर्थ और क्या होती है गुरु भाई-बहनों के मध्य की आत्मीयता इसका पता तो मुझे राजोला के साथ ही चला। कब एक सप्ताह का प्रवास बढ़कर एक माह का हो गया, पता ही नहीं चला और एक माह भी कम ही लग रहे थे प्रकृति के उस अनुपम वातावरण के मध्य और राजोला के सहज व्यवहार के स्पर्श से।

चारों ओर घने देवदारु व चीड़ के वृक्ष और थोड़ी ही दूर पर गिरता भयानक आवाज के साथ साबू नाला। इन्हीं क्षेत्रों में साधना की थी राजोला ने पूज्यपाद गुरुदेव के साथ और प्राप्त किए थे पारद को स्वर्ण में बदलने के वे रहस्य जो इसी क्षेत्र में मिलने वाली जड़ी-बूटियों के प्रयोग से संभव हो पाते हैं, और यही रहस्य था राजोला के पास धन के स्रोत का, लोगों की मदद करने का और आवश्यकता अनुसार उनको मुंह-मांगा धन दे देने का। सचमुच उसकी झोली स्वर्ण की मुद्राओं से भरी रहती थी। **स्वर्ण . . . संसार की सबसे कीमती धातु, उसके लिए कंकड़ पत्थर से अधिक मूल्यवान नहीं थी . . .** कहां से पाती थी वह पारद, कहां से इस स्वर्ण को व्यय कर धन लाती थी, यह सब रहस्य और उसके व्यक्तिगत जीवन में झांक कर जानने का साहस नहीं कर पाया लेकिन स्वर्ण निर्माण प्रक्रिया का तो साक्षीभूत रहा ही मैं।

आज तक याद है मुझे उसके निवास स्थान के बाहर रात्रि का वह समय, जब उसने खुले मैदान के नीचे ही आग जला कर उस पर एक पात्र में पानी चढ़ा दिया पिहरनाग, ज्योतिप्रवाह, इन्द्र बहूटी आदि लगभग २५ जड़ी-बूटियों का यह मिश्रण जिन्हें वह पता नहीं कहां-कहां से चुनकर लायी थी और किन मंत्रों के साथ सम्पूर्ण रात्रि पकाती रही। एक शिला पर बैठ कर मैं उसकी प्रत्येक क्रिया को अचरज के साथ देखता रहा . . . एक योगिनी के रूप और

यह तो रस सिद्ध योगिनी है. . .

पूज्यपाद सद्गुरुदेव की एकनिष्ठ सेवा करके ही इसने प्राप्त किया पारद को स्वर्ण में बदलने का रहस्य. . .

जिससे उसकी झोली भरी रहती थी स्वर्ण मुद्राओं से।

सौन्दर्य को मैंने पहली बार ही अपने जीवन में देखा, साक्षात् शक्ति व सौन्दर्य का मिश्रण बन गई थी राजोला . . . स्पष्ट लग रहा था कि मंत्रों से भी ज्यादा वह अपने शरीर में संजोये हुए तप के प्रवाह को भी उड़ेलती जा रही है उन्हीं जड़ी-बूटियों में . . . औषधियां दिव्य थीं या नहीं, लेकिन उस खिली हुई चांदनी की दिव्यता में, राजोला की दिव्यता से सब कुछ पवित्र और स्निग्ध हो ही गया था . . . साक्षीभूत थी तो हिमालय की वे शुद्ध धवल चोटियां जो मस्तक उठाये हम लोगों को आश्चर्य से निहार रही थीं और फिर आया ब्रह्ममुहूर्त का वह क्षण जब उसने मेरे ही सामने गिलट के कुछ सिक्कों को बिछा कर उन पर वह घोल एक चम्मच नुमा पात्र से डालना प्रारम्भ किया . . . **आश्चर्य! घड़ी भर बीतते न बीतते वे गिलट के सिक्के खरे स्वर्ण में बदल चुके थे! शत प्रतिशत स्वर्ण! ज्यों पहले की काल में ढलती रही थी गिन्नियां . . .**

प्रातः की स्वर्णिम किरणों से भी ज्यादा स्वर्ण का ढेर लगा हुआ था मेरे सामने! सूर्य की किरणों से भी ज्यादा दमकता हुआ, मेरी मुट्ठी में बंद होने के लिए . . . तो यही रहस्य था उस अलौकिक योगिनी का, यही क्रिया जो ज्ञात थी उसे और सचमुच सामान्य व्यक्ति को ऐसी क्रियाओं को रहस्य ज्ञात ही कहां? कौन कह सकता है सामान्य सी दिखती जड़ी-बूटियों के भीतर वे खजाने छुपे हैं जो स्वर्ण जैसी दुर्लभ धातुओं का निर्माण भी कर सकती है। एक स्वर्ण का सिक्का मेरे पास आज भी स्मृति के रूप में सुरक्षित है उस विलक्षण योगिनी की याद दिलाता हुआ, उसके संग बीते दिनों की स्मृतियों को ताजा करता हुआ, और स्मरण दिलाता हुआ कि मैं एक अनोखी स्वर्ण निर्माण की क्रिया का प्रत्यक्षदर्शी रहा।

अब कहां है वह, किस स्थिति में है, मुझे ज्ञात न हो सका, फिर मैंने उस क्षेत्र की अनेक यात्राएं की, लेकिन उसके रहस्यमय व्यक्तित्व के समान ही पीछे रह गईं रहस्यमय कथाएं . . . कोई उसे देवी समझकर याद करने वाला, तो कोई अलौकिक शक्तियों से सम्पन्न मान कर भय करने वाला, वायु गमन प्रक्रिया में तो सिद्धहस्त थी ही वह, और शून्य साधना की अनोखी साधिका . . . क्या आश्चर्य जो उसके पीछे रह गई ऐसी कथाएं। कुछ भी हो आज भी उस क्षेत्र के निवासी उसे बेहद आत्मीयता से याद करते ही हैं और कुछ का मानना है कि वह नित्य रात्रि को किसी भी क्षण में उस क्षेत्र में आती ही है . . .

ऐसे दिव्य और अपनी साधना के साक्षीभूत रहे स्थान का मोह छूट भी कहां सकता है किसी भी साधक या साधिका से . . .

अहोभाव

हमारे पाठक प्रायः अपने पत्रों में पूज्यपाद गुरुदेव के प्रति अपनी मनोभावनाएं व्यक्त करने के क्रम में कोई लघु कविता या काव्यात्मक विवरण भेजते ही रहते हैं।

*उनकी इसी प्रतिभा को हमने एक दिशा देने का प्रयास किया है **"अहोभाव"** के माध्यम से क्योंकि यह शिष्य या पाठक का अहोभाव ही तो है. . .*

आपको पूज्यपाद गुरुदेव के प्रस्तुत चित्र के आधार पर अपनी भावनाएं काव्य की चार पंक्तियों में भेजनी है और पुरस्कार से भी अधिक आशीर्वाद स्वरूप में **प्रथम** आने पर **एस सीरीज** की छः पुस्तकों का सेट, **द्वितीय** स्तर पर तीन पुस्तकें अथवा **तृतीय** पुरस्कार के रूप में एक पुस्तक का पात्र भी बन जाता है। रचना मौलिक एवं अप्रकाशित तथा अप्रचारित होने का दायित्व आप को प्रविष्टि के साथ एक पन्ने पर घोषित करना होगा।

अपनी प्रविष्टि इस प्रकार प्रेषित करें --

सम्पर्क

अहोभाव (२१), गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४,फोन-०११-७१८२२४८

लक्ष्मी के विविध स्वरूप और प्रयोग

पूज्यपाद गुरुदेव ने जिस तथ्य पर बार-बार बल दिया है वह यही है कि जीवन में लक्ष्मी तत्व का समावेश उसके विविध स्वरूपों के साथ आवश्यक है। जिस तरह से यदि कोई व्यक्ति चाहे कि वह सोंठ की एक गांठ रखकर ही पूर्ण वैद्य बन जाएगा और कोई व्यक्ति समझे कि वह केवल धन प्राप्त करके पूर्ण वैभवशाली बन जाएगा, तो यह संभव नहीं है और इसका उदाहरण हम अपने जीवन के साथ-साथ आस पास के जीवन में भी नित्य देखते रहते हैं। कहीं धन नहीं है, तो कहीं धन होते हुए मुकदमों की भीड़ है, कहीं धन भी है, बाधा भी नहीं है, किंतु संतान का अभाव है, या कहीं संतानें तो ढेर सी हैं लेकिन उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए आकस्मिक धन की कोई व्यवस्था नहीं है। ऐसे ही तरह-तरह के उलझाव और अटकाव देखकर मन में भाव आता है कि कैसे जीवन को सभी प्रकार से सुखी और सम्पन्न बनाया जाए!

१. व्यापार लक्ष्मी (काम्य लक्ष्मी)

व्यापार का तात्पर्य केवल दुकान से ही नहीं होता। इस जगत में हम जिस भी माध्यम से धन प्राप्ति करें, वह एक व्यापार ही है। यदि हम नौकरी भी करते हैं, तब भी एक प्रकार से व्यापार ही करते हैं, क्योंकि हम अपनी सेवाएं अर्पित करके बदले में धन प्राप्ति करते हैं और जहां भी हमारी सेवा का उचित मूल्य मिले वहीं अपनी सेवा अर्पित करना चाहते हैं। अतः यह भ्रम है कि नौकरी पेशा वर्ग और दुकानदार वर्ग जीवन की दो अलग-अलग दशाएं होती हैं। हमारा व्यापार सुचारू रूप से चले, उस पर तांत्रिक प्रयोग न हों, किसी प्रतिद्वन्द्वी या शत्रु द्वारा व्यापार-बंध की घटिया हरकत न हो, ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए हमें जी-तोड़ परिश्रम न करना पड़े या हम जिस कार्य में पूंजी लगाएं वह व्यर्थ न चली जाए। **व्यापार तो सैकड़ों जोखिमों से भरा कार्य है और एक व्यापारी को चारों ओर एक साथ ध्यान देना पड़ता है।**

व्यापारी, वकील, डॉक्टर अथवा जैसा कि ऊपर कहा नौकरी पेशा वर्ग भी यदि जीवन में व्यापार लक्ष्मी को प्राप्त करने के लिए, अपने जीवन को सजाने संवारने के लिए आग्रहशील है प्रयासरत है, और यह समझता है कि जीवन की सभी स्थितियों का निपटारा बिना दैवी-बल के संभव नहीं, तो उसे हर हालत में **व्यापार लक्ष्मी प्रयोग** सम्पन्न करना ही चाहिए। यह सामान्य प्रयोग नहीं वरन् एक तांत्रोक्त प्रयोग है तथा इसके माध्यम से साधक को अपने जीवन में जहां एक ओर सकारात्मक रूप से अनुकूलता मिलती है वहीं दूसरी ओर व्यापार पर आ गई बाधाएं या प्रयोगों की स्थितियों का निराकरण भी होता है।

महालक्ष्मी के तांत्रोक्त स्वरूप **पद्मावती देवी** से सम्बंधित यह प्रयोग कितना तीक्ष्ण और **चमत्कारिक** है, इसको तो साधक प्रथम रात्रि में ही अनुभव कर सकता है साधक के लिए आवश्यक है कि वह **पांच हकीक पत्थर** और **पांच गोमती चक्र** लेकर उनके साथ ही साथ पद्मावती के प्रतीक रूप में **पद्मावती यंत्र** प्राप्त करे तथा एक **मूंगे की माला** भी उसके पास होनी आवश्यक है। किसी भी शुक्रवार की रात्रि में द्वितीय प्रहर में साधना में रत हों। वस्त्र का रंग लाल हो, दिशा दक्षिण हो, स्वच्छता आवश्यक है। साधक तेल का दीपक लगाए और लोहे को छोड़ किसी भी पात्र में **पद्मावती यंत्र** के चारों ओर क्रम से एक हकीक और एक

गोमती चक्र गोलाई में रख दे तथा मूंगे की माला से निम्न मंत्र का एक माला मंत्र जप करे। यह तीन दिनों का प्रयोग है।

मंत्र

ॐ नमो पद्मावती पद्मतनये लक्ष्मी दायिनी वांछा भूत-प्रेत विन्ध्यवासिनी सर्वशत्रु संहारिणी दुर्जन मोहिनी ऋद्धि सिद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा ॐ क्लीं श्रीं पद्मावत्यै नमः। ।

मंत्र जप के मध्य दीपक बुझे नहीं तथा आस- पास कोई पदचाप या डरावनी स्थिति अनुभव हो तो चिंता की कोई बात नहीं, यह तो संकेत है कि आप पर जो तंत्र प्रयोग अथवा बाधा प्रयोग है उसका निराकरण हो रहा है। प्रयोग के पूर्ण होने पर समस्त सामग्री को लाल वस्त्र में बांध कर घर से काफी दूर दक्षिण दिशा में फेंक दें और हाथों-हाथ इस दुर्लभ प्रयोग का प्रभाव अपने व्यापार में अनुभव कर लाभ उठाएं।

२. संतान लक्ष्मी (ज्येष्ठा लक्ष्मी) : शिशुओं से मुखरित हो आपका आंगन

एक ऐसा उपवन हो जिसमें स्वस्थ और सुंदर फूल खिलें लेकिन उन पर तितलियां मंडराती हुई न आएं तो फिर उन फूलों को न खिला रहना ही व्यर्थ लगने लगता है और सभी रूप रस गंध होते हुए भी वे ठिठक कर खड़े हो जाते हैं ठीक ऐसे ही **जिस परिवार में बच्चे न हों वह परिवार भी सूखा-सूखा और निर्जीव हो जाता है।** यही है संतान लक्ष्मी का अर्थ, केवल यही नहीं संतान लक्ष्मी तो अपने अंदर सुयोग्य शिशु, निरोग शिशु, स्वस्थ चित्त शिशु जैसी कई बातें समाहित किए है। संतान लक्ष्मी की साधना केवल उन्हीं परिवारों की साधना का विषय नहीं, जो निःसंतान हैं, जिनके परिवार में अबोध शिशु है, उन्हें भी यह साधना करनी एक प्रकार से आवश्यक हो जाती है जिससे कि भावी जीवन में उनका बच्चा प्रसन्न व स्वस्थ चित्त बना रहे और जब तक बालक अपने पांवों पर खड़ा होने योग्य नहीं हो जाता है, तब तक उसके प्रत्येक भौतिक हित के साथ-साथ उसके आध्यात्मिक हित का दायित्व भी उसके माता-पिता पर ही होता है।

यद्यपि मूल रूप से तो यह प्रयोग निःसंतान दम्पतियों को ध्यान में रख कर ही रचा गया है लेकिन कोई भी प्रयोग अपने स्वरूप में एकांगी नहीं होता। इस प्रयोग का गूढ़ रहस्य है यह कि यह वस्तुतः **लक्ष्मी नारायण प्रयोग** है तथा इस प्रयोग की पूर्णता से जहां एक ओर व्यक्ति के जीवन में पुत्र-सुख अथवा संतान- सुख सम्भव होता है वहीं घर के धन-धान्य में भी वृद्धि हो जाती है।

भगवान लक्ष्मी- नारायण का प्रकट स्वरूप होते हैं पूज्य गुरुदेव एवं गुरु माता। किसी भी सोमवार की प्रातः पांच बजे तक स्नान आदि कर शुद्ध स्वच्छ सफेद वस्त्र धारण कर पति-पत्नी दोनों पूर्वाभिमुख होकर एक साथ साधना में प्रवृत्त हों, पत्नी को अपनी दाहिनी ओर स्थान दें, सामने श्रेष्ठ लकड़ी की बनी चौकी पर पीला रेशमी वस्त्र बिछा कर जो भी आपके गुरु हों उनका व गुरु माता का चित्र संयुक्त रूप से प्राप्त कर गुरु माता को पूर्ण रूप से भगवती लक्ष्मी मानते हुए एवं अपने गुरुदेव में भगवान श्री नारायण की धारणा रखते हुए दोनों का संयुक्त एवं विधिवत् पूजन करें, उनके श्री चरणों में केसर, सुगन्ध, गुलाल, कुंकुम, अक्षत, चंदन, श्रेष्ठ सुगन्धित पुष्प, घी का दीप, धूप एवं दूध का बना प्रसाद अर्पित करने के उपरान्त भावनापूर्वक प्रणाम करें तथा अपने जीवन में संतान-सुख के लाभ की कामना व्यक्त करें। चित्र के सामने ही चावलों की ढेरी बना कर उस पर दो **लघु नारियल** स्थापित करें तथा निम्न मंत्र का जप **स्फटिक माला** से करें। पति और पत्नी एक ही माला का प्रयोग बारी-बारी से कर सकते हैं लेकिन माला किसी साधना में प्रयुक्त न हुई हो। इस मंत्र की केवल पांच-पांच माला मंत्र जप पति व पत्नी द्वारा करनी है।

मंत्र

ॐ ऐं ह्रौं पुत्र लक्ष्म्यै नमः

मंत्र जप के उपरान्त माला व सम्पूर्ण पूजन सामग्री शुद्ध पीले वस्त्र से ढांक दें और घी का दीपक अखण्ड रूप से जलते रहने दें। यह पांच दिनों की साधना है। मंत्र जप के उपरान्त पूर्ण विधि विधान से अपने गुरु व गुरु माता का पूजन एवं आरती करें तथा साष्टांग प्रणाम कर स्थान छोड़ें। इन पांच दिनों में पूर्ण सात्विक और ब्रह्मचर्य पूर्वक जीवन व्यतीत करना है। भूमि शयन करें, यथासंभव कम से कम अन्न ग्रहण करें, अत्यधिक आवश्यक होने पर वार्तालाप करें। पांच दिन की साधना के उपरान्त पत्नी उस माला को अपने गले में धारण कर ले तथा रात्रि में सोने से पहले उतार दे, दोनों लघु नारियलों को पीले वस्त्र में बांधकर अपने शयन कक्ष के किसी स्वच्छ कोने में स्थापित कर दें। पत्नी यदि चाहे तो आगे भी उपरोक्त मंत्र का जप करती रह सकती है। यह एक अनुभूत प्रयोग है और अल्प समय में ही मनोवांछित परिणाम के संकेत मिलने लग जाते हैं। यह प्रयोग सात बजे के पहले ही पहले पूर्ण कर लें।

३. रोगरहित काया, तनाव रहित मन पाइयेः स्वास्थ्य लक्ष्मी (आनन्दा लक्ष्मी)

रोग रहित शरीर स्वयं में प्रशंसा, उमंग और खुशियों का भण्डार होता है। स्वस्थ और निरोगी काया से ही मस्ती का संगीत फूटता रहता है जो आस - पास हंसी की खिलखिलाहट बन कर बिखरता रहता है और अठखेलियां बनकर नर्तन करता रहता

है। रोग रहित शरीर ईश्वर द्वारा दिया गया सबसे बड़ा वरदान है। स्वास्थ्य भी एक प्रकार से लक्ष्मी ही है क्योंकि क्या इस जमा- पूंजी से भी अधिक कोई जमा- पूंजी अथवा इस खजाने से भी बड़ा कोई खजाना हो सकता है? शायद नहीं! **केवल स्वस्थ व्यक्ति ही इस संसार में समस्त भोग-विलास, खान-पान और सैर-सपाटा करके जीवन के प्रत्येक पल को पूरी मस्ती से जी सकता है** व्यक्ति के जीवन में सदैव ही ऐसा स्वास्थ्य बना रहे और उसे कभी किसी गम्भीर रोग तो दूर सामान्य बीमारियों में भी न उलझना पड़े, इसके लिए एक छोटी सी साधना है अथवा जिसे एक छोटा सा प्रयोग कहना ज्यादा उचित होगा। इसका उल्लेख मुझे पिछले दिनों कहीं से मिला, साधना जगत में इसे **हिरण्य गर्भ प्रयोग** या स्वास्थ्य लक्ष्मी प्रयोग के नाम से जाना जाता है।

इसके लिए आवश्यक है कि साधक कहीं से भी सर्वप्रथम **हिरण्य गर्भ** प्राप्त कर ले और किसी भी बुधवार की प्रातः आठ बजे से पहले उसे शुद्ध जल से धो कर पौंछे तथा कुंकुम का तिलक कर अक्षत चढ़ाए व किसी श्रेष्ठ पात्र में रख कर **मूंगे की माला** से निम्न मंत्र का पांच अथवा सात माला मंत्र जप कर उसे अपने गले में धारण कर ले।

मंत्र

ॐ श्रीं ऐं ॐ

यह एक दिवसीय प्रयोग अचूक ढंग से रोग निवारण की पूर्व साधना है। जिसको सम्पन्न करने के बाद व्यक्ति अपने भावी जीवन में समस्त विपदाओं और व्याधियों से मुक्ति पा लेता है।

यह प्रयोग ऐसे व्यक्तियों कि लिए भी पूर्ण लाभदायक है जो किसी बीमारी से लम्बे समय से पीड़ित हों, सामान्य चिकित्सा पद्धतियों से उन्हें लाभ न पहुंच रहा हो, उनके लिए आवश्यक है कि वे इस प्रयोग को थोड़े से परिवर्तन के साथ करें। वे रविवार की रात्रि में काले तिल की ढेरी बना कर उस पर हिरण्यगर्भ स्थापित कर मूंगे की माला से उपरोक्त मंत्र का जप निरंतर करते रहें जब तक की पूर्ण लाभ न हो जाए।

४. आकस्मिक धन प्राप्ति प्रयोग (सुकेशी लक्ष्मी)

स्वप्न में किसी लाटरी का नम्बर पता लग जाना, घुड़दौड़ में सही स्थिति का पूर्वाभास हो जाना, धन प्राप्ति के लिए किसी भी व्यक्ति से कोई सूत्र मिल जाना, कहीं से पैतृक सम्पदा के रूप में कोई धनराशि मिल जाना, आसानी से कर्ज मिल जाना, गड़ा धन प्राप्त हो जाना, जैसी अनेक स्थितियां होती हैं और वही आकस्मिक धन प्राप्ति की दशायें कही जाती हैं व्यापार में अचानक बड़ा आर्डर मिल जाना, जहां से कोई धन पाने की आशा न हो वहां से धन प्राप्त हो जाना, अपनी नियमित आय के अतिरिक्त कई एक आय के नए स्रोत मिल जाना इत्यादि आकस्मिक धन प्राप्ति के इस जीवन में सैकड़ों तरीके हैं और इनमें कोई दोष और अनैतिकता नहीं है। जिस किसी को आकस्मिक धन प्राप्ति की पूर्ण सिद्धि मिल जाती है उसे फिर किसी के सामने हाथ फैलाने की विवशता नहीं रह जाती और सही अर्थों लक्ष्मी चेरी उसी की बनती है जिसके पास आकस्मिक धन प्राप्ति की सिद्धि हो। जीवन में यह दशा रातों-रात या एकाएक नहीं आ सकती है इसके लिए तो साधना का पर्याप्त बल होना आवश्यक है और हमने पत्रिका के पिछले अंक में वैचाक्षी साधना के नाम से आकस्मिक धन प्राप्ति की एक विस्तृत विधि प्रकाशित की थी, जिससे व्यक्ति को आकस्मिक धन प्राप्ति की पूर्ण सिद्धि मिल जाती है। **लेकिन जहां समय का अभाव हो धन की तुरंत आवश्यकता हो वहां तो और भी छोटा उपाय प्रयोग में लाना पड़ता है,** तब लघु प्रयोग ही व्यवहारिक और फलदायी होते हैं। संकट कालीन दशा में ऐसा ही लघु प्रयोग करना बुद्धिमत्ता पूर्ण होता है।

रविवार की रात्रि में लाल वस्त्र धारण कर लाल रंग के ऊनी आसन पर दक्षिण मुख होकर बैठें, सामने लाल वस्त्र पर तांबे के पात्र में तांत्रोक्त ढंग से चैतन्य की गई **बिल्ली की नाल** को पूरी तरह से तेल मिश्रित सिंदूर में रंग दें तथा **मूंगे की माला** से निम्न मंत्र का ११ माला मंत्र जप करें --

मंत्र

।। ॐ ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं नानोपलक्ष्मी श्रीं पद्मावती आगच्छ आगच्छ नमः।।

उपरोक्त मंत्र अत्यन्त तीव्र एक पूर्णतः तांत्रोक्त मंत्र है और इतना अधिक तीव्र है कि प्रायः साधक को सुबह होते-होते अपनी समस्या का हल मिल जाता है। साधक इस साधना में दृढ़ता पूर्वक और बिना किसी भय के साधना रत हो। मंत्र जप के उपरान्त रात्रि-शयन उसी स्थान पर करे और स्वप्न में अपने आकस्मिक संकट का कोई न कोई उपाय प्राप्त होता ही है। सम्पूर्ण पूजन काल में तेल का दीपक जलता रहे और वह सुबह तक प्रज्वलित रहे, इस बात का ध्यान रखें बिल्ली की नाल को किसी पात्र में बंद कर रखना है। भविष्य में जब-जब आकस्मिक धन की तीव्र आवश्यकता आ पड़े तब - तब उपरोक्त प्रयोग को दोहरायें।

५. राज्यलक्ष्मी (महायोग लक्ष्मी)

यह प्रयोग विशेष रूप से व्यापारी वर्ग के लिए रचा गया है क्योंकि एक व्यापारी को ही अपने जीवन में सबसे अधिक राज्य पक्ष से व्यवहार करना पड़ता है, चाहे आय कर का मामला हो अथवा कोई परमिट की बात या फिर आपसी झगड़ों में आए दिन लगने वाले कोर्ट कचहरी के चक्कर, व्यापारी के अपने दैनिक जीवन का एक निशचित समय विभिन्न कार्यालयों के चक्कर लगाने में निकल जाता है और निश्चित रूप से यदि उसके बहुमूल्य समय में से इस

(शेष पृष्ठ ७७ पर)

अचूक फलप्रद सिद्धि गुटिका

मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा- युक्त

विश्वासपूर्वक उपयोग करने से इससे अचूक फल प्राप्ति होता ही है।

लघु प्रयोगों और सिद्ध-सफल उपायों की ही कड़ी में अचूक सिद्धि गुटिका जिसका प्रयोग गलत सिद्ध हो ही नहीं सकता। ***नव-वर्ष के अवसर पर पाठकों को उपहार!***

जिसकी स्थापना मात्र से साधनाओं में सफलता मिलने की क्रिया प्रारम्भ हो जाती है। दिन-प्रति के कार्यों और आवश्यकताओं की पूर्ति यही गुटिका सफलता पूर्वक करती है इस प्रकार. . .

❖ किसी भी गुरुवार को पूर्ण विधान से गुरु पूजन, कर सिद्धि गुटिका चढ़ाने से घर में सुख - सौभाग्य शांति का आगमन होने लगता है।

❖ जगदम्बा साधना अथवा किसी भी शक्ति साधना में इस गुटिका को धारण करके मंत्रजप करना एक प्रकार से अनिवार्य ही है।

❖ ऋण बाधा बहुत बढ़ गयी हो और किसी भी प्रकार से कोई मार्ग न सूझ रहा हो तो एक सिद्धि गुटिका पर भैरव पूजन करें और किसी पवित्र स्थान पर डाल आएं।

❖ धन प्राप्ति का कोई जरिया नहीं बनता दिखता हो तो एक सिद्धि गुटिका किसी भी बुधवार की प्रातः चावलों की ढेरी पर स्थापित कर ग्यारह दिनों तक **"श्रीं"** मंत्र का १०८ बार उच्चारण करना धनदायक सिद्ध होता है।

❖ शत्रु अनायास कष्ट दे रहा हो या मुकदमे बाजी में फंस गये हों तो किसी भी अमावस्या की रात्रि में उसी गुटिका पर अपने प्रमुख विरोधी का नाम कागज पर लिख, काले धागे से बांध श्मशान, सुनसान जंगल में डाल आएं अन्यथा शिव मंदिर में चढ़ा दें।

❖ रोग, दवाओं के काबू में न आ रहा हो और शरीर दिन-ब-दिन सूखता जा रहा हो तो रोगी के सिर पर से यही गुटिका घुमा कर चावल के कुछ दानों के साथ वहां डाल दें, जहां पक्षी दाना चुगने आते हों, इसे शुक्रवार या रविवार को ही करें।

❖ सिद्धि गुटिका के समक्ष जिस देवी या देवता का सवा लाख मंत्र जप सम्पन्न कर लिया जाए तो उस साधना में पूर्ण सिद्धि मिलती ही है।

❖ वायुगमन साधना, शून्य साधना, छाया साधना, काल साधना एवं परकाया प्रवेश जैसी परालौकिक विद्याएं सिद्ध करते समय इस गुटिका को कण्ठ में धारण करना ही सिद्धि का उपाय है।

❖ कैसी भी राज्य बाधा हो, प्रमोशन या ट्रांसफर की समस्या न सुलझ रही हो तो किसी भी सोमवार को श्वेत पुष्पों एवं उचित दक्षिणा के साथ इसे किसी सद्विप्र या पुरोहित को सम्मानपूर्वक भेंट में देकर अपनी समस्या बोल दें।

❖ सिद्धि गुटिका का घर में स्थापन यों भी सौभाग्यदायक और दिव्यता देने वाला माना गया है।

क्योंकि यह सामान्य गुटिका नहीं वरन विशेष मंत्र पूरित गुटिका है, आवश्यकता है तो केवल श्रद्धा और विश्वास की।

हनुमान साधना

श्री हनुमान प्रतीक हैं- **ब्रह्मचर्य, बल, पराक्रम, वीरता, भक्ति, निडरता, सरलता** और **विश्वास** के, इनके एक-एक गुण के संबंध में हजारों अध्याय लिखे जा सकते हैं। निर्बल होकर, आधीन होकर जीना भी कोई जीना है क्या? शत्रु अथवा बाधा बड़ा अथवा छोटा नहीं होता, वह तो केवल व्यक्ति अथवा घटना ही तो है, और उस पर आत्मविश्वास द्वारा विजय प्राप्त की जा सकती है, और जो श्री हनुमान का साधक है, उसके भीतर तो आत्म विश्वास की आत्म शक्ति छलकती रहती है, उसे ज्ञान है कि मेरे पीठ के पीछे प्रबल पराक्रमी देव श्री हनुमान बजरंग बली खड़े हैं, फिर मुझे काहे की चिन्ता!

यह सिद्ध वात है कि अर्द्धरात्रि के पश्चात् शहर या घने जंगल अथवा श्मशान में भी हनुमान मंत्र, हनुमान चालीसा इत्यादि का पाठ करते हुए निकल जाएं तो सर्प, बिच्छू, जंगली जानवर तो क्या भूत-प्रेत, पिशाच भी आपके पास नहीं फटक सकते।

पीड़ा निवारण देव -

मैंने मर्मान्तिक पीड़ा से व्याप्त कष्ट भोगते हुए रोगियों को हनुमान साधना से अभिमंत्रित कर जल पिलाया है, और हनुमान जी की कृपा से वे पूर्ण स्वस्थ हुए हैं, क्योंकि ऐसा चमत्कार केवल हनुमान ही कर सकते हैं। वे अपने भक्त को कष्ट में नहीं देख सकते और उनके लिए, अपने भक्त के हितार्थ कुछ भी करना सहज संभव है। जो एक संजीवनी बूटी के लिए पूरा पहाड़ उठा कर ले जा सकते हैं, जो रावण जैसे महाप्रतापी का अहंकार चूर-चूर कर सकते हैं, ऐसे ग्यारहवें रुद्र की महिमा, उनकी भक्ति करके ही जानी जा सकती है।

जन-जन में श्री हनुमान जी के प्रति एक वीरता, गौरव का भाव भरा हुआ है, और इनका स्थान-स्थान पर मंदिर वने हुए हैं, आप कभी श्री हनुमान जी की मूर्ति के सामने जा कर खड़े होकर और उनके नेत्रों की ओर देखें तो सीधा आपके मन में बल, पराक्रम का श्रेष्ठभाव ही आएगा, निर्वलता हवा में विलीन हो जाएगी।

हनुमान चरित्र साधना-महाग्रंथ -

हनुमान साधना के संबंध में प्रमुख ग्रंथ हैं - हनुमदूपासना, पैशाचभास्यमस्तोत्र कुसुमांजली, श्रीमद्रामपवनात्मच, चतुर्थदश रहस्यम्, श्री हनुमान बाहुक, हनुमत शतक, मारुति स्तोत्रम्, ये तो हिन्दी और संस्कृत में प्रमुख ग्रंथ हैं, इसके अलावा मराठी, गुजराती, बंगला, उड़िया, तेलगू, कन्नड़, मलयालम तथा अंग्रेजी में भी विशेष ग्रंथ उपलब्ध हैं ही।

सावधानियां -

सरल, कृपालु, सिद्ध देव श्री हनुमान की साधना के कुछ विशेष नियम हैं, जिनकी परिपालना अत्यन्त आवश्यक है, अन्यथा रुष्ट हनुमान सर्वनाश ही कर देते हैं, साधक गण इन सब बातों की ओर विशेष ध्यान दें।

१. हनुमान साधना के दिन प्रत्येक पूजन कार्य में शुद्धता होनी आवश्यक है। जो भी प्रसाद, नैवेद्य अर्पित करें वह शुद्ध घी का बना होना चाहिए।
२. कुंए के जल से स्नान कर पूजा करना श्रेष्ठ माना गया है।
३. हनुमान मूर्ति को तिल के तेल में मिले हुए सिंदूर का लेपन करना चाहिए।
४. हनुमान मूर्ति को केवल केसर के साथ घिसा हुआ लाल चंदन लगाना चाहिए।
५. पुष्पों में केवल लाल - पीले और बड़े फूल अर्थात्, कमल, गेंदा, सूर्यमुखी के फूलों को ही अर्पित करना चाहिए।
६. नैवेद्य में प्रातः पूजन में गुड़, नारियल का गोला और लड्डू, मध्याह्न में गुड़, घी और गेहूं की रोटी का चूरमा अथवा मोटा रोट तथा रात्रि में आम, अमरूद अथवा केले का नैवेद्य अर्पित करना चाहिए।
७. हनुमान साधना में घी में भीगी हुई एक अथवा पांच बत्तियों का ही दीपक जलाना चाहिए, यह बात महत्वपूर्ण है।
८. हनुमान साधना के दिवस, साधक ब्रह्मचर्य व्रत का पूर्ण रूप से अवश्य पालन करें, और जो नैवेद्य श्री हनुमान को अर्पित हो, उसी को ग्रहण करना चाहिए।
९. हनुमान साधना में मंत्र जप बोल कर अर्थात् आवाज के साथ किया जाता है और श्री हनुमान की मूर्ति के समक्ष नेत्रों की ओर देखते हुए मंत्र जप सम्पन्न करें।
१०. अनिष्ट की इच्छा से श्री हनुमान देव का अनुष्ठान करना गलत है, स्वकल्याण, स्वशक्ति की भावना से ही कार्य करना चाहिए।
११. हनुमान साधना में दो प्रकार की मालाओं का प्रयोग किया जाता है, सात्विक कार्यों हेतु **रुद्राक्ष माला** तथा पराक्रमी कार्यों हेतु **मूंगा माला** का प्रयोग करें।
१२. श्री हनुमान, सेवा - पूजा के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं, अतः साधक द्वारा सेवा करके फल प्रप्ति की इच्छा रखनी चाहिए, पूजा में पूर्ण श्रद्धा और सेवा - भाव होना चाहिए।

कब करें हनुमान साधना -

जिस प्रकार आप नित्य प्रति अपना नित्य का जीवन जीते हैं, उसी प्रकार हनुमान जी की साधना तो प्रत्येक साधक को नित्य ही करनी चाहिए, संकट के समय तो हर कोई देवता को याद करता है, लेकिन वास्तविक भक्ति तो अच्छे और बुरे दोनों समय में पूर्ण श्रद्धा से की गई साधना से ही मिलती है।

मंगलवार पवन पुत्र श्री हनुमान का दिन है, इस दिन साधक साधना के ऊपर दिए गए सभी नियमों का पालन करते हुए विशेष अनुष्ठान अवश्य सम्पन्न करें, इसके अतिरिक्त शनिवार को भी हनुमान पूजा का विधान है।

श्री हनुमान साधना में जो ध्यान किया जाता है, उसका विशेष महत्व है। जैसा ध्यान करें वैसी ही मूर्ति अपने मानस में स्थिर करें और ऐसा अभ्यास करें कि नेत्र बंद कर लेने पर वही स्वरूप दिखाई पड़े।

साधना में आवश्यक -

श्री हनुमान साधना में षोडशोपचार पूजा का ही उल्लेख आया है। इस पूजा में शुद्ध कुंए का जल, दूध, दही, घी, मधु और चीनी का पंचामृत, तिल के तेल में मिला सिंदूर, रक्त चंदन, लाल पुष्प, जनेऊ, सुपारी, नैवेद्य में गुड़, नारियल का गोला, पांच वत्ती का दीपक, अष्टगंध आवश्यक है।

हनुमान साधना में अपने पूजा स्थान में एक आला (ताक) निश्चित कर दें, उस स्थान पर हनुमान चित्र, सामग्री के अतिरिक्त केवल राम - सीता का चित्र अथवा मूर्ति रख सकते हैं, अन्य कोई चित्र या मूर्ति रखना वर्जित है।

हनुमान साधना में साधक को सिद्धि हेतु सिद्ध **"वीर विक्रम हनुमंत यंत्र"** जो कि ताम्र पत्र पर अंकित होता है, उसे अवश्य ही स्थापित करना चाहिए। यंत्र निर्माण की एक विशेष प्रक्रिया होती है, और उस प्रक्रिया के अंतर्गत उस यंत्र को संबंधित देव के मंत्रों से प्राण प्रतिष्ठित किया जाता है। इसके अलावा **"हनुमान मुद्रिका"** भी साधक अपने सामने रखकर पूजन कार्य प्रारम्भ करें। **हनुमान मुद्रिका** धारण करने से साधक को अपने जीवन में निरन्तर रक्षा बल प्राप्त होता है।

साधना प्रक्रिया -

साधना के दिन साधक स्नान कर शुद्ध लाल वस्त्र धारण कर स्वयं उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठे, तथा अपने सामने हनुमान जी की मूर्ति तथा चित्र स्थापित करें, दक्षिणाभिमुख हनुमान साधना का ही विधान फलदायक है, सामने पूजा स्थान में गोवर तथा मिट्टी मिलाकर उसे लीप दें, तथा चौकी बनाकर पूरी चौकी पर सिंदूर छिड़क दें, और उस पर अपने सामने **हनुमान यंत्र** एवं **हनुमंत मुद्रिका** तिल की ढेरी पर स्थापित करें, तत्पश्चात् पूजन कार्य प्रारम्भ करें, सबसे पहले हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं अमुक (अपना नाम), अमुक पुत्र (पिता का नाम), अमुक कार्य हेतु यह अनुष्ठान संपन्न कर रहा हूं, श्री हनुमान मुझ पर पूर्ण कृपा करें।

अब साधक गुरु ध्यान कर वीर मुद्रा में बैठकर घी का दीपक जलाए और फिर हनुमान यंत्र एवं मुद्रिका को पंचामृत तथा शुद्ध जल से स्नान कराकर तेल मिले सिंदूर का लेपन करे, स्वयं को भी सिंदूर का तिलक करें, चित्र इत्यादि पर लाल पुष्प चढ़ाएं, और सामने जनेऊ, सुपारी, नैवेद्य अर्पित करें एवं हनुमान आह्वान मंत्र का जप करें।

आह्वान मंत्र -

ॐ नमो हनुमन्ताय आवेशय आवेशय स्वाहा। ।

साधकों को मुख्य हनुमान मंत्र का नियमित जप अवश्य ही करना चाहिए और विशिष्ट प्रयोग के लिए तो सर्वप्रथम एक माला हनुमान बीज मंत्र का जप अवश्य करें।

हनुमान बीज मंत्र -

ॐ हुं हुं ह्सौं ह्स्फ्रौं हुं हुं हनुमते नमः। ।

इस बीज मंत्र का जप तो साधक को नित्य करना ही है, इसके अलावा साधक अपने कार्य विशेष के अनुसार साधना के निम्नलिखित मंत्रों में से चयन कर उपरोक्त बीज मंत्र के पश्चात् मंत्र जप करें-

प्रामाणिक दुर्लभ मंत्र - विभिन्न कार्यों एवं शांति हेतु

१. कार्य सिद्धि हेतु-

ॐ नमो हनुमते सर्वग्रहान् भूतविघ्नवर्तमानम् दूरस्थसमीपस्थान् छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वकाल दुष्टबुद्धीन्च्चाटयोच्चाटय परबलान् क्षोभय क्षोभय मम सर्वकार्याणि साधय साधय, ॐ नमो हनुमते ॐ हां हीं हुं फट् देहि ॐ शिव सिद्धिं ॐ हां ॐ हीं ॐ हूं ॐ हैं ॐ हौं ॐ हः स्वाहा ।

२. सर्व विघ्न निवारण हेतु -

ॐ नमो हनुमते परकृतयंत्रमंत्र पराहंकारभूतप्रेत पिशाच परदृष्टि सर्वविघ्नमार्जनहेतु विद्यासर्पोग्रभयान् निवारय निवारय वध-वध लुण्ठ लुण्ठ पच पच विलुंच विलुंच किली किली सर्व कुयंत्राणि दुष्टवाचं ॐ हीं हीं हुं फट् स्वाहा। ।

३. शत्रु संकट निवारण हेतु -

ॐ पूर्व कपिमुखाय पंचमुख हनुमते टं टं टं टं टं सकल शत्रु संहारणाय स्वाहा । ।

४. प्रेत बाधा निवारण के लिए -

ॐ दक्षिण मुखाय पंचमुख हनुमते करालवदनाय नरसिंहाय ॐ हां हीं हूं हौं हः सकल भूत प्रेत दमनाय स्वाहा । ।

इन मंत्रों में जो शक्ति है, वह तो साधक श्री हनुमान अनुष्ठान संपन्न कर प्रत्यक्ष रूप से अनुभव कर ही सकता है। पूर्णाहुति विधान यह है कि जितनी संख्या में मंत्र जप करें, उसके दसवें हिस्से मंत्र का हवन अवश्य करें।

अनुष्ठान पूर्ण होने पर साधक यंत्र को अपने पूजा स्थान में रखे और मुद्रिका धारण कर लें।

५. शनि की पनौती -

श्री शनि जो कि सबसे प्रबल ग्रह माने गए हैं, और यदि किसी को शनि पनौती हो या शनि बाधा हो तो वह साधक शनिवार के दिन श्री हनुमान मूर्ति पर तेल चढ़ाए और हनुमान मंत्र अनुष्ठान करे तो यह बाधा भी पूर्ण रूप से दूर हो जाती है।

निश्चय ही ये सभी मंत्र स्वतः अनुभव सिद्ध मंत्र हैं, आशा है साधकगण इससे अवश्य लाभ प्राप्त कर जीवन में नया अध्याय प्रारम्भ करेंगे।

मेष - पिछला वर्ष खींचतान में व्यतीत होने के बाद इस माह से जीवन नया मोड़ लेगा, जिन विषयों पर आप निर्णय - अनिर्णय की स्थिति में चल रहे हैं, उनका सीधा - साधा और स्पष्ट हल प्राप्त कर सफलता प्राप्त कर लेंगे। इस अनुकूल समय का उपयोग कर, इस वर्ष की योजनाओं को अभी से निर्धारित कर लीजिए , क्योंकि यह वर्ष आपके लिए महत्वपूर्ण होने जा रहा है। कार्यालय में स्थितियां आपके अनुकूल होंगी तथा व्यापारी वर्ग के लिए व्यापार में अनुकूलता आएगी। व्यापारी वर्ग खरीद बिक्री को अगले वर्ष के लिए स्थगित कर दें, १३ तारीख के उपरान्त स्थितियां तीव्रता से आपके पक्ष में निर्मित होंगी। २८ तारीख आपके लिए अनुकूल नहीं है, अतः इस दिन प्रत्येक ढंग से सावधानी रखें।

अनुकूल तिथियां — ६, २६ , २७, ३१।

वृषभ - कार्यों को करने की क्षमता रखते हुए भी उसको व्यस्थित रूप नहीं दे पाएंगे। इस माह इसी न्यूनता का विपरीत परिणाम देखना पड़ सकता है। जीवन चर्या में हड़बड़ी और कभी - कभी हल्का मानसिक तनाव भी व्याप्त रहेगा। धन का लेन - देन अहितकर होगा। वाहन प्रयोग में सावधानी अपेक्षित है। जोखिम के कार्यों से भी प्रयास पूर्वक बचें। परिवार में मेल - मिलाप रहेगा। अधिकांश समय परिवार के संग व्यतीत होने के अवसर उपलब्ध होंगे। यात्राएं इस माह नहीं करना ही श्रेयस्कर रहेगा। ७ तारीख आपके लिए भाग्योदकारी सिद्ध होगी।

अनुकूल तिथियां — ५, ७, १३, २१, २४।

मिथुन - पारिवारिक दायित्वों के निर्वाह में पूरे माह उलझे रहेंगे। पारिवारिक असहयोग के साथ - साथ बाह्य रूप से भी सहयोग नहीं मिलेगा। आय की स्थिति सामान्य रहेगी, जमा - पूंजी सुरक्षित रहेगी। कहीं से मासान्त में आकस्मिक धन प्राप्ति का योग भी संभावित है। मध्य माह के आस - पास विवशता पूर्वक यात्राएं करने की स्थिति आ सकती है। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। विवाह संबंधी वार्तालाप में शिथिलता आएगी। प्रेम - प्रसंगों में दूसरे पक्ष की ओर से उपेक्षा प्राप्त होगी। आन्तरिक रूप से तीसरे सप्ताह में निर्बलता का अनुभव कर सकते हैं। व्यापारी वर्ग के लिए बुध की गोचर में स्थिति के कारण उन्हें क्रय - विक्रय दोनों में लाभ मिलने के आसार हैं।

अनुकूल तिथियां — ४, १४, २८, ३०।

कर्क - व्यापार के प्रति अत्यन्त सजग रहें। यद्यपि बाह्य रूप से घाटे की सम्भावना तो नहीं है, किन्तु आन्तरिक रूप से कोई विश्वासघात या हानि पहुंचा सकता है। मित्र सहयोगी रहेंगे, लेकिन एक या दो से अधिक किसी को विश्वासपात्र न बनाएं। पत्नी के स्वभाव में आया परिवर्तन मन में क्षोभ उत्पन्न करेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में कमी आएगी। आय के स्रोत पर नियंत्रण रखना आवश्यक है अन्यथा आगामी दो - तीन माह के भीतर स्थिति शोचनीय हो जानी संभावित है। इस माह की दिनांक ८ एवं ६ का विशेष उपयोग करें, १७ तारीख को विशेष सावधानी रखें।

अनुकूल तिथियां — ६ , २२, २८, ३०।

सिंह - व्यस्तता में वृद्धि होगी। उद्यम में सघनता आएगी। नये - नये विचार उत्पन्न होंगे तथा मन में प्रबल उत्साह रहेगा। किसी महत्वपूर्ण समझौते से लाभ मिलेगा। भारी ऋण उपलब्ध होगा। अपनी इच्छानुसार पार्टनर मिलने से व्यापार में अनुकूलता आएगी। निर्माण व्यवसाय में लगे उद्यमियों को आशातीत लाभ होगा। सामाजिक जीवन में श्रेष्ठता आएगी और एक प्रकार से यह माह सामाजिक रूप से सक्रियता का है, चाहे आप किसी वर्ग के क्यों न हों। दाम्पत्य जीवन मधुर रहेगा। स्त्री वर्ग को स्वास्थ्य की दृष्टि से अनुकूलता रहेगी। अभी शेयर मार्केट व सट्टे आदि में धन लगाने से बचें। प्रेम - प्रसंगों में सामाजिक निन्दा का भय।

अनुकूल तिथियां — ४, ७, ११, २३, २५।

कन्या - खर्चों की अधिकता व घरेलू व्यस्तताओं का माह रहेगा। दूरस्थ प्रियजन से भेंट होना संभावित। कोई मनोकामना पूर्ण होगी, जिससे मन में उल्लास व्याप्त होगा। कोई अनावश्यक वाद- विवाद मन में क्लेश उत्पन्न कर सकता है। पड़ोसियों से सम्बन्ध मधुर होंगे। व्यापारी वर्ग के लिए सामान्य माह। नौकर - पेशा वर्ग अनुकूलता प्राप्त करेगा। धार्मिक प्रवृत्तियों में रुचि बढ़ेगी। दाम्पत्य जीवन उल्लास पूर्ण रहेगा। कोई विशेष वस्तु खरीदी जा सकती है। इस माह की ११ तारीख आपके लिए प्रत्येक दृष्टि से अनुकूल व फलप्रद।

अनुकूल तिथियां — ११, २०, २८।

तुला - छात्रों के लिए श्रेष्ठ माह। पूर्व में दी गयी किसी श्रेष्ठ परीक्षा का परिणाम अनुकूल प्राप्त होगा। पुरुष वर्ग विशेष रूप से मानसिक खिन्नता अनुभव करेगा। स्त्रियों के व्यवहार में क्रोध की वृद्धि। व्यापारी वर्ग नये समझौते को लेकर चिंतित रहेगा, लेकिन सफलता के आसार कम ही हैं। अधिकारियों का अधीनस्थ कर्मचारियों से चला आ रहा कोई विवाद समाप्त होगा। राजनीति में सक्रिय लोगों को विवादास्पद परिस्थितियों में फंसाया जा सकता है। यात्राएं असफल और क्लेशदायक होंगी। किसी सजावटी वस्तु के क्रय में धन का अनावश्यक रूप से व्यय होगा।

अनुकूल तिथियां – ५, १२, २४, २७।

धनु - शत्रु मान - हानि करने के प्रयास में रहेगा तथा सफल होने की भी संभावना है, अतः सावधान रहें और अपने आचरण को नियंत्रित रखें। वृथा वाद - विवाद में उलझने से बचें। व्यापारी बन्धु भी सतर्क रहें। किसी महत्वपूर्ण सौदे को हाथ से निकलने न दें। भवन निर्माण का कार्य प्रारम्भ करने के लिए यह माह आपके लिए श्रेष्ठ अवसर प्रस्तुत कर रहा है एवं दिनांक ६ से १४ के मध्य इसी प्रकार के श्रेष्ठ मुहूर्त का निर्माण हो रहा है। दाम्पत्य जीवन में प्रगाढ़ता आएगी और पारस्परिक सूझ - बूझ से महत्वपूर्ण कार्यों के सम्पन्न होने की स्थिति बनेगी। सम्मान में वृद्धि होगी।

अनुकूल तिथियां – ११, १६, २०।

कुंभ - कार्यों का दायित्व बढ़ेगा और समस्याओं से चौतरफा जूझना पड़ेगा। कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। महत्वपूर्ण यात्राएं होंगी। दाम्पत्य जीवन सुखमय होगा। व्यय बढ़ेगा। जमा पूंजी में व्यय होने की सम्भावना। मित्र वर्ग पूर्ण सहयोगी रहेगा। राजनीतिक जीवन में अनेक उतार - चढ़ाव आएंगे। व्यापारी वर्ग को आंतरिक रूप से कुछ कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है किंतु मासांत तक स्थिति में सुधार सम्भावित जोखिम पूर्ण कार्यों से बचें। शत्रु पक्ष की ओर से सजग रहें। रात्रि भ्रमण का त्याग करें।

अनुकूल तिथियां -- ८, १७, १८, २४।

वृश्चिक - धन के व्यय को नियंत्रित करने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने पड़ेंगे। मन में व्याप्त कोई भय व्यर्थ सिद्ध होगा। चिंतातुर मानसिकता का त्याग करें। दाम्पत्य जीवन में असंतुलन और उससे असंतोष। योजनाओं की पूर्ति अपने इच्छानुसार न होने के कारण मन में चिड़चिड़ाहट रहेगी। सैर सपाटे एवं वेश - भूषा पर आवश्यकता से अधिक व्यय होगा। कल्पना लोक में विचरण करने की प्रवृत्ति बढ़ेगी। शत्रु पक्ष की उपेक्षा न करें।

अनुकूल तिथियां – ८, १२, २७।

मकर - भोग विलास की प्रवृत्तियां बढ़ेंगी। कलात्मक कार्यों में मन का झुकाव अधिक रहेगा। प्रेम - प्रसंगों में आतुरता बढ़ेगी। दाम्पत्य जीवन सामान्य रहेगा। आय की स्थिति में सुधार होने से तथा व्यय पर नियंत्रण होने से मन प्रसन्न रहेगा। विभागीय कार्यों से कई बार यात्राएं करनी पड़ सकती हैं। व्यापारी वर्ग के लिए यह माह कोई सहयोगी व्यापार आरम्भ करने की दृष्टि से अच्छा कहा जा सकता है।

अनुकूल तिथियां – २०, २७, २८।

मीन - मानसिकता में तीव्रता से परिवर्तन आएंगे। भोग विलास, सामाजिक सम्पर्क एवं मनोरंजक गतिविधियों के प्रति मन में अरुचि पनपेगी। एकांत में रहने की प्रवृत्ति का विकास होगा। आय के साधन पुष्ट होंगे। व्यय संतुलित रहेगा। दायित्वपूर्ण गम्भीर कार्यों में झुकाव बढ़ेगा। मित्र वर्ग सहयोगी रहेगा। धार्मिक एवं आध्यात्मिक प्रवृत्तियां बढ़ेंगी। शत्रु पक्ष हताश होगा। प्रेम - प्रसंगों में असफलता। वाहन सुख श्रेष्ठ रहेगा।

अनुकूल तिथियां -- ५,६, १४, २७।

व्रत पर्व एवं त्यौहार

दिनांक	तिथि	पर्व
०२.०१.६४	पौष कृष्ण ५	भुवनेश्वरी दिवस
०५.०१.६४	पौष कृष्ण ८	मेनका सिद्धि दिवस
०८.०१.६४	पौष कृष्ण ११	सफला एकादशी
०६.०१.६४	पौष कृष्ण १२	धूमावती जयन्ती
१४.०१.६४	पौष शुक्ल ३	मकर संक्रान्ति जयन्ती
१८.०१.६४	पौष शुक्ल ३	खड्ग दिवस
१६.०१.६४	पौष शुक्ल ७	गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती
२१.०१.६४	पौष शुक्ल ६	चैतन्य सिद्धि दिवस
२३.०१.६४	पौष शुक्ल ११	पुत्रदा एकादशी
२७.०१.६४	पौष शुक्ल पूर्णिमा	शाकम्भरी जयन्ती
०८.०२.६४	माह कृष्ण १३	महाविद्या दिवस
१५.०२.६४	माह शुक्ल ५	वसंत पंचमी
१८.०२.६४	माह शुक्ल ७	पाप मोचन दिवस
२२.०२.६४	माह शुक्ल ११	जया एकादशी
२४.०२.६४	माह शुक्ल १३	विश्वकर्मा जयन्ती
२५.०२.६४	माह पूर्णिमा	ललिता जयन्ती

ज्योतिष प्रश्नोत्तर

सुनीता डी. रसाल, अहमदनगर
प्रश्न - **मेरी सरकारी नौकरी होगी?**
उत्तर - नहीं।

चन्द्रकांत सखाराम पुंड, पुणे
प्रश्न - **मकान एवं वाहन योग कब तक?**
उत्तर - ४३ वें वर्ष में।

दिनेश चंद, यमुनानगर
प्रश्न - **व्यापार में तरक्की कब और कैसे?**
उत्तर - साढ़े तीन वर्ष कठिनाई पूर्ण है, मूंगा धारण करें।

दीपेन्द्र कुमार दास, सप्तरी नेपाल
प्रश्न - **मेरी पढ़ाई के विषय में बताइये?**
उत्तर - निरन्तर बाधा बनी रहेगी।

मोनिका गुलोरिया, कांगड़ा
प्रश्न - **क्या डॉक्टर बन सकूंगी?**
उत्तर - संभावनाएं प्रबल हैं।

दरोगा सिंह, जौनपुर
प्रश्न - **घर में सुख- शांति का उपाय बताएं।**
उत्तर - तांत्रोक्त नारियल की स्थापना करें।

श्रीमती सरोज, बांसवाड़ा
प्रश्न - **व्यक्तिगत समस्या कैसे सुलझेगी?**
उत्तर - समस्या कठिन है, अघोर गौरी प्रयोग करें।

नागेश भाई कुंचिकोरवे, बम्बई
प्रश्न - **बच्चों की बीमारी दूर नहीं होती?**
उत्तर - भाग्योदय प्रयोग सम्पन्न करें।

प्रकाशचन्द्र पाण्डेय,प. चम्पारण
प्रश्न - **क्या मनोवांछित स्थान पर विवाह संभव है?**
उत्तर - फलप्रद नहीं।

सरीना गुरुंग, दार्जिलिंग
प्रश्न - **भविष्य सुनिश्चित करने के लिए क्या करूं?**
उत्तर - मोती धारण करें।

कृष्ण प्रसाद त्यागी, सहरसा
प्रश्न - **आर्थिक अभाव कब तक दूर होगा?**
उत्तर - वर्तमान में यही स्थिति बनी रहेगी।

गिरीश कुमान जोशी, भोपाल
प्रश्न - **मुकदमे में विजय कब तक?**
उत्तर - मुकदमा लम्बा खिंच सकता है, लेकिन आपकी ही विजय होगी।

केशव देव डिडवानिया, कलकत्ता
प्रश्न - **ऋण मुक्ति कब तक?**
उत्तर - पांच वर्ष कड़े संघर्ष का समय रहेगा।

कंचन गुप्ता, लखनऊ
प्रश्न - **मेरे लिए कौन सा क्षेत्र उपयुक्त रहेगा?**
उत्तर - शासकीय सेवाओं में प्रयास करें।

सरोज राय , पटना
प्रश्न - **मैं अपना व्यापार करना चाहती हूं।**
उत्तर - व्यापार विशेष लाभप्रद नहीं रहेगा।

कु. प्रज्ञा, बांदा
प्रश्न - **विवाह कब तक होगा?**
उत्तर - विवाह में विलम्ब संभावित। गुरु शांति का उपाय करें।

रुद्रमणि तिवारी, गोण्डा
प्रश्न - **आर्थिक स्थिति में सुधार कब तक?**
उत्तर - अगले वर्ष जून तक।

अंजना कुमारी चंदेल, बिलासपुर
प्रश्न - **क्या मुझे नौकरी प्राप्त हो सकती है?**
उत्तर - आपको शीघ्र ही अच्छी नौकरी मिलेगी।

अनिल नरुला, अम्बाला
प्रश्न - **मुझे किस व्यवसाय में सफलता मिलेगी?**
उत्तर -अपने ही नगर में मशीनरी का कार्य करें।

सरदार सिंह शर्मा, लखनऊ
प्रश्न - **सम्पत्ति के निपटारे के लिए क्या करूं?**
उत्तर - भाग्योदय प्रयोग अथवा कुबेर साधना सम्पन्न करें।

उदय सिंह राठौड़, अलवर
प्रश्न - **स्टेनोग्राफर बनने में अड़चनें आ रही हैं?**
उत्तर - वर्तमान स्थान में उन्नति संभव नहीं।

मधुमती कुमारी, कलकत्ता
प्रश्न - **मेरी शिक्षा का योग कैसा है?**
उत्तर - सामान्य

गोपाल कृष्ण सारस्वत, अलीगढ़
प्रश्न - **आर्थिक उन्नति किस प्रकार?**
उत्तर - कमला महाविद्या साधना करें।

राजेश कुमार अग्रहरि, देहरादून
प्रश्न - **क्या मेरा वैवाहिक जीवन सुखी होगा?**
उत्तर - विवाद चलते रहने की संभावना ही अधिक प्रतीत होती है।

सुरेन्द्र शर्मा, चम्बा
प्रश्न - **दूसरा महकमा तब्दील कब होगा?**
उत्तर - वर्तमान में संभव नहीं।

कृष्ण कुमार शर्मा, दुर्ग
प्रश्न - **क्या मैं राजपत्रित अधिकारी बन सकूंगा?**
उत्तर - विलंब की संभावना। फिरोजा धारण करें।

आनंद प्रकाश राव पांढरे, नागपुर
प्रश्न - **मैं कौन सा रत्न धारण करूं?**
उत्तर - पुखराज।

विपिन कुमार सिंह, पटना
प्रश्न - **क्या तबला वादक बनने का योग है?**
उत्तर - प्रारम्भ में कुछ कठिनाइयां, किंतु कुछ समय बाद संभव।

पूनम कुमारी, अहमदाबाद
प्रश्न - **क्या मैं डॉक्टर बन सकूंगी?**
उत्तर - हां।

चिरंजी लाल, नैनीताल
प्रश्न - **क्लास वन में पदोन्नति कब तक और कहां?**
उत्तर - अगले वर्ष जून तक, पूर्वी क्षेत्र की ओर।

सत्यनारायण शर्मा, अलवर
प्रश्न - **आर्थिक अभाव कैसे दूर करूं?**
उत्तर - अष्ट लक्ष्मी साधना सम्पन्न करें।

कूपन क्रमांक :- ११५ (**कूपन पर ही प्रश्न स्वीकार्य होंगे**)

नाम :-..

जन्म तिथि :- ....महीना ....सन्...............

जन्म स्थान .... जन्म समय ....

पता (स्पष्ट अक्षरों में) :-..

....

आपकी केवल एक समस्या :- ....

कृपया निम्न पते को काटकर लिफाफे पर चिपकाएं :-

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान कार्यालय
३०६, कोहाट इन्क्लेव
पीतम पुरा, नई दिल्ली-११००३४

कुछ तंत्र को तांत्रिकों की

हम उस देश के निवासी हैं जो तांत्रिक क्षेत्र में पूर्ण रहा है और इस क्षेत्र में वह आज भी विश्व का मार्गदर्शन करने में सक्षम है। समय-समय पर इस देश में ऐसे तांत्रिक उत्पन्न हुए हैं जिनके कार्यों से, साधनाओं से एवं विचारों से यह देश ज्योत्स्नित रहा है। इस लेख में मैं ऐसे ही कुछ विश्व प्रसिद्ध तांत्रिकों के संस्मरण लिख रहा हूं -

स्वामी रामकृष्ण परमहंस

राम कृष्ण परमहंस हमारे देश के एक महान् विभूति थे, जिन्होंने विवेकानन्द जैसा युवक इस देश को भेंट किया, जिसने पूरे विश्व में भारत का नाम ऊंचा उठाया। स्वयं रामकृष्ण परमहंस मां काली के परम भक्त एवं बहुचर्चित तांत्रिक थे। एक बार जब विवेकानंद रामकृष्ण से मिलने गए -- शायद यह उनका दूसरी बार मिलन था, रामकृष्ण एक छोटे से आसन पर पालथी मारे बैठे थे, विवेकानंद लिखते हैं कि "मैंने अचानक उन्हें आवेग से कम्पित होते हुए देखा, उनकी आंखें मेरी तरफ लगी हुई थीं, मैं उन्हें रोकूं, तब तक तो उन्होंने अपना दायां पैर मेरे शरीर पर रख दिया, वह स्पर्श कितना भयानक था, मैं आंखे खोले-खोले ही देख रहा था कि कमरे की दीवारें व उसके अंदर की अन्य सब वस्तुएं चक्कर लगा रही हैं और धीरे-धीरे शून्य में विलुप्त होती जा रही हैं -- समस्त संसार और मेरा अपना व्यक्तित्व भी उसी समय एक नाम रहित शून्य में लीन हो गया। यह शून्यता मानों प्रत्येक वस्तु को अपना ग्रास बना रही थी। मैं चिल्ला उठा -- आप यह क्या कर रहे हैं? पर वे हंसने लगे, और मेरी छाती पर अपना हाथ फेरते हुए उन्होंने कहा - अच्छा ठीक है। आज यहीं तक रहने दो, समय आने पर पूरा भी हो जाएगा। उनके ये शब्द कहने के साथ ही वह सब विस्मयकर दृश्य लुप्त हो गए मैं अपने - आपे में आ गया और बाहर और भीतर सब चीजें पूर्ववत् हो गईं।"

स्वामी विशुद्धानंद

हमारे देश की एक महान् विभूति स्वामी विशुद्धानन्द जी थे। जो कुछ ही वर्षों पूर्व हमारे बीच सशरीर विद्यमान थे, आज भी कई ऐसे वृद्ध मिल जाएंगे, जो उनके साहचर्य में रहे थे। **पं० गोपीनाथ कविराज** उनके परम शिष्य थे, और वर्षों वाराणसी में स्वामी जी के साथ रहे हैं।

कविराज जी ने उनके बारे में - **मनीषी की लोक यात्रा** ग्रंथ में काफी कुछ लिखा है। स्वामी विशुद्धानंद जी सूर्य विज्ञान के प्रसिद्ध अध्येता थे। एक बार कविराज जी ने निवेदन किया - सूर्य किरणों से किसी भी प्रकार का पदार्थ बना देना या पदार्थ को रूपान्तरित कर देना असंभव है, हम सब का निवेदन है कि आप, अपने पसंद की नहीं, हमारे द्वारा निर्दिष्ट वस्तु यदि सूर्य रश्मि से उत्पन्न कर सकें, तो हम आपके सिद्धान्त की वास्तविकता स्वीकार कर लेंगे।

बाबाजी ने कहा - क्या देखना चाहते हो? सान्याल बोले - रेड ग्रेनाइट स्टोन (लाल कलाश्म पत्थर)। बाबाजी ने अंगूर के डिब्बे में रखी हुई रुई का एक टुकड़ा मंगाया और उसे कुछ दूर पर रखकर लेन्स से प्रकाश देने लगे। वह शनैः शनैः सफेद से लाल रंग में परिवर्तित होकर दो - तीन मिनट में जमकर काठ की भांति कड़ा हो गया, उसके अनंतर लाल ग्रेनाइट पत्थर बन गया।

इसके बाद बाबाजी ने एक फूल उठाकर उसे एक फल के रूप में परिवर्तित करके दिखा दिया था।

स्वामी शिव हरिबाबा

स्वामी शिव हरिबाबा का दिखना एक दुर्लभ दर्शन है, फिर भी कई साधकों ने इन्हें वाराणसी में देखा है, पिछले प्रयाग कुंभ में भी ये पधारे थे। इन पंक्तियों के लेखक को उनके सानिध्य में कुछ समय बिताने का मौका मिला था। तांत्रिक साधना के क्षेत्र में वे देश की विभूति हैं, एक दिन जब मैंने तंत्र साधना पर संदेह प्रकट किया, तो उन्होंने मेरे सामने हाथ उठाकर मेरी नाक के पास ले आए, उसमें तो अपूर्व सुंगध आ रही थी, यही नहीं अपितु कुछ ही क्षणों के बाद सुंगधित गुलाब के इत्र की हल्की-हल्की फुहार मुझे लगी थी, और वहां जो भी पचास - साठ लोग बैठे थे, उस सुगंध से भीग गए थे, उन पहने हुए कपड़ों को घर आकर दो - तीन बार धोने के बाद भी सुगंध समाप्त नहीं हुई थी, यह सुगंध गुलाब के इत्र से भी ज्यादा मादक एवं अपूर्व थी।

पगला बाबा

पगला बाबा को आज भी देहरादून की पहाड़ियों के आसपास देखा जा सकता है, स्वभाव से अक्खड़ पगला बाबा, तांत्रिक क्षेत्र में इस युग की विभूति हैं, हरिद्वार में कुंभ

के अवसर पर सभी साधक एक स्वर से मानने के लिए बाध्य हुए थे कि आज के युग में वे सर्वश्रेष्ठ तांत्रिक हैं, भीषण आग में भी घंटे भर तक अपना हाथ रखकर जब उन्होंने हाथ बाहर निकाला, तब वह वैसा ही था, जैसा आग में डालते समय था, आग का किंचित भी प्रभाव उस पर नहीं पड़ा था।

टिकला बाबा

वाराणसी के दशाश्वमेध घाट पर कई बार एक साधु आकर टिकते हैं, जिन्हें लोग-टिकला बाबा के नाम से जानते हैं, बाबा कई बार तो महीनों वहां पड़े रहते हैं, पर वे न तो कुछ खाते हैं, न पीते हैं, मल - मूत्र विसर्जन करते हुए भी लोगों ने उन्हें नहीं देखा, कई बार नवयुवकों ने पाटी बांध कर महीने भर तक चौबीसों घंटे उनकी निगरानी की पर हमेशा उन्हें एक ही आसन पर बैठे देखा, प्रातःकाल भोर के समय लोगों ने उन्हें नंगे पांव चल कर गंगा पार होते देखा है, गंगा में पानी पर वे उसी प्रकार चल लेते हैं, जैसे कोई व्यक्ति साफ सुथरी सड़क पर चल रहा हो।

एक बार उत्तर प्रदेश में ही किसी स्थान पर पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर कैदियों की कोठरी में डाल दिया, तो दूसरे ही दिन वे पुनः उसी स्थान पर बैठे दिखाई दिए, जिस स्थान पर वे पूर्व संध्या को धूनी जमाए बैठे थे पर स्थानीय लोगों से तंग आकर वे शीघ्र ही उस स्थान से चले गए थे। आज भी टिकला बाबा कई बार लोगों को मिल जाते हैं।

बनर्जी बाबू

हमीदपुर (बंगाल) में एक गृहस्थ हैं,' बनर्जी बाबू'। उस तरफ सर्वत्र वे बनर्जी बाबू के नाम से ही प्रसिद्ध हैं। निस्संदेह वे जबरदस्त तांत्रिक हैं; श्मशान साधना के क्षेत्र में आज उनकी तुलना का कोई अन्य साधक नहीं, पूरे बंगाल व भारत में उनका नाम तांत्रिक क्षेत्र में आदर के साथ लिया जाता है। एक बार जब ब्रह्मपुत्र में अचानक पानी बढ़ने लग गया, और आसपास के सैकड़ों गांवों को खतरा उत्पन्न हो गया, साथ ही थोड़े से समय में ग्रामवासियों को सुरक्षित रूप से हटाना असंभव लगने लगा, तो बनर्जी बाबू ब्रह्मपुत्र के बीचों- बीच जाकर खड़े हो गए, ब्रह्मपुत्र का पानी फटकर दो तरफ बहने लगा, और जलस्तर उतना ही बना रहा जितना था, लगभग आठ घंटों तक बनर्जी बाबू वहीं खड़े रहे। जब सब आसपास के गांवों के लोगों को हटा लिया, तभी बनर्जी बाबू बाहर निकले, और बाहर निकलते ही आध घंटे के भीतर-भीतर ब्रह्मपुत्र का पानी खतरे के बिंदु से ऊपर उठ गया था, और दूसरे दिन ब्रह्मपुत्र ने जो रौद्र रूप बताया था उसे स्मरण कर आज भी वहां के लोग कांप जाते हैं। यदि उस दिन बनर्जी बाबू वहां नहीं होते तो निश्चय ही हजारों लोग काल कवलित हो जाते, पर इसके साथ ही सभी लोग बनर्जी बाबू की विलक्षण सिद्धि के सामने नतमस्तक हो गए थे।

महामाया भैरवी

महामाया भैरवी एक उच्चस्तरीय साधिका है। देहरादून, कानपुर आदि स्थानों पर मां को देखा जा सकता है, उनके पास लाल रंग का एक झोला रहता है, जिसमें मुश्किल से एक किलो खाद्य पदार्थ आ सकता है। पर लोगों ने अपनी आंखों से देखा है कि मां भैरवी उस झोले में से निकाल कर सैकड़ों लोगों को खाना खिला देती है, फिर भी झोला ज्यों का त्यों भरा रहता है।

टल्लू बाबा

टल्लू बाबा वाराणसी के प्रसिद्ध संत हैं, कुछ वर्ष पूर्व इनसे मिलने का सौभाग्य मिला था। काफी प्रतिष्ठित लोग वहां बैठे हुए थे तभी एक नेताजी ने अपने गुणों की डींग मारी, तो स्वामी जी ने कहा -- ऐसी बात नहीं है। जब नेताजी जिद्द पर अड़ गए तो बाबा ने सबके सामने दीवार पर चल - चित्र की भांति उन सारी घटनाओं को स्पष्ट कर दिया जो नेताजी के काले कारनामे थे, कहना न होगा कि नेताजी इसी बीच चुपके से खिसक गए थे।

इसके अतिरिक्त भी भारत में कई ऐसे तांत्रिक हैं, जो अज्ञात हैं परन्तु उनकी साधना एवं सिद्धियों से यह देश जगमगा रहा है।

दिनांक-१०.०३.६४

औढरदानी शिव का महापर्व

महाशिवरात्रि

- सुखी जीवन हेतु अद्वितीय साधना
- आर्थिक व्यापारिक उन्नति के लिए अद्वितीय
- रोग मुक्ति में पूर्ण सहायक
- मनोकामना की पूर्ति में सौ टंच सहायक
- भगवान शिव की प्रसन्नता, प्रत्यक्ष दर्शन
- और वर्ष में केवल एक अवसर - शिवरात्रि
- जिसको चूकना पूरे वर्ष को चूकना है।

महापंडित रावण लोक श्रुतियों में भले ही एक राक्षस और विकृत छवि का पुरुष हो किंतु विद्वानों व तंत्रज्ञों के मध्य रावण एक प्रखर शिव भक्त, प्रकांड विद्वान, योगी और तपस्वी के रूप में ही श्रद्धा से स्मरण करने का पात्र है। लोक मान्यताओं में रावण की छवि जो भी हो लेकिन वे भी उसकी शिव भक्ति से अभिभूत रहते ही हैं। एक अद्भुत शिवयोगी जिसने अपने जीवन में साक्षात् भगवान शिव के दर्शन प्राप्त किए, अद्भुत काव्य और स्रोत रचे। उसकी प्रामाणिकता पर कोई संदेह कर भी कैसे सकता है?

महाशिवरात्रि तो आदि देव भगवान शिव के उल्लास का पर्व है, पुराणों में ऐसी कथा आती है कि इसी दिवस पर जब भगवान शिव का मां भगवती पार्वती से विवाह सुनिश्चित हुआ उस अवसर पर पाणिग्रहण के समय परम्परा के अनुसार भगवान शिव के पिता का नाम पूछा गया। सभी देवता विस्मृत होकर एक दूसरे का मुंह देखने लग गए, तब ब्रह्मा ने कहा कि मैं इनका पिता हूं। पितामह का नाम पूछे जाने पर श्री विष्णु ने अपना परिचय दिया और इससे भी ऊपर जब प्रपितामह का नाम पूछा गया तब सभी

देवताओं द्वारा निरुत्तर हो जाने पर भगवान शिव ने ही मौन भंग किया - "इन सभी का प्रपितामह मैं ही हूं।"

भगवान शिव के मुख से कहे गए ये वचन उनके अनादि होने का साक्षात् प्रमाण है। भगवान शिव से अधिक पूज्य कौन अन्य देव या देवी है। औदार्य, सरलता, क्षमा, करुणा और ऐश्वर्य के अधिपति भगवान शिव के समान कोई भी अन्य देवत्व नहीं। योग और भोग को एक साथ धारण करने की सामर्थ्य किसी भी देव में तो नहीं। अर्द्धनारीश्वर स्वरूप ही भगवान शिव का यथार्थ परिचय है। **विष पान कर लेने की घटना ही भगवान शिव की जन-जन के मानस में अपनी पहुंच बनाए हुए है और वे ही तो हैं जो गुरु रूप में इस धरा पर अवतीर्ण होते हैं। गुरु साक्षात् भगवान शिव ही कहे गए हैं।**

भगवान शिव के समक्ष तो प्रत्येक दिवस चैतन्य है, प्रत्येक क्षण वे आनंदित, प्रत्येक क्षण तरंगित व उल्लसित हैं और इसी से आशुतोष की संज्ञा से विभूषित हैं। वर्ष में कभी भी पूर्ण विधि-विधान से, किसी भी अवसर पर शिव पूजन कर लिया जाए तो उसका फल प्राप्त होता ही है, लेकिन प्रत्येक माह की त्रयोदशी विशेष चैतन्य दिवस होती है, जो शिव रात्रि की संज्ञा से विभूषित है और इन्हीं शिवरात्रियों में सबसे अधिक पावन शिव रात्रि है **"महाशिव रात्रि"** फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी, जो इस वर्ष दिनांक **१०.३.९४** को है। भगवान शिव सदैव आनंद मग्न हैं और शक्ति स्वरूपा मां भगवती पार्वती इस जीवन में आनंद और सरसता की साकार मूर्ति हैं। इनके परस्पर मिलन से सम्पूर्ण प्रकृति इस पावन दिवस पर अपने पूर्ण श्रृंगार के साथ नृत्य कर उठती है और इसी से साधना का यह पावन पर्व दुर्लभ अवसर बन जाता है। सम्पूर्ण रूप से प्रकृति का अणु-अणु चैतन्य होकर साधक को उसका मनोवांछित प्रदान करने के लिए तत्पर हो जाता है। साधक शिव पूजन कर, स्वयं शिव स्वरूप होने की क्रिया में आगे बढ़ जाता है और प्रकृति उसकी अभ्यर्थना करती है उसको उसका मनोवांछित प्रदान कर। सामान्य दिवस नहीं होता यह और न तो सामान्य रात्रि। भगवान शिव तो सर्वथा सरल और भोले हैं जिनके विषय में कहा गया है कि मिट्टी से बना शिवलिंग , बेल के पत्तों से पूजन और गाल बजा देने से मंगल ध्वनि! इतना ही त्रैलोक्य संपत्ति प्राप्त करने के लिए पर्याप्त है, किंतु साधक इस तथ्य की गरिमा जानता है कि किस प्रकार से इस दिवस पर सम्पूर्ण साधना का क्रम अपनाना चाहिए। प्रतीक रूप से भाव का प्रदर्शन तांत्रोक्त माध्यम से करना चाहिए, जिससे चराचर प्रकृति वशीभूत हो सके।

महापंडित रावण ने ऐसी ही दुर्लभ विधि खोज निकाली थी। सामान्य शिव पूजन के स्थान पर शिव पूजन का ऐसा तांत्रोक्त और दुर्लभ विधान खोज निकाला था, जिसके कारण वह अपने बल, पराक्रम, शौर्य, तपस्या, भक्ति के साथ-साथ ऐश्वर्य के स्वामी के रूप में आज तक विख्यात है। रावण की सोने की लंका आज तक विख्यात है। उसके शौर्य की गाथा पुराणों और शास्त्रों में बिखरी पड़ी हैं। **क्या बिना तंत्र के बल से ऐसा सब कुछ एक ही जीवन में कोई व्यक्ति संभव कर सकता है? उसने तंत्र का बल जोड़ा भी तो तंत्र के ही सृजक भगवान शिव से और इसी से उसे जीवन में किसी भी वस्तु की कभी भी कोई कमी नहीं रही।**

रावणकृत तांत्रोक्त शिव पूजन

रावणकृत इस तांत्रोक्त पूजन की विशेषता यह है कि भगवान शिव को जगद्गुरु के रूप में मानकर उनका पूजन किया जाता है साथ ही उनका पूजन एकांगी रूप से नहीं वरन सम्पूर्ण शिव परिवार सहित किया जाता है। क्योंकि भगवान शिव सबके मध्य होते हुए भी सर्वथा एकांगी और निस्पृह जो हैं, और यही एक आदर्श स्थिति है। आध्यात्मिक रूप से भी व्यक्ति को इसी स्तर तक यात्रा करनी पड़ती है।

१०.३.९४ को आपको घर बैठे ही सभी सामग्री और शिव पूजन का पूर्ण विधि-विधान, शिव-पार्वती की कृपा का पूर्ण फल प्राप्त हो, इसका आग्रह हर बार की तरह इस वार भी पाठकों और साधकों ने पत्रों के माध्यम से भेजना प्रारम्भ कर दिया है। उनके इस आग्रह को ध्यान में रख कर ही **"महाशिव-पार्वती सर्वमनोकामना सिद्धि पैकेट"** भेजने की व्यवस्था की जा रही है।

तांत्रोक्त शिव पूजन की विधि, माह-फरवरी में पत्रिका की **"महा शिव रात्रि विशेषांक"** में प्रकाशित की जाएगी। पूज्यपाद गुरुदेव की चैतन्यता और आशीर्वाद से युक्त इस पैकेट में रावणवर्णित निम्न आठ दुर्लभ तांत्रोक्त सामग्री समाहित होंगी --

१. **तांत्रोक्त शिव यंत्र**
२. **धूम्र संकष्ठ**
३. **गौरंग**
४. **भैरव लोचन**
५. **गुंडिचा**
६. **रौद्रसाक्षी**
७. **विकटा**
८. **गुणनिधि**

यह दुर्लभ सिद्ध पैकेट उन्हीं को भेजा जा सकेगा जो समय रहते ही पत्र अथवा फोन द्वारा हमें सूचित करेंगे, इस सिद्ध पैकेट की वी० पी० पी० द्वारा प्राप्ति के लिए सम्पर्क सूत्र -

मंत्र शक्ति केंद्र
डा० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर-३४२००१
दूरभाष-०२९१-३२२०९

श्मशान का सिद्ध

जो अपने आप में ही अदभुत है

एक बार यदि तीक्ष्ण साधना करने की ठान ही ली तो फिर छोटी-मोटी साधनाओं में उलझना ही क्यों . . . हौसले से भरे और चुनौती ग्रहण कर सकने वाले साधक तो फिर साध ही लेते हैं वीर वेताल . . . और प्राप्त कर लेते हैं -- तेज और पौरुष का ऐसा मिला-जुला आकर्षण अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व में जिसके आगे तो कामदेव के सौन्दर्य को ही झुक जाना पड़े . . .

प्रख्यात तांत्रिक और तांत्रिक से भी अधिक कापालिक जयपाल सिद्ध की गाथा . . .

हवन की लपटें हर बार आहुति के साथ भभक कर और ऊंची और अधिक लपलपाती हुई आकाश को चूमने के लिए बढ़ रही थीं . . . ज्यों मंत्रों के प्रभाव से अग्निदेव बाध्य हो गए हों केवल आहुतियों को ही पहुंचाने के लिए ही नहीं, वरन् साक्षात वीर-वेताल को बांध कर यहीं इसी श्मशान भूमि में खड़ा कर देने के लिए . . . मंत्रों के घोष से और चढ़ी हुई त्यौरियों से **. . . आंखों से निकलती लपटों से तो हवन कुंड की अग्नि भी फीकी पड़ गई थी . . .** हवा में हाथ लहराता और आहुति को लेकर जिस प्रकार से अग्नि में झोंक रहा था, उससे सारी प्रकृति ही स्तब्ध हो गई थी . . . कोई गिड़गिड़ाहट नहीं और न कोई याचना का स्वर . . . दमखम से भरा पौरुष का स्वर कि बस आज अभी और इसी क्षण वीर वेताल को मेरे सामने प्रत्यक्ष होना ही है, सिद्ध होना ही है और जीवन भर मेरा गुलाम बनकर रहना है ही। चौबीसों घंटे प्रतिपल - प्रतिक्षण एक चाकर की तरह हाथ बांध कर, दृष्टि को झुकाए, भय से कांपता हुआ . . . बहुत हो गया मंत्र जप, बहुत कर ली तेरी याचना यदि तू वीर - वेताल है तो मैं भी एक सिद्ध साधक हूं और उससे भी अधिक एक सक्षम गुरु का समर्थ शिष्य हूं।

एक माह हो गया था मंत्र जप करते - करते नित्य इसी श्मशान की भूमि में हड्डी के टुकड़ों और मांस के लोथड़ों के बीच में जीवन व्यतीत करते, चिता पर भोजन पकाकर खाते और नित्य रात्रि में एक घंटे किसी धधकती चिता के पास त्राटक करते हुए मंत्र जप करने के उपरान्त अपनी उसी साधना भूमि पर जाकर आगे का क्रम अपनाते . . . झुंझला उठा जयपाल . . . या तो अब मैं नहीं या तो वीर वेताल नहीं . . . देखूं कितनी सामर्थ्य है उसमें, क्या होगा अधिक से अधिक यह देह ही तो नष्ट हो जाएगी। कोई बात नहीं नई देह से फिर साधना करूंगा, **लेकिन यूं गिड़गिड़ा कर और रो-झींक कर साधना करने का कोई अर्थ नहीं, और वह भी वीर वेताल जैसी साधना जो अपने- आप में पूर्ण पौरुष साधना है . . .** पौरुषता से आरम्भ करने की और

पूर्ण पौरुष प्राप्त कर लेने की . . .

. . . नहीं प्राप्त करना मुझे छोटे-मोटे बिम्ब और नहीं प्राप्त करना मुझे मामूली सी अनुभूतियां न लेनी है कोई टुच्ची सिद्धियां। साधना करनी है तो पूर्णता से करनी है। चाहे यह वीर वेताल की हो या भैरव की। यदि मैंने कहा और बावन भैरव नृत्य न करने लगे तो मेरे साधक होने का अर्थ ही क्या? धिक्कार है मेरे जीवन पर और अपमान है मेरे गुरु निखिलेश्वरानंद जी का. . . यही सोचते हुए तीन दिन पूर्व जाकर मिला था पूज्य गुरुदेव से . . . पूज्य गुरुदेव का वह तेजस्वी और सन्यस्त स्वरूप जब ऐसी साधनाएं उनके आसपास ही उनके चरणों में बैठी रहती थीं . . . अब तो इस गृहस्थ जीवन में ऐसे दम - खम से भरे साधक रहे ही कहां, बहुत हुआ तो कोई मामूली सी सिद्धि मांग ली या कोई भूत-प्रेत सिद्ध कर लिया। लेकिन इसमें वह आनन्द कहां जो वीर - वेताल जैसे प्रचंड पुरुष को अपने वशीभूत कर लेने में है साक्षात् उसको अपनी देह में उतार लेने में है और इसी से गोपनीय हो गई यह साधना।

"व्यर्थ नहीं जाती है कोई भी साधना . . . एक-एक क्षण की साधना का हिसाब है मेरे पास। विश्वास न हो तो पूछ कर देख ले मुझसे, **मैं ही तैयार कर रहा था तुझे इस साधना का अद्वितीय और सिद्ध साधक बना देने के लिए और कोई भी मंत्र जप व्यर्थ नहीं गया है।** एक-एक अणु को चैतन्य करने की, उसे शक्तिमान बनाने की क्रिया सम्पन्न हो गई है तेरे अन्दर और बस यही क्षण है कि जब वीर वेताल की साक्षात् सिद्धि प्राप्त होगी तुझे, एक युग के बाद पुनः घटेगी यह घटना इस धरा पर। आद्य शंकराचार्य के बाद कोई भी सिद्ध साधक नहीं हो सका है भारत में इसका" . . . पूज्य गुरुदेव की वाणी से जयपाल के दुखते हुए मन में कुछ तो राहत पहुंची लेकिन अभी तीन दिन दूर थे पूर्णता प्राप्त होने में। तीन दिन अर्थात ७२ घंटे और साधना में निमग्न साधक को, सिद्धि को झपट लेने के लिए आतुर साधक को तो एक-एक पल भारी

होता है . . . पिंजरे में बंद सिंह जैसी दशा होती है उसकी . . . कि **पिंजरा खुले और वह झपट ले अपने भक्ष्य को, वीर वेताल हो या ब्रह्मराक्षस . . . साधक की दुर्दान्त गति के आगे ये सब भयभीत हिरण जैसे ही तो छोटे-मोटे भक्ष्य हैं** . . . यौवन का उन्माद और विजय की आकांक्षा से एक सुरूर तैर गया जयपाल की मस्ती भरी आंखों में, कुछ और विद्युत सी दौड़ गई उसके सुदृढ़ और विशाल हस्ति के समान भीमकाय शरीर में . . . कोई बात नहीं बस तीन ही दिन, और एक अद्भुत सिद्धि मेरे हाथ होगी। शक्ति का साकार पुंज वीर वेताल मेरी मुट्ठी में बंद होगा . . .

राई, सरसों, और पता नहीं किन-किन जड़ी - बूटियों का ढेर चारों तरफ लगा हुआ था जयपाल के, एक विचित्र सी गंध व्याप्त हो गई थी सारे वातावरण में, गंध श्मशान की या जलती हुई लाशों की या फिर अद्भुत वन औषधियों की . . . आज आसमान भी काला न होकर रक्तवर्णीय हो गया था . . . यद्यपि कहने को रात का तीसरा प्रहर था, और मानों प्रकृति भी मूर्त रूप लेकर उतर आई थी इस अनोखी घटना को घटित होते हुए देखने के लिए . . . बस कुछ पल ही और, कुछ आहुतियां ही तो और शेष . . . दान नहीं, भिक्षा नहीं, तंत्र की एक क्रिया पूर्ण होने की घड़ी और कोई याचना नहीं, कोई प्रार्थना नहीं, वीर वेताल को प्रकट होकर दासत्व स्वीकार करना ही था . . . मंद चलती हवा एकक्षण के लिए रुकी, ज्यों प्रकृति की ही श्वांस थम गई हो, अचानक एक ओर से आंधी का प्रचण्ड झोंका, एक बबूला बनकर उड़ता हुआ आया, अन्तिम पांच आहुतियां शेष मानों अपने साथ ऊपर आकाश में उड़ा ले जाने के लिए. . . घबरा गया जयपाल लेकिन आत्मसंयम नहीं खोया और उस विशिष्ट रक्षामंत्र का उच्चारण कर उछाल दिए सरसों के दाने उसी दिशा में . . . थम गई एक प्रचण्डता, लेकिन जाते-जाते भी उस विशाल और बूढ़े वट वृक्ष को जमीन में मटियामेट करते हुए, कोलाहल सा मच गया चारों ओर सैकड़ों पक्षियों के साथ-साथ यही तो प्रिय स्थली थी पता नहीं किन-किन भटकती आत्माओं की, और जिसकी उभरी जड़ों के बीच ठाठ से टांग पर टांग चढ़ा कर किसी बेताज बादशाह की तरह कई-कई घंटे गुजारे थे, जयपाल ने . . .

आक्रोश प्रकट हो रहा था, भले ही सूक्ष्म रूप में कि कसमसा उठा है वीर वेताल भी एक अनहोनी को घटित

(शेष पृष्ठ ६४ पर)

सम्भव है परकाया प्रवेश यदि सही ढंग से प्रयोग किया जाए

भारत की गूढ़ विद्याओं में विख्यात एक प्राचीन विद्या, जिसके साथ जुड़ी हैं अनेक अलौकिक घटनाएं . . . शंकराचार्य जैसे युग पुरुष का नाम।

परकाया प्रवेश का अर्थ केवल किसी मृत देह में ही प्रवेश करने से नहीं, इसके तो कई रूप संभव है . . .

. . . ऐसी ही एक रोचक घटना का विवरण प्रस्तुत करती यह कथा . . .

पतीली से उठता धुंआ देखकर देबू का मन फिर खो गया . . . घुटनों को मोड़कर वह उनमें सिर डालकर बैठ गया . . . "फिर तूने वही रोनी मुख मुद्रा बना ली।" . . . दूर से लकड़ी लेकर आती हुई मां के तेज स्वर से देबू की आंखें खुल गईं और वह चैतन्य होकर अपनी आंखों में भर आए आंसू को पोंछ कर वहां से थोड़ी दूर हट गया . . . "अजीब बालक है यह, न साथियों के साथ खेलना, न हंसना- बोलना, पता नहीं किस दुनियां में खोया रहता है।"

सच ही तो था पांच वर्ष के देबू की यह आयु तो नहीं थी कि वह रह-रह कर इस तरह से गुम हो जाए, किसी कोने में जाकर अपना मुंह घुटनों में छुपाकर गुमसुम बैठ जाए . . . लेकिन इसका रहस्य तो केवल देबू ही जानता था।

"कहां वह फेनिल तरंगों से उठता उज्ज्वल बादल और कहां यह घोषपाड़ा की संकीर्ण सी भूमि . . .।" पतीली से उठता धुआं देखकर देबू इन्हीं विचारों में खो गया . . . चार-पांच वर्ष की ही काया थी, कौन कह सकता था कि इसी चार-पांच वर्ष की काया में एक सौ दस वर्ष के वृद्ध योगी आत्मानंद की आत्मा निवास कर रही है . . . पौड़ी के क्षेत्र में परमहंस स्वामी आत्मानंद जी के नाम से विख्यात योगी जो अपनी तपोमयता और निस्पृहता के कारण जन मानस में अत्यन्त विख्यात और पूज्यनीय थे . . . ध्यान की उच्चता में लीन, समाधि सुख में निमग्न और अध्यात्म के नए-नए रहस्यों को खोजने में संलग्न . . .

. . . तभी योग विधि द्वारा उन्हें संदेश मिला, गंगोत्री से ऊंचे किसी अज्ञात स्थान पर साधना रत, अपने पूज्य गुरुदेव का . . . तुझे जन्म लेना है पश्चिम बंगाल की बर्दवान जिले की घोषपाड़ा नामक छोटे से गांव में . . . हतप्रभ रह गए स्वामी आत्मानंद जी। यह कैसी आज्ञा, यह कैसा आदेश, क्या भूल हो गई मुझसे, साधना के किस क्रम में त्रुटि कर दी मैंने, जो इस स्थिति से उतार कर सामान्य मल-मूत्र भरे जीवन में भेज रहे हैं, गुरुदेव मुझे . . .

सोचते-सोचते क्लांत हो गए आत्मानंद जी, और रोक न सके अपने आंसू, चल पड़े गंगोत्री के उस दुर्गम क्षेत्र में . . . पूज्य गुरुदेव के पास।

"प्रभु क्या अपराध हो गया मुझसे, यह कैसा आदेश, कैसे रह पाऊंगा मैं उन सभी के बीच, कितने वर्ष का जीवन जीना पड़ेगा मुझे उस भूमि पर जाकर, मेरी साधना और मेरे तप का क्या भावितव्य है" . . . बिलख पड़े वे पूज्य गुरुदेव के चरणों में।

तप के बोझ से अर्धनिमिलित पलकों के भीतर से करुणा और स्नेह की मिली जुली दृष्टि से तृप्त हो गई आत्मानंद की सारी देह, लेकिन उनका प्रश्न अनुत्तरित ही रह गया और रोक न सके आत्मानंद अपने -आप को, चरणों को पकड़ कर लिपट ही गए . . . स्फुट, अस्फुट शब्दों में वह अपनी व्यथा कहने में असमर्थ पा रहे थे अपने-आप को . . . मोह तप का या देह का नहीं, मोह तो था केवल एक उदात्त स्थिति से च्युत होने का या फिर गुरु चरणों से विलग होने का।

— "वत्स! सचमुच कठिन घड़ी है तेरे समक्ष, लेकिन तू ही तो ऐसा सुपात्र है जो पूर्ण कर सकेगा मेरी अभिलाषा को। मैं तुझे अपने से विलग नहीं कर रहा किंतु देह रूप से परिवर्तित कर रहा हूं और भेज रहा हूं उस क्षेत्र में, जहां आज धर्म की सबसे अधिक आवश्यकता है, विलासिता और भोग की पराकाष्ठता से जहां पर समाज पिस गया है **. . . तू ही तो स्थापित कर सकेगा उनके मध्य में चेतना, धर्म और आध्यात्मिकता की स्थितियों का पुनः संचार . . . बुला लूंगा तुझे मैं तेरा कार्य पूर्ण होते ही और तब तक तेरा यह शरीर मेरे पास ही, मेरी इसी तपःस्थली में ज्यों का त्यों सुरक्षित रहेगा।"** . . . यह एक नवीन रहस्य आज खुला आत्मानंद जी के समक्ष!

. . . मेरा शरीर? क्या यह विनष्ट नहीं होगा? फिर मेरा नवीन जन्म कैसे संभव होगा? क्या विचार है पूज्य गुरुदेव के मन में? गुत्थी में उलझ गए आत्मानंद जी।

. . . तुझे कुछ नहीं करना है। मेरे सामने इसी कुश के आसन पर चुपचाप लेट जा, आगे की क्रिया मुझको ही सम्पन्न करने दे और तेरे जन्म से लेकर तेरे पुनरागमन तक, एक-एक पल का हिसाब सुरक्षित रहेगा मेरे पास, तेरी इसी देह की तरह . . . और तू भी अपने नवीन जन्म में जाकर भूलेगा नहीं अपने इस जन्म को . . . दो जीवन जीने होंगे तुझको, आंतरिक रूप से मेरे प्रिय आत्मानंद का और सांसारिक रूप से जो भी तेरे माता-पिता तुझे नाम दें . . .

परकाया प्रवेश की एक ऐसी घटना जिसने झकझोर दिया पूरे बंगाल प्रांत को. . .

अन्यथा क्या इतनी कम आयु में . . .

एक महापुरुष की जीवन- रहस्य गाथा

आत्मानन्द आज्ञानुसार लेट गए कुश के आसन पर, प्राणों को उर्ध्वगति देते हुए और सहस्रार में स्थापित कर, अपने को संज्ञाशून्य करते हुए . . . कानों में पड़ता हुआ पूज्यपाद गुरुदेव का मंत्र-सिक्त स्वर - नाभि मंडल को स्पर्शित करते हुए, सहस्रार पर अंगूठे से हल्का स्पर्श देते हुए और . . . और एक क्षण में बादल से भी हल्का होकर अस्तित्व तैर गया ब्रह्माण्ड की अनन्त गहराईयों में . . . न कोई संज्ञा, न चेतना, सर्वत्र आह्लाद ही आह्लाद, गुंजरण ही गुंजरण . . . जैसे न कभी आदि रहा हो न अंत, जो कुछ देखा, सुना, पाया वह सब स्वप्न था . . . और तभी अपने को एक धड़कते पिंड में आवद्ध पाया आत्मानंद ने . . . नवीन मां का गर्भ जिसमें कुछ माह रहना था उन्हें और पुनः चेतना शून्य हो गए आत्मानंद . . .

देबू . . . यही नाम दिया उनके माता-पिता ने, उनके चेहरे पर छाई हुई दिव्यता को देखकर . . . "

अजीब बालक है, मैं तो परेशान हो गई इससे, फिर कहीं छिपा होगा किसी अंधेरे कोने में, पता नहीं क्या सोचता रहता है, कौन सी जिम्मेदारी आ पड़ी है इस पर, खेलता क्यों नहीं बाहर जाकर अपने साथियों के साथ" . . . स्नेह और मातृत्व की मिली-जुली खीझ के साथ बड़बड़ाती हुई मां ढूंढ रही थी उसको पूरे घर में

. . . लेकिन देबू तो पहले ही निकलकर चला गया था नदी किनारे के उस विशाल वट वृक्ष के नीचे, जिसकी छाया के नीचे उसे कोई खोज न पाए . . . अपने स्वरूप को याद करता हुआ, अपने उसी पुराने जीवन में लीन होने के लिए . . .

होऽऽऽ . . . आज पूरी टोली पहले से ही इंतजार में थी देबू के, अब तक उन्हें भी ज्ञात हो गया था देबू का यह गुप्त स्थान और कुछ खीझते हुए और कुछ मुस्कराते हुए सम्मिलित हो गया वह भी उनके ही खेल में. . .

एक अलौकिक सी लगती किंतु एक सत्य घटना, जो बंगाल के एक विख्यात महापुरुष के जीवन से सम्बंधित है और यदि *ऐसा दिव्य व्यक्तित्व न होता तो कैसे वह इतनी कम आयु में छा जाता पूरे देश और समाज पर, परकाया प्रवेश की घटना थी यह, जो इस युग में ही घटित हुई है, सैकड़ों लोगों को अपनी दिव्यता से अभिभूत करते हुए, एक चमत्कारिक जीवन और जीवन शैली प्रस्तुत करती हुई।*

आगे की कथा तो सभी को ज्ञात

(शेष पृष्ठ ६१ पर)

तांत्रोक्त महागणपति साधना

हस्तीन्द्राननमिन्दु - चूडमरुणच्छायं त्रिनेत्रं रसा- दाश्लिष्टं
प्रियया-स- पद्म - करया साङ्कस्थया संङ्गतम्
गण्ड-पाली - गलद्- दान- पूर-लालस-मानसान्
द्विरेफान् कर्ण - तालभ्यां वारयन्तं मुहु मुहुः ।।

शास्त्रों में जिस प्रकार से गणपति के स्वरूप का वर्णन मिलता है उसके अनुसार वे अत्यंत गौरवर्ण के, सौन्दर्यशाली, मुक्तक आदि आभूषणों से परिपूर्ण, पद्मप्रिया से सेवित, शिशु के समान भोली आभा वाले तथा अपने हाथों में पद्म, अंकुश, रत्न-कुंभ धारण करने वाले हैं। अधिकांशतः उनके मंगलमय स्वरूप के वर्णन इसी प्रकार से मिलते हैं। वीणा वादक के रूप में तथा नृत्यरत गणपति के भी उल्लेख, चित्रण तथा मूर्तियां प्राप्त हुई हैं, जिनसे उनकी कई कलाओं का ज्ञान होता है। ऋद्धि व सिद्धि उनकी दो पत्नियां है तथा क्षेम और लाभ दो पुत्र। जिस प्रकार भगवान शिव का जीवन सम्पूर्णता और और विरोधाभासों के भी मध्य साम्य को प्रदर्शित करने वाला है, उसी प्रकार भगवान गणपति भी अपने - आप में बत्तीस कलाओं से युक्त सद्गृहस्थ व योगमय दोनों ही जीवन प्रस्तुत करते हैं। इसी कारणवश आध्यात्मिक एवं भौतिक दोनों ही प्रकार के भक्त उन्हें प्रथम पूज्य व वंदनीय मानते हैं।

आध्यात्मिक रूप से गणपति को ओंकार का ही मूल रूप माना गया है। **श्री गाणपत्यर्थवशीर्ष उपनिषद** में इसका रहस्य वर्णित है कि किस प्रकार से ओंकार ध्वनि का ही

(शेष पृष्ठ ६२ पर)

अथर्ववेद में वर्णित तांत्रोक्त गुरु साधना

समस्त दोषों का निवारण होता है अथर्ववेद में वर्णित तंत्र की इस गुरु साधना से। पत्रिका में समय-समय पर गुरु साधना से सम्बन्धित लेख एवं रहस्य प्रकाशित किए जाते रहे हैं, जिनका सजग पाठकों ने उपयोग कर यह अनुभव किया कि वास्तव में अनेक उपायों को अपनाने की अपेक्षा यदि केवल गुरु साधना ही सम्पन्न कर ली जाए तो जीवन में भोग व मोक्ष दोनों सहज ही प्राप्त हो जाते हैं।

प्रस्तुत है अथर्ववेद में वर्णित ऐसी ही एक गोपनीय तांत्रोक्त गुरु साधना . . .

गुरु शब्द जितना पावन है उतना ही प्राचीन भी। प्रारम्भिक साहित्य से ही श्री गुरु सम्बन्धित उल्लेख एवं सम्बन्धित दुर्लभ साधनाएं मिलनी प्रारम्भ हो जाती हैं। हमारे प्रारम्भिक ग्रंथ वेदों में भी श्री गुरु से सम्बन्धित विस्तृत विवरण प्राप्त होते हैं। **भावनोपनिषद्** में स्पष्ट उल्लेख है -

श्रीगुरुः सर्वकारणभूता शक्तिः तेन नवरन्ध्ररूपो देहः।।

अर्थात् समस्त क्रियाओं की कारणभूत शक्ति श्री गुरुदेव ही हैं और उनके साथ नवरंध्र रूप देह अभिन्न है।

तंत्र शास्त्र में गुरु को तीन स्वरूपों में माना गया है। **१. दिव्य २. सिद्ध ३. मानव।** मनुष्य के शरीर में स्थित नवरंध्र श्री गुरुदेव के इन्हीं तीन रूपों से संबंधित हैं, अर्थात् मनुष्य की देह में स्थित नवरंध्र ही श्रीगुरु देव के दिव्यौध, सिद्धौध एवं मानवौध रूप में स्थित हैं। इसका और सूक्ष्म विवेचन इस प्रकार है कि वास्तव में श्री गुरुदेव प्रत्येक जीव के शरीर में अव्यक्त रूप में स्थित हैं ही, आवश्यकता है तो केवल सही साधना के द्वारा उनको जाग्रत कर अपने जीवन को सभी प्रकार से आध्यात्मिक उन्नति की

ओर अग्रसर कर लेने की।

प्रत्येक साधना के लिए कुछ न कुछ दिवस निर्धारित होते ही हैं और ऐसे ही दिवसों में प्रमुख दिवस है पाप मोचन दिवस जो इस वर्ष १८.०२.९४ को पड़ रहा है। मानव अपने जीवन में बहुत प्रयास करता है भौतिक रूप से कोई कोर कसर बाकी नहीं रहने देता, लेकिन पूर्व जन्म कृत दोष और वर्तमान जीवन के दोष उसे उन्नति नहीं करने देते। इन सभी दोषों और पापों को समाप्त करने के लिए गुरु साधना के अतिरिक्त कोई अन्य साधना है ही नहीं। क्योंकि जिस ब्रह्मतेज के अंश के द्वारा व्यक्ति का समस्त जीवन प्रकाशित हो सकता है, समस्त पापों की कालिमा धुल सकती है वह ब्रह्मतेज का साकार पुंज केवल श्री गुरुदेव के माध्यम से ही व्यक्ति के जीवन में स्पष्ट होता है और फिर व्यक्ति सहज ही वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है, जो उसके जीवन में भी हो। एक बात निश्चित है कि बिना आध्यात्मिक उन्नति के, भौतिक उन्नति की कल्पना करना ही व्यर्थ है। जब तक हमारा यह आध्यात्मिक जीवन नहीं संभलेगा तब तक भौतिक रूप से श्रेष्ठता प्राप्त करने की बात ही बेमानी है। इन सभी तथ्यों का निचोड़ है अथर्ववेद में वर्णित तंत्र की यह दुर्लभ गुरु साधना।

तांत्रिक ग्रंथों में गुरु देव के नौ रूप वर्णित किए गए हैं- **१. श्री उन्मनाकाशानंदनाथ, २. श्री समनाकाशानंदनाथ, ३. श्री व्यापकानंद नाथ, ४. श्री शक्त्याकाशानंदनाथ, ५.श्रीध्वन्याकाशानंदनाथ, ६. श्री ध्वनिमात्राकाशानंदनाथ, ७. श्री अनाहताकाशानंदनाथ, ८. श्री बिन्द्वाकाशानंदनाथ और ९. श्री इन्द्वाकाशानंदनाथ**। इनमें से प्रथम तीन श्री गुरुदेव के दिव्यौघ स्वरूप, द्वितीय तीन सिद्धौघ स्वरूप एवं अंतिम तीन मानवौघ स्वरूप के रूप में वर्णित किए गए हैं। इन्हीं नौ स्वरूपों की साधना से सम्पूर्ण रूप से श्री गुरुदेव का प्रकटीकरण एवं उनकी दिव्य व अलौकिक शक्तियों का प्रादुर्भाव अपने जीवन में किया जा सकता है। यह हमारा सौभाग्य है कि हमें वर्ष के प्रारम्भ में ही एक ऐसा श्रेष्ठ अवसर मिल रहा है जबकि हम ऐसी अद्वितीय साधना सम्पन्न कर, केवल वर्ष को ही नहीं अपितु अपने सम्पूर्ण जीवन को सफल बना सकते हैं।

> **वेदों तथा उपनिषदों का सारभूत तथ्य ही है गुरु के साथ ''एक प्राणता'' और गुरु कृपा की प्राप्ति ही 'गुरु साधना' में सिद्धि प्रदायक है. . .**
>
> --हिमालय का सिद्ध योगी

श्री गुरु साधना जीवन की आधारभूत साधना है। तांत्रोक्त रूप से गुरु साधना करने के पश्चात् किसी अन्य साधना की आवश्यकता शेष रह ही नहीं जाती। गुरु साधना अपने आप में केवल एक सिद्धि नहीं, वरन स्वयं में ५१ सिद्धियों को समाहित किए एक सम्पूर्ण जीवन पद्धति है।

श्री गुरु साधना को इस पापमोचनी दिवस के दिन साधक को हर हालत में सम्पन्न कर, अपने आगामी जीवन के लिए एक श्रेष्ठ आधारशिला रखनी ही चाहिए। प्रातः उठकर अपने सामने सफेद वस्त्र बिछा कर, उस पर सफेद धोती पहन कर बैठें और ताम्र पत्र पर अंकित पूज्य गुरुदेव के चित्र युक्त गुरु यंत्र को स्थापित करें। इस विशेष यंत्र को अथर्ववेद के सूक्तों द्वारा प्राण-प्रतिष्ठित किया गया हो। उसमें जहां एक ओर मानव रूप में पूज्यगुरुदेव का चित्र अंकित होता है, वहीं सिद्ध रूप में गुरु यंत्र अंकित होता है एवं उनके संयुक्त प्रभाव से दिव्य स्वरूप अव्यक्त रूप से स्पष्ट होता है। यंत्र को तांबे के पात्र अथवा चावलों की ढेरी अथवा सुगन्धित पुष्प की पंखुड़ियों पर सम्मान पूर्वक स्थापित करें। इसके आगे एक रेशमी वस्त्र पर नवनाथ गुटिकाएं स्थापित करें। सामने घी का दीपक जला दें एवं वातावरण को सुगन्धित द्रव्यों धूप आदि से पवित्र कर तीन बार ॐकार ध्वनि कर अन्तः व बाह्य को पवित्र कर लें। हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं अमुक (अपना नाम), अमुक गोत्र का साधक पापमोचन दिवस के दिन अपने पूर्वजन्म कृत और इह जन्म कृत समस्त ज्ञात व अज्ञात दोषों की शांति के लिए और जीवन में नया अध्याय प्रारम्भ करने के लिए श्री गुरुदेव को साक्षीभूत रखते हुए यह महत्वपूर्ण तांत्रोक्त साधना सम्पन्न कर रहा हूं -- ऐसा कह कर जल भूमि पर छोड़ दें तथा यंत्र पर हाथ रख उसका अपने प्राणों से निम्न मंत्र के द्वारा संपर्क एवं सम्बन्ध स्थापित करें, जिससे श्री गुरुदेव की शक्तियां जीवन पर्यन्त प्राप्त होती रहें --

मंत्र

ॐ ह्रौं मम समस्त दोषान् निवारय ह्रौं फट्

इस मंत्र का २१ बार उच्चारण करें। उपरोक्त प्राण प्रतिष्ठाकरण एवं सम्पर्क के पश्चात् सामने जो नव

गुटिकाएं स्थापित की हैं, उनका केशर व चंदन से पूजन करें। और क्रम से उच्चारण करें।

ॐ श्री उन्मनाकाशानंदनाथ - जलं समर्पयामि
श्री समनाकाशानंदनाथ - गंगाजलं स्नानं समर्पयामि
व्यापकानंदनाथ - सिद्धयोगा जलं समर्पयामि
शक्त्याकाशानंदनाथ - चंदनं समर्पयामि
ध्वन्याकाशानंदनाथ - कुंकुमं समर्पयामि
ध्वनिमात्राकाशानंदनाथ - केशरं समर्पयामि
अनाहतकाशानंद नाथ - अष्टगन्धं समर्पयामि
विन्द्वाकाशानंदनाथ - अक्षतं समर्पयामि
द्वन्द्वाकाशानंदनाथ - सर्वोपचारार्थे समर्पयामि

उपरोक्त नवनाथ पूजन के उपरान्त पूज्यगुरुदेव का ध्यान करें-

द्विदल कमलमध्ये बद्धसंवित्समुद्रं
धृतशिवमयगात्रं साधकानुग्रहार्थम्
श्रुतिशिरसि विभान्तं बोधमार्तण्डमूर्तिम्
शमिततिमिरशोकं श्रीगुरुं भावयामि
हृदंबुजे - कर्णिकमध्यसंस्थितं
सिंहासने संस्थित दिव्यमूर्तिम्।
ध्यायेद् गुरुं चंद्रशिलाप्रकाशं
चित्पुस्तकाभीष्टवरं दधानम्।।
श्री गुरुवे नमः ध्यानं समर्पयामि।।

उपरोक्त ध्यान के पश्चात् गुरु यंत्र का पूजन गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य और ताम्बूल इन छः उपचारों से करें तथा पुनः गुरुदेव से मानसिक रूप से प्रार्थना करते हुए निम्न मूल मंत्र का जप स्फटिक अथवा रुद्राक्ष की माला से करें --

मंत्र -

ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

उपरोक्त मंत्र का इस दिवस पर विधान ५१ माला मंत्र जप करने का है और जो साधक एक बार में मंत्र जप न कर सके वे २१ माला के बाद विश्राम ले सकते हैं। मंत्र जप के उपरान्त एक आचमनी में जल लेकर पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में अर्पित करने की भावना रखते हुए निम्न मंत्र जप के साथ भूमि पर छोड़ दे।

मंत्र

ॐ गुह्यातिगुह्य गोप्ता त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपं। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत् प्रसादान्महेश्वर।।

तंत्र के विधान में उपरोक्त मंत्र और यह पूजन अत्यन्त श्रेष्ठ और तुरंत फलदायक माना गया है। कई बार मंत्र जप के मध्य साधक को अपना शरीर ऐंठता हुआ लग सकता है। मन में विरोधी विचार आ सकते हैं, झुझंलाहट और एकदम से पूजन छोड़कर उठ जाने की भावन मन में आने लगती है किंतु भयभीत होने की अथवा विचलित होने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि शरीर स्थित पाप व दोष जब निकलेंगे तब वे विरोध तो प्रकट करेंगे ही। सम्पूर्ण पूजन के उपरांत कम से कम पांच माला मूल गुरुमंत्र का भी जप अवश्य करें।

।। ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः।।

अंत में हाथ जोड़कर कृतज्ञता ज्ञापित करें कि मुझे पूज्य गुरुदेव की कृपा से ही एक ऐसा श्रेष्ठ प्रयोग प्राप्त हुआ तथा यह सम्पूर्ण पूजन उन्हीं को समर्पित है --

देवनाथ गुरोस्वामिन्
देशिक स्वात्म नायकम्
त्राहि त्राहि कृपासिन्धु
पूजां पूर्णतराम् कुरु
अनयापूजया श्री गुरुः प्रीयन्ताम्
ॐ तत्सत् ब्रह्मार्पणम् अस्तु।

यह कह कर एक आचमनी जल अथवा श्रेष्ठ पुष्प, पूजन के समक्ष प्रदान करें तथा गुरु आरती सम्पन्न कर इस दिन का विशेष पूजन सफल समझें।

यह साधना केवल पूर्वजन्म कृत एवं इह जन्म कृत दोषों को समाप्त करने वाली साधना ही नहीं वरन जीवन के तीन प्रमुख ऋणों, मातृ ऋण, पितृ ऋण एवं गुरु ऋण को समाप्त करने की क्रिया भी है। इन ऋणों के हट जाने के उपरान्त व्यक्ति सहज रूप से अपने आप को दबावों से मुक्त समझता है। आज के युग में व्यक्ति जिस तरह तनाव और अनावश्यक रूप से चिंतित होने की बात कहता है अथवा जिनमें उलझ कर वह भटकता रहता है, इसका मूल कारण ये ऋण ही होते हैं। जिनका उपचार औषधियां या मनोवैज्ञानिक उपाय नहीं अपितु साधना की ऐसी श्रेष्ठ पद्धतियां ही होती हैं।

दिनांक-१०.०३.९४

वैद्यनाथ प्रयोग

आनंद के और आत्मलीनता के एक ही देव हैं 'भगवान शिव' जिनका न आदि न अंत . . . जो सहज ही अपना सब कुछ भक्तों पर एक ही क्षण में लुटा देने में तत्पर हैं. . .

ऐसे ही उदार देव भगवान शिव का सर्वाधिक प्रिय दिवस है महाशिवरात्रि। उनकी अनेक कृपाओं को एक ही रात्रि में प्राप्त कर लेने के अद्भुत क्षण. . .

भगवान शिव की क्रीड़ा जीवन में प्रतिक्षण गतिशील रहती ही है, सृष्टि, स्थिति, संहार, लय और अनुग्रह - ये पांच क्रियाएं हैं उनकी, और इन्हीं पांच रूपों के आधार पर उनके पांच रूप अथवा पंच ब्रह्म निर्धारित किए गए हैं- ईशान, तत्पुरुष, अघोर, वामदेव और सद्योजात। इन्हें ही पांच प्रेतों के नाम से भी पुकारा गया है जिन पर पराशक्ति विद्यमान होती है। स्पष्ट है कि भगवान शिव की कृपा के बिना जीवन में न तो निर्माण संभव है और न विध्वंस। विध्वंस का अर्थ जीवन के विनाश से नहीं वरन् उन स्थितियों के समापन से है जो जीवन में बाधा बनकर विष घोल रही हों। तभी तो भगवान शिव का एक नाम हर भी है। **हर अर्थात् जो जीवन में हरण कर सके- जीवन के रोग, शोक, दुःख, दारिद्रय और पीड़ा का।**

भगवान शिव तो अनेक रूप में पूज्य व उपास्य रहे हैं, भारतीय जन मानस में। आर्य सभ्यता के आगमन से पूर्व पशुपति रूप और लिंग रूप में पूज्यनीय देव होने का प्रमाण मिलना इस बात को सूचित करता है कि मानव बहुत पहले से ही भगवान शिव के बहुआयामी व्यक्तित्व से परिचित हो चुका था, वह जान चुका था कि वे ही उत्पत्ति के कारण ही समस्त वन औषधियों के परिपालक देव हैं और वे ही समस्त प्रकारेण जीवन में आनंद के दाता हैं। आनंद की स्थिति एक निरपेक्ष स्थिति नहीं है, आनंद का उद्भव तभी सम्भव होता है जब व्यक्ति सभी प्रकार से स्वस्थ हो व जीवन की स्थितियों का उपयोग करने में समर्थ हो। स्वस्थ शरीर और रोग मुक्त जीवन वास्तव में प्रभु की ओर से मिला मानव को अनुपम वरदान होता है, तभी तो भगवान शिव का एक नाम वैद्यनाथ भी कहा गया है। वे ही समस्त रोगों के हन्ता हैं। कैसा भी गम्भीर और असाध्य रोग हो उसकी समाप्ति केवल वैद्यनाथ प्रयोग से ही सम्भव हो सकती है। वैद्यनाथ का अर्थ है भगवान शिव का आह्वान अपने जीवन में एक विशेष रूप से करना, वरदायक तो वे

प्रत्येक स्वरूप में हैं किंतु वैद्यनाथ रूप की विशिष्टता में साक्षात् प्रत्येक रोग का शमन करने वाले बन जाते हैं और फिर शिवरात्रि तो उनके आह्लाद का दिवस है, चैतन्य रात्रियों में से एक प्रमुख रात्रि है, नवरात्रि और दीपावली की रात्रि के समान ही तांत्रोक्त साधना का सिद्ध मुहूर्त है, भगवान शिव की कृपा को तीव्रतम और सफल ढंग से जीवन में उतार लेने का अवसर है।

रोग और शोक - ये दो स्थितियां होती हैं मानव के जीवन में। रोग जहां शरीर से सम्बंधित होता है फिर वहीं शोक मानसिक पीड़ा की स्थिति होती है और इन दोनों ही स्थितियों का निराकरण सहज सम्भव हो जाता है क्योंकि भगवान शिव का स्वरूप अपने - आप में अद्भुत, तीक्ष्ण और विध्वंसक है। इसी कारणवश सामान्य पद्धति से किए जाने वाले उपायों की अपेक्षा साधना को सिद्ध तांत्रोक्त रूप से प्रयोग में लाएं तो सहज ही जीवन में अनुकूल स्थितियों की प्राप्ति हो जाती है।

वैद्यनाथ प्रयोग तो एक ऐसा प्रयोग है जिसे कोई सामान्य स्वस्थ साधक भी अपने जीवन में सम्पन्न कर लाभान्वित हो सकता है। रोग मुक्ति का अर्थ केवल रुग्ण शरीर के इलाज तक ही सीमित नहीं होता। इसका तो अर्थ होता है कि व्यक्ति भावी दृष्टियों से भी पूर्ण रूपेण निरापद और उल्लसित जीवन जी सके। इसी से जो सूक्ष्म बुद्धि साधक होते हैं वे जीवन में सामान्य स्वस्थ होने पर भी ऐसे रचनात्मक प्रयोगों को प्राप्त होते ही अपना लेते हैं और फिर निश्चिंतता से साधना में संलग्न होकर जीवन के सभी भौतिक और आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करने के अधिकारी बन जाते हैं।

भगवान शिव का ही एक रूप मृत्युंजय भी है और मृत्युंजय प्रयोग की श्रेष्ठता से कोई भी अनभिज्ञ नहीं लेकिन मृत्युंजय प्रयोग जहां मरणांतक दशाओं में लाभदायक सिद्ध होता है, वहीं वैद्यनाथ प्रयोग एक ऐसा प्रयोग है, जिससे व्यक्ति सामान्य जीवन में भी सफल और स्वस्थ हो सकता है।

कोई भी प्रयोग जीवन में कभी भी किया ज़ा सकता है लेकिन सिद्ध अवसर पर उनको करने से उनकी सफलता सहस्र गुणा अधिक बढ़ जाती है क्योंकि उस दिन प्रकृति भी उनके अनुकूल होती है। महाशिवरात्रि के अवसर पर किया जाने वाला यह प्रयोग एक ऐसा ही उदाहरण है। यद्यपि साधक इसको वर्ष में कभी भी कर सकता है, फिर भी इस दिन इस प्रयोग को सम्पन्न कर लेता है तो निश्चित रूप से अपने - आप को सुखी व सौभाग्यशाली बनाने की दशा में कई कदम आगे बढ़ जाता है।

> रोग और शोक. . . यही हैं वे दो स्थितियां जो किसी के भी जीवन को घुन की तरह बरबाद कर सकती हैं. . .
>
> किन्तु भगवान शिव तो प्रत्येक स्थिति में वैद्यनाथ हैं ही . . .

पूजन विधान

इस महाशिव रात्रि को दस बजे के पश्चात् इस साधना में प्रवृत हों। आपको शिव पूजन की जो भी विधि आती हो उस ढंग से संक्षिप्त शिव पूजन करें और यदि शिव पूजन के स्थान पर गुरु-पूजन भी सम्पन्न करें तो वह भी इसी प्रकार श्रेष्ठ माना गया है। सामान्य शिव पूजन के साथ ही गुरु मंत्र की एक माला मंत्र जप अवश्य करें और आपके पास जो भी शिवलिंग हो उसे अवश्य स्थापित करें। सामने ताम्र पत्र पर अंकित **वैद्यनाथ यंत्र** स्थापित करें (जो मंत्र सिद्ध और पंच स्वरूप युक्त हो) फिर मूल साधना में प्रवृत्त हों।

इसके उपरान्त ऐसी **काली हकीक माला** अथवा **मूंगे की माला** जो पहले कभी किसी अन्य साधना में न प्रयोग लाई गई हो, उसको भी प्राप्त कर लें तथा माला को यंत्र के ऊपर रख दें फिर निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करते हुए। **पांच ब्रह्म रुद्राक्ष** को **वैद्यनाथ यंत्र** पर चढ़ाएं।

मंत्र -

ॐ पूर्ण ऐश्वर्य देहि देहि शिवाय फट्

प्रत्येक रुद्राक्ष चढ़ाते समय मन ही मन उन स्थितियों अथवा अपने परिवार के उन सदस्यों का स्मरण करते रहें, जिन्हें आप सर्वथा रोग मुक्त करने के अभिलाषी हों। सभी रुद्राक्ष चढ़ाने के बाद श्रद्धायुक्त भाव से भगवान शिव को प्रणाम करें तथा यंत्र पर रखी माला उठाकर निम्न मंत्र की ११ माला मंत्र जप करें।

मंत्र

ॐ पराम्ब शिवाय नमः

इस महत्वपूर्ण मंत्र के जप के पश्चात् इस साधना का ही महत्वपूर्ण क्रम है कि एक ताम्रपात्र में अग्नि प्रज्वलित कर उपरोक्त मंत्र से काली मिर्च एवं राई को सरसों के तेल में मिलाकर १०८ आहुतियां दें। कुछ शास्त्रों के अनुसार राई के स्थान पर नीम की पत्तियां लिए जाने का भी उल्लेख है। १०८ आहुतियां देने के पश्चात् यंत्र व माला सहित सम्पूर्ण साधना सामग्री (गुरु यंत्र- चित्र व शिव साधना से सम्बंधित यंत्र छोड़कर) उसी रात्रि को जंगल में किसी पेड़ के नीचे रखवा दें अथवा किसी पवित्र सरोवर आदि में विसर्जित कर दें और घर लौटकर हाथ पैर धोकर पुनः संक्षिप्त गुरु पूजन व आरती कर यह प्रयोग सम्पन्न समझें।

एक अनोखी मूर्ति सौन्दर्य की . . . सौन्दर्य से भी अधिक मादकता और मन को लुभा लेने की कला अपने- आप में समाए सदैव षोडश वर्षीया बनी रहने वाली देवांगना की रूप गाथा . . . एक अप्रतिम सुंदरी की विजय यात्रा . . . जो समुद्र मंथन के पश्चात् एक रत्न के रूप में प्रगट होकर आज तक मंथन कर रही है सौन्दर्य के समुद्र में और उससे श्रेष्ठ दूसरा रत्न फिर उत्पन्न हो ही न सका, यही मत है देश के सभी सिद्ध साधकों का! सच ही तो है ऐसे रत्न क्या बार-बार गढ़े जाते हैं . . . नहीं, यह तो कभी-कभी प्रकृति के खजाने से अनायास प्राप्त हो जाने वाली वस्तु है और प्रकृति के इस खजाने को खोजने की क्रिया ही है 'उर्वशी साधना'।

रूप, रंग, यौवन और मादकता की तो कई झलकियां देखी होंगी प्रत्येक ने अपने जीवन में, लेकिन जो सौन्दर्य आंखों से लेकर दिल तक एक अक्स बनकर उतर जाए उसी का नाम है 'उर्वशी'। घने काले केश के बीच में खिलता हुआ छोटा सा मधुरता युक्त चेहरा और आंखों में भीत हिरणी की तरह सहमा हुआ भाव कि देखने वाला मुग्ध हो ही जाए या फिर सांचे में ढली हुई यौवन और सौन्दर्य की परिभाषा, खिलखिलाती हुई शिख से नख तक और उसे अतिरिक्त रूप से सुंदरता देता हुआ उसका श्रृंगार या श्रृंगार करने की मादक अदा। उर्वशी तो यौवन, मादकता, भोलापन श्रृंगार, सुरुचिप्रियता, कलात्मकता और प्रेम

सौन्दर्य की अद्वितीय साम्राज्ञी 'उर्वशी' जो युगों- युगों से सौन्दर्य की एक मात्र स्वामिनी बनी हुई है . . . प्रत्येक साधक के जीवन में एक चुनौती की तरह . . . क्योंकि बिना उर्वशी का साक्षात्कार किए सौन्दर्य का वास्तविक दर्शन ही कहां और कहां पूर्ण पौरुष की प्राप्ति. . .

. . . तभी तो उर्वशी साधना अन्य साधनाओं से भी अधिक चुनौती का विषय रही है।

की मिली-जुली धारा ही है। सरस व कल-कल छल-छल करके बहती हुई . . . उमंगों से भरे युवा साधक हों या साधना की उच्चता को प्राप्त कर चुके लेकिन तन से ढल गए प्रौढ़ साधक, सभी ने जब-जब अपने मन को एक नए यौवन से भरना चाहा है, तब उर्वशी से अधिक श्रेष्ठ नाम उनके मानस में कोई आया ही नहीं।

कारण केवल यही नहीं कि उर्वशी सबसे अधिक विख्यात है, सच्चाई यह है कि अपनी शैली और हावभाव के कारण, एक अप्सरा का जीता - जागता रूप होने के कारण और उससे भी अधिक अपनी श्रृंगार शैली के कारण उर्वशी का कोई मुकाबला नहीं . . . कहने को तो एक सौ आठ अप्सराएं और प्रत्येक साधक के मन अनुकूल कोई विशेष अप्सरा ही तालमेल बैठाती है लेकिन फिर भी उर्वशी की साधना करना तो जीवन का सौभाग्य है। सिद्ध साधकों के मध्य, बिना उर्वशी साधना के कोई भी व्यक्ति साधक माना ही नहीं जाता क्योंकि **उर्वशी के वरदायक प्रभाव से ही तो उसके रग-रग में तूफान मचल उठता है** और ऐसे ही मतवाले साधक, वास्तव में साधक की सही परिभाषा होते हैं।

. . . और फिर नृत्य की शैली! उर्वशी का दूसरा नाम नृत्य ही है तभी तो यह देवराज इन्द्र के देवसभा की सर्वश्रेष्ठ नृत्यांगना होने के कारण देवताओं व देवपुत्रों के स्पृहा की विषय - वस्तु रही है। एकजुट होकर देवगण भी इसके पीछे अपना देवत्व त्यागने को तत्पर हो चुके हैं . . . नृत्य केवल मुद्राओं से नही, इसकी तो एक-एक भाव - भंगिमा ही नृत्य की है . . . वार्तालाप करते हुए आंखों ही आंखों में हौले से मुस्करा देने की . . . ऊंगलियों की थिरकन से अपने अधूरे वाक्य को पूरा करने में या फिर . . . गजगामिनी मादक चाल से . . . जो पृथुल नितम्ब के कारण, नृत्य से भी अधिक मादक बनकर साधक के मन में हमेशा-हमेशा के लिए उतर जाती है और शरमाने की अदा तो कोई उर्वशी से सीखे . . .

उर्वशी के ऐसे ही रूप और सौन्दर्य का साक्षीभूत बना मैं। जब मैंने उर्वशी की वह गोपनीय क्रिया सम्पन्न की जो परम्परा से केवल और केवल सन्यासी शिष्यों को ही प्राप्त होती रही है . . . वास्तव में उर्वशी के रूप और सौन्दर्य का पूर्ण साक्षात् तो केवल सिद्ध सन्यासी ही कर सकते हैं। उसके प्रत्यक्षीकरण की यह विद्या तो केवल सन्यासी साधकों के मध्य ही प्रचलित रही है, क्योंकि गृहस्थ साधकों के मध्य रूप और यौवन का ऐसा उद्दाम वेग यदि प्रगट हो भी गया तो वे अपनी मनोभावनाओं का नियंत्रण कर ही नहीं सकते। इसी से साधना की एक विशेष स्थिति आ जाने पर ही **उर्वशी का यह प्रत्यक्षीकरण प्रयोग गुरु अपने किसी एक शिष्य को- -जिसे वे सुपात्र समझते थे प्रकट करते थे . . . क्योंकि देव लोक की यह सबसे सौन्दर्यशाली अप्सरा भला क्यों सहज प्रकट होने लग गई इस धरा के मानव के सामने।**

दैवयोग से जब मुझे एक **नागा सन्यासी** द्वारा इसका रहस्य कुछ माह तक उसके साथ रहने के बाद प्राप्त हुआ तो मैंने उचित समझा कि उसी के साहचर्य में रहकर इसको सिद्ध करके भी देख लूं। इससे जो भूलचूक हो, उसे उसके द्वारा समझ कर दूर कर लूं।

. . . आयु से प्रायः पचासी वर्ष का होते हुए भी वह नागा साधु जिस प्रकार हट्टा-कट्टा और वेगवान बना रहता था, इसका रहस्य वास्तव में यह उर्वशी साधना ही थी। बाल यद्यपि श्वेत हो गए थे, लेकिन सारे चेहरे

(शेष पृष्ठ ६८ पर)

तंत्र द्वारा आज भी मूठ फेंकी जाती है

बम्बई के श्री भगवत प्रसाद गुलगटिया, जिनका भरापूरा परिवार और अभी हाल में ही घर में आई नवविवाहिता वधू... सारे परिवार में छाया आमोद - प्रमोद और मंगल का वातावरण और विदा होते हुए रिश्तेदार, लेकिन अचानक एक चीख . . . ऊपर जाकर नववधू के कक्ष में देखा तो उसका सारा चेहरा नीला पड़ गया है, दांत पर दांत कस कर भिंच गए हैं और मुंह से झाग बह रहा है . . . सारे परिवार के साथ श्री भगवत प्रसाद जी के विवाहित पुत्र ज्योति का चेहरा भी सफेद पड़ गया . . . शायद मिर्गी का रोग है वधू को . . . फुसफुसाहट फैल गई आए हुए रिश्तेदारों और संबंधियों के मध्य, माता-पिता का चेहरा भी उतर गया . . . देखते ही देखते सभी के मध्य चर्चा फैल गई कि भारी दहेज के लालच में एक रोगिणी को ब्याह कर ले आए हैं भगवत प्रसाद। लेकिन उन्हें धन की क्या कमी? फिर भी क्या लोगों के मुंह पर ताले लगाए जा सकते हैं. . .

"जहां तंत्र का सदुपयोग हुआ, वहीं दुरुपयोग भी किया गया है। तंत्र द्वारा ऐसे जहरीले प्रयोग भी किए गए जो घातक होते हैं और जीवित है, यह मैली विद्या हजारों वर्षों से कुछ दुष्ट प्रकृति के व्यक्तियों का संरक्षण प्राप्त करके. . .

. . . जीते जी स्वस्थ आदमी को मार डालने अथवा मरणान्तक पीड़ा पहुंचाने वाली यह घातक क्रिया जिसका रहस्य आज भी समझ नहीं आता. . . "

रायपुर के इंजीनियर सातोलकर जी का जवान बेटा अपना परीक्षाफल लेने कालेज गया और घर आया, अच्छे नम्बरों से उसने डिग्री पाई थी। घर आकर बैठा और देखते ही देखते शरीर पर नीले चकत्ते उभरने लगे और जब तक डाक्टर को बुलाएं तब तक जवान बेटा मृत्यु का ग्रास बन चुका था।

बद्रीप्रसाद न किसी से दुश्मनी रखते थे और न ही मित्रता। घर में जवान बेटी - बेटा थे और अपनी नौकरी में ही मगन रहते थे। एक संध्या को लड़की का शरीर अचानक ऐंठने लगा और उसके बाद आंखें लाल हो गईं और वह मदहोशी जैसी स्थिति में उठकर बैठ गई तथा बिना बात ही जोर-जोर से अट्टहास करने लगी। ऐसी विचित्र एवं विवश हंसी के कारण बद्री प्रसाद डर गए। डाक्टरों को बुलाया तो उन्होंने नींद का इंजेक्शन दे दिया। लड़की दूसरे दिन नींद से उठी तो

ऐसा लगा कि जैसे कुछ हुआ ही न था, लेकिन १५ दिन बीतते-बीतते फिर यही घटना, ऐसा लगता था मानों वह अपने आपे में ही न हो . . . धीरे-धीरे उसका स्वास्थ्य गिरने लगा, जगह-जगह इलाज करवाया लेकिन कोई फल नहीं।

घटनाएं एक नहीं अनेक हैं, किसी के घर में अनायास कपड़ों में आग लग जाती है, किसी के घर में कोई जवान दूध देती गाय अचानक समाप्त हो जाती है तो किसी को अपने घर में हर समय बदबू ही व्याप्त दिखती है।

बिलासपुर के एक वकील की पत्नी. . . वकील साहब नास्तिक स्वभाव के लेकिन पत्नी की रहस्यमय बीमारी से दुःखी . . .पत्नी को हर समय अपने शरीर पर गंदगी का अनुभव होता, दिन में पच्चीस-तीस बार नहाती और यदि उसे पति भी स्पर्श कर देता तो उग्र रूप धारण कर लेती। हर समय आंखों में शंका का, डर का भाव ही रहता।

मूट है क्या --

आखिर ये सब घटनाएं क्या है?

यह है तंत्र का सबसे भयानक और प्राणघातक प्रयोग . . . मूठ! तंत्र की ऐसी मैली प्रक्रिया, ऐसे जटिल प्रयोग जिससे आदमी तड़प- तड़प कर पीड़ा भुगतते हुए कष्ट पाता है और इनके पीछे कोई न कोई विशेष कारण अवश्य रहता है।

८० से ६० प्रतिशत तक की स्थितियों में मूठ से प्रभावित व्यक्ति जीवित बच ही नहीं सकता। राह चलते हुए चक्कर खाकर गिर जाना, देखते ही देखते आंखें पलट जाना, चेहरा सफेद पड़ जाना और सबसे बड़ी बात बांह पर या किसी अंग पर सिंदूर का बना त्रिशूल जैसा चिह्न उभर आना . . . यही अचूक पहचान है मूठ से प्रभावित व्यक्ति की। मूठ विद्या के सिद्ध जानकार ऐसे ही लक्षणों से सहज ही पहचाने जाते हैं कि इस व्यक्ति पर मूठ का प्रयोग हुआ है और यदि वह स्वयं भी सशक्त तांत्रिक हुआ तो मूठ को लौटा भी सकता है . . . कहते हैं लौटी हुई मूठ फिर उसी तांत्रिक के प्राणों के लिए घातक बन जाती है, जिसने उसे भेजा हो। काली विद्या के नाम से जानी जाती है, मारण की यह घृणित शैली।

मूठ. . . इस काली विद्या का निराकरण सम्भव है। यदि कोई तंत्र का विशेष ज्ञाता मूठ को दुगुने प्रहार के साथ लौटा दे. . . फिर हो जाता है उस व्यक्ति का सर्वनाश जिसने करवाया हो मूठ का प्रयोग . . .

आज के इस सभ्य समाज में भी धड़ल्ले से लोग इसका प्रयोग अपने विरोधियों या व्यवसाय में प्रतिद्वन्दिता रखने वालों पर करते व करवाते हैं . . . काली उड़द के कुछ दाने जलती चिता पर रखकर सिद्ध की जाती है यह विद्या, कुछ दाने तो जल जाते हैंऔर कुछ खिल जाते हैं . . . खिले हुए यही दाने बंदूक और तोप के गोलों से भी अधिक विध्वंसकारी सिद्ध होते हैं। **गोली तो व्यक्ति का प्राण एक ही बार में हर लेती है लेकिन उड़द के ये काले दाने व्यक्ति को तड़पा - तड़पा कर मृत्यु देते हैं।** और किसी पर भी संदेह की उंगली उठाई ही नहीं जा सकती . . . वही जान सकते हैं इसके दुष्प्रभाव जो कभी किसी के ईर्ष्या या घृणा के पात्र बने हों।

मूठ का प्रतिरूप कलवा प्रयोग

इसी काली विद्या का एक और रुप है जिसे कलवा प्रयोग कहा जाता है।

उड़द के आटे को लेकर एक पुतला बनाकर, उसे सिंदूर में रंग, कुछ विशेष मंत्रों के साथ चैतन्य कर और यदि शत्रु का कोई पहिना हुआ कपड़ा मिल जाए तो उसमें लपेट, अंग - अंग में सुईयां चुभोते जाते हैं, जिससे विरोधी व्यक्ति के उस - उस अंग में असहनीय पीड़ा आरम्भ हो जाती है और डाक्टर इसका उपाय जान नहीं पाते। कुछ ही दिन में व्यक्ति तड़प-तड़प कर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

कई लोग ऐसी घटनाओं को अवास्तविक अथवा मजाक में टाल देते हैं क्योंकि वर्तमान युग में केवल बुद्धि की ही बात मानी जाती है, लेकिन मंत्र की यह प्रक्रिया बुद्धि ज्ञान से परे है, क्योंकि इसमें मुख्य रूप से विद्वेषण एवं मारण के उन विशेष मंत्रों का प्रयोग, विशेष तंत्र विधि से किया जाता है। ऐसा अक्सर देखा गया है कि कई व्यक्ति अपने घर किसी तांत्रिक को बुलाते हैं और अपने किसी शत्रु पर अथवा किसी व्यक्ति विशेष से द्वेष होने पर ईर्ष्यावश यह प्रक्रिया सम्पन्न कराते हैं। वर्तमान जीवन में मित्र तो घट गए हैं और शत्रु बढ़ गए हैं। व्यापारिक दुश्मनी के अलावा आपके रिश्तेदार अथवा पड़ोसी भी जो कि आप की उन्नति नहीं देख सकते हैं, वे भी ऐसा प्रयोग करा सकते हैं। तंत्र विद्या के जो विज्ञ होते हैं अर्थात् सिद्धहस्त होते हैं वे कभी भी बुरी भावना से युक्त होकर इसका प्रयोग नहीं करते। लेकिन कई तांत्रिक ऐसे भी होते हैं जो इस विद्या के द्वारा ही अपना कार्य चलाते हैं।

सैडिस्ट तांत्रिक -

यह सत्य है कि जो इस विद्या का गलत कार्यों के लिए उपयोग करते हैं, उनका स्वयं का परिवार छिन्न-भिन्न होता जाता है। लेकिन ऐसे तांत्रिक भी हैं जो कि दूसरों को पीड़ा पहुंचाने में भी आनंद प्राप्त करते हैं। ऐसे **"सैडिस्ट तांत्रिक"** किसी की चिंता करते नहीं, क्योंकि न तो उनका कोई घर- बार होता है और न ही कोई स्थायी ठिकाना। ऐसे पीड़ाजनक प्रयोग करना उनकी आदत बन जाती है और ये किसी न किसी नशे के गुलाम भी होते ही हैं।

विस्तृत है मूठ का क्षेत्र -

इस विद्या का प्रचार-प्रसार केवल भारत - वर्ष के ग्रामीण क्षेत्रों में अथवा आदिवासी क्षेत्रों में ही नहीं है अपितु मॉरीशस, अफ्रीका, रेड इण्डियंस, ब्राजील, चीन इत्यादि में भी विशेष रूप से है।

आस्ट्रेलिया में तो मानव हड्डी या पशु हड्डी को लेकर उसे विशेष मंत्रों से वहां के आदिवासी अभिमंत्रित करते हैं जिस पर विरोधी की नजर पड़ते ही वह छटपटा कर मर जाता है। कई स्थानों पर तो ऐसे मृत्यु गीत गाए जाते हैं जो कि सामने वाले व्यक्ति को तड़पा कर समाप्त कर देते हैं।

सुलभ है मूठ से सुरक्षा -

मूठ का कुप्रभाव झेलने में कौन व्यक्ति कितना सफल रहता है, यह व्यक्ति विशेष पर निर्भर करता है। इसके अतिरिक्त यदि उचित समय पर कोई उपाय कर लिया जाए तो जिस व्यक्ति ने तंत्र की क्रिया सम्पन्न की है अथवा जिसने करायी है, वह उसके पास दुगने प्रहार के साथ लौट आती है। मूठ के प्रभाव से रक्षा भी की जा सकती है और कुछ नियमित मांत्रिक साधनाओं द्वारा इसके दुष्प्रभाव से पूर्णरूप से रक्षा भी की जा सकती है।

मूठ : युग का अभिशाप

इस संबंध में मैंने पूज्य गुरुदेव से एक बार निवेदन किया कि ऐसी स्थिति में आम व्यक्ति क्या करे, तो उन्होंने कहा कि यह इस युग का अभिशाप है कि जो लोग तंत्र विद्या के बारे में थोड़ा-बहुत जान लेते हैं वे इसका प्रयोग मूठ, बंधन इत्यादि गलत क्रियाओं में करते हैं जबकि वे स्वयं नहीं जानते कि ऐसी क्रियाओं से बचने का क्या उपाय है, उन्होंने कहा -- जिस प्रकार आग लगाना तो सरल है, इसके लिए एक मात्र तीली की आवश्यकता पड़ती है, लेकिन आग भड़क जाने पर उसे बुझाना कठिन है, उसी प्रकार तांत्रोक्त क्रियाओं द्वारा मूठ, मारण, विद्वेषण आदि काली विद्या से बचने का उपाय अथवा घटित हो जाने पर उसके प्रभाव को निकाल देने की क्रिया उससे तीव्र एवं प्रबल क्रिया है , मूठ के प्रभाव को समाप्त करने के लिए विशेष तंत्र रक्षा कवच पर्याप्त है। योग्य गुरु अपने शिष्य को अपनी तपस्या के प्रभाव से, उसे अपनी शक्ति देकर भी बचा लेते हैं ।

सिद्धाश्रम के योगी

एक बार विशुद्धानन्द जी आश्रम में बैठे हुए थे। सामने काफी लोग उनकी बातें तन्मयता से सुन रहे थे। तभी अक्षय चन्द्र चट्टोपध्याय ने प्रश्न किया -- कुछ संकेत सिद्धाश्रम के बारे में करें क्योंकि उसके बारे में हम लोगों को बहुत कम जानकारी है। विशुद्धानन्द जी ने बातचीत में बताया यह संसार का श्रेष्ठ आश्रम है।

संसार का चाहे कितना ही ऊंचा योगी, साधु या सन्यासी हो उसे सामान्य रूप में सिद्धाश्रम में प्रवेश की अनुमति नहीं मिलती। जिसने अपना सहस्रार खोल दिया है जो यौगिक क्षेत्र में ऊंचा उठ गया है उसे ही अत्यन्त कठिनाईयों और परीक्षाओं के बाद ही इस आश्रम में प्रवेश की अनुमति मिल पाती है। जो इस आश्रम से सम्बन्धित हैं, वे योगियों में अग्रगण्य माने जाते हैं और पूरा संसार उनके प्रति नमन भाव रखता है। उनमें से कुछ लोगों को समय - समय पर संसार में भेजा जाता है, वे अत्यन्त उच्च कोटि के योगी होते हैं, उन्हें कड़े निर्देश होते हैं कि वे संसार में जाकर सामान्य गृहस्थ के रूप में रहें। सांसारिक सुख- दुख को सामान्य गृहस्थ की तरह भोगें और अपने - आप को सामान्य गृहस्थ बनाए रखें। किसी भी रूप में कितना ही अधिक उकसाने पर भी चमत्कार प्रदर्शन न तो करें और न तो दिखाएं क्योंकि उनको भेजने के पीछे विशेष हेतु होता है जिससे कि संसार में मंत्र और तंत्र के प्रति आस्था बनी रहे और यह विद्या सर्वथा लुप्त न हो जाए।

ऐसे योगी समाज में घुल - मिल कर रहते हैं और वे ही ऐसे अन्य व्यक्तित्वों को ढूंढ निकालते हैं। तेजस्विता, लोगों के प्रति अपनत्व, ज्ञान प्रदान करने की उत्सुकता आदि गुणों से उनकी पहचान होती है। ऐसे योगी दिन में सामान्य गृहस्थ की तरह या साधु की तरह रहते हैं परन्तु रात्रि में उनका सम्पर्क बराबर सिद्धाश्रम से रहता है और सूक्ष्म शरीर से वे वहां आते - जाते हैं। एक निश्चित अवधि के बाद उन्हें पुनः सिद्धाश्रम में तपस्या करने के लिए या किसी कार्यवश बुला लिया जाता है, उस समय वे एक क्षण के लिए भी हिचकिचाहट किए बिना अपने गन्तव्य की ओर बढ़ जाते हैं क्योंकि ऊपर से गृहस्थ दिखाई देते हुए भी वे अन्दर से पूर्णतः निस्पृह होते हैं। वस्तुतः ऐसे योगियों के बाह्य रूप को भेदकर उनके आन्तरिक व्यक्तित्व और विराटता के दर्शन ही सर्वोच्चता मानी जाती है। ऐसे योगियों को पहचानना और उनसे कुछ प्राप्त कर लेना ही जीवन का पुण्योदय माना जाता है।

-- भुवन चंद चट्टोपाध्याय

लक्ष्मी साधना से
धन-सम्पत्ति, यश, कीर्ति, समृद्धि की प्राप्ति

निश्चय ही आप में से प्रत्येक व्यक्ति धनवान बन सकता है, प्रत्येक व्यक्ति यश व कीर्ति प्राप्त कर सकता है. . . एक सरल लक्ष्मी साधना के प्रयोग द्वारा, केवल ५ गुरुवारों में ही सारी मनोकामनाओं को पूर्ण किया जा सकता है।

अपनी साधनाओं की सफलता के बारे में बताने के पूर्व मैं अपना परिचय दे देना अधिक आवश्यक समझती हूं। मैं **भिलाई नगर (म० प्र०)** की एक समाज सेवी महिला हूं। सात वर्षों से **सृजनवाहिनी संस्था** के माध्यम से साक्षरता, कुष्ठ उन्मूलन, परिवार कल्याण, जन जागरण, दहेज़, नशा उन्मूलन के क्षेत्र में सक्रिय रूप से कार्य करने के कारण छत्तीसगढ़ क्षेत्र के व्यक्तियों के लिए मेरा नाम जाना-पहचाना है।

मैंने सर्वप्रथम अप्रैल ६३ में **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान** नामक पत्रिका पढ़ी और इससे इतनी प्रभावित हुई कि भिलाई के **सिद्धाश्रम साधक परिवार** की सदस्या बन गई। ७ मई को जब गुरुदेव म० प्र० की राजधानी भोपाल में **लक्ष्मी साधना (दीक्षा)** संपन्न कराने हेतु पधारे तो मैं उनसें मिलने लम्बी दूरी तय करके भोपाल पहुंच गई। भोपाल में गुरुदेव की मुझ पर विशेष कृपा हुई, उन्होंने चरण स्पर्श के समय मेरे सिर पर हाथ रखकर मुझे अपना आशीर्वाद दिया। मेरे हाथों में एक सेब फल रखकर उस पर अपना दाहिना हाथ रखा व मंत्रोच्चारण द्वारा मुझे अद्वितीय बनने का वरदान दिया। मुझे उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद काफी हल्का महसूस होने लगा।

घर आई तो आर्थिक तंगी के मारे सभी परेशान थे, क्योंकि मैंने गुरुदेव से मिलने के एक माह पूर्व ही नौकरी छोड़ दी थी, और पति समाजसेवी भुवनेश्वर भारतीय जी का पूरा वेतन मैं खर्च करके आ गई थी। कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि गृहस्थी की गाड़ी कैसे खींची जाए। तभी मेरे मन में एक प्रेरणा उठी कि मुझे लक्ष्मी साधना करनी चाहिए और मैंने गुरुवार से ही लक्ष्मी साधना करना शुरु कर दिया। मैंने पांच गुरुवार को साधना सम्पन्न करने का व्रत लिया।

पहले गुरुवार से ही असर देखने में आने लगा। मुझे यह आशा थी कि पांच गुरुवार पूर्ण होने पर ही कुछ संभव होगा, पर मैं उस समय आश्चर्य- चकित रह गई जब प्रत्येक हफ्ते कुछ न कुछ चमत्कार देखने को मिलने लगे।

पहले ही गुरुवार को ज्यों ही साधना करके उठी, मुझे खबर मिली कि मेरी मां दुर्ग से ग्वालियर जाने वाली है और मुझे शीघ्र रेलवे स्टेशन पर बुलाया है। मैं स्टेशन पर उनसे मुलाकात करने हेतु पहुंची, तो मां ने मुझे देखते ही मेरे हाथ में ५०० रु० दिए और बड़े स्नेह से बोली-- जा अपने लिए कुछ ले लेना।

दूसरे हफ्ते **लोकमत समाचार** पत्र नागपुर से २०० रु० का मनीआर्डर आया जिसमें लिखा था कि तीन - चार माह पूर्व आपकी जो रचनाएं हमारे यहां प्रकाशित हुई थीं उनका पारिश्रमिक भेज रहे हैं। तीन वर्ष पहले एक गांव की महिला ने मुझसे दो सौ रुपये उधार लिए थे, मैं उसे पूरी तरह भूल चुकी थी, वह भी हमारे घर गांव से दौ सौ

रुपये भेंट करने आ पहुंची।

तीसरे हफ्ते ठीक गुरुवार के दिन **आकाशवाणी रायपुर** से मेरा निमंत्रण पत्र आया, जिसमें लिखा था कि ११ जून को शाम ५ बजे युवावाणी कार्यक्रम में युवाओं की प्रेरणा हेतु हम आपके साक्षात्कार का प्रसारण करना चाहते हैं। आकाशवाणी केंद्र की ओर से नाम, यश, सम्मान के साथ २०१ रु० मुझे पुरूस्कार स्वरूप भी दिए गए।

चौथे हफ्ते दैनिक समाचार पत्र **''दैनिक भास्कर''** में मुझे बिना किसी प्रयास के घर बैठे-बैठे ही नौकरी मिल गई। आज मैं इसी संस्था में कार्यरत हूं।

पांचवें सप्ताह पी० एच० डी० के रजिस्ट्रेशन साक्षात्कार में मेरा चयन हो गया, और पटना बिहार की प्रसिद्ध पत्रिका **''आनंद''** के मई अंक में मेरी कहानी छपी जिसका पुस्तक सहित ढाई सौ रुपया पारिश्रमिक भी प्राप्त हुआ।

ये सारी सफलताएं मुझे गुरु आशीष से प्राप्त हुईं। मैंने यह जाना कि जिस पर गुरु कृपा हो जाए, जो दीक्षा के माध्यम से गुरु से जुड़ जाए उसकी साधना शीघ्र फलीभूत होती है। मैंने गुरुदेव का ध्यान करके सच्ची श्रद्धा से गुरुवार को प्रातः तीन से छः बजे के बीच पश्चिम की ओर मुख करके **लक्ष्मी यंत्र** को पूजा स्थल में प्रतिष्ठापित करके साधना की। पीले आसन पर लक्ष्मी जी की व गुरुदेव की तस्वीर को सजाया। पूजन की पूरी सामग्री के साथ पीला चंदन, पीले पुष्प, पीले चावल रखे, घी का दीपक, कपूर, अगरबत्ती जलाई। पूरे वातावरण को सुगन्धित करके पीले वस्त्र धारण कर गुरु मंत्र की चादर ओढ़कर पीले आसन पर बैठ गुरुदेव का दस मिनट तक ध्यान किया। मां लक्ष्मी से रुंधे कण्ठ से प्रार्थना की कि वे हमारी साधना को स्वीकार करके हमारे घर में पधारें। सर्वप्रथम पांच माला गुरु मंत्र की **स्फटिक माला** से, एक गणेश मंत्र की, व पांच लक्ष्मी मंत्र की **लक्ष्मी माला (कमलगट्टे के बीज की माला से)** की तथा ११ माला बीज मंत्र **''श्रीं''** का जाप किया।

मंत्र इस प्रकार हैं

गुरु मंत्र -

ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

गणेश मंत्र -

ॐ गं गणपतये नमः

महालक्ष्मी मंत्र -

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

बीज मंत्र -

''श्रीं''

इस प्रकार से मेरी साधना फलीभूत हुई और मैंने सुख-समृद्धि, यश, कीर्ति व सम्पत्ति को गुरु कृपा से प्राप्त किया।

विभा चन्द्राकर
रशियन ब्लॉक, १०/२, एवन्यू-डी
सेक्टर-६, भिलाई, दुर्ग (म.प्र.)

जब आंखों की रोशनी वापस लौटी

आदरणीय पूज्यनीय गुरुदेव के एवम् पूज्यनीया माताजी के श्री चरण कमलों में सेवक का सादर चरण स्पर्श स्वीकार हो। आगे समाचार इस प्रकार है कि पत्रिका में प्रकाशन हेतु एक विशेष घटना जो यहां **धार जिले** के पद्मपुर गांव में श्री शंकर लाल जी के साथ हुई है, भिजवा रहा हूं। इनकी पिछले तीन वर्ष से आंखों की रोशनी बिल्कुल चली गई थी। उज्जैन शिविर में आए हुए कुछ लोगों ने इनको जाकर पूज्य गुरुदेव के विषय में जानकारी दी एवं माह जनवरी १९९३ का पत्रिका विशेषांक देखने को दिया तो यह आपके सन्यासी रूप को ज्योति नहीं होते हुए भी देखने लगे, फिर अपने परिवार के किसी सदस्य से पत्रिका को पढ़वाकर सुनते रहे। सुनने के बाद फिर पत्रिका हाथ में लेकर चित्र को ध्यान लगाकर देखने लगे, अचानक देखते-देखते इनकी आंखों की रोशनी वापस आ गई व गांव के लोग आश्चर्य चकित हो गए, पूज्य गुरुदेव की जय - जयकार करने लगे।

ओमप्रकाश शर्मा
सिद्धाश्रम साधक परिवार
शाखा-एम-१६४, स्टेडियम ग्राउन्ड,
नन्दानगर, इंदौर (म० प्र०)

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली फाउन्डेशन इन्टरनेशनल चेरिटेबल ट्रस्ट (रजि०)

वे क्षण महान बन जाते हैं जिन क्षणों में मन में विचार एक महान कार्य के लिए उत्पन्न होता है, क्योंकि यही विचार ही आगे चलकर एक विशेष कार्य का रूप लेता है और फिर उसे पूरा करने के लिए जिस कर्म - शक्ति की आवश्यकता होती है वह तो अपने-आप आ जाती है, क्योंकि उसके पीछे शुद्ध विचारों की नींव होती है। आत्मा से उठी हुई एक पुकार होती है। धरती से आसमान को छू लेने वाली शक्ति तरंगों का प्रवाह होता है। फिर तो कार्य को पूरा होना ही पड़ता है।

जीवन का सच्चा आनन्द तो साक्षी भाव होकर जीने में ही है। जब हम जीवन के क्रियात्मक पक्ष में, चाहे वह किसी भी प्रकार के सांसारिक संबंध हों, अपने-आप को पूर्ण रूप से उसमें डुबा लेते हैं तो सांसारिक जीवन की पीड़ाएं हमें झेलनी पड़ती हैं और उस पीड़ा - चक्र में निरंतर बहते-बहते यदि एक बार काल में समा जाते हैं तो फिर न जाने नया जीवन कैसा मिलेगा कब मिलेगा, लेकिन इस जीवन की तो उपयोगिता निरर्थक हो ही गई न!

इस जीवन में आप दो प्रकार की पूंजी एकत्रित कर सकते हैं। एक तो धन संबंधित पूंजी, जिसे आप संचय करके अपने पीछे बैठे संबंधियों के लिए छोड़कर चले जाएंगे और आपको यह भी ज्ञात नहीं रहेगा कि वे इस पूंजी का कैसा उपयोग करते हैं, वे पूंजी का सदुपयोग भी कर सकते हैं और दुरुपयोग भी। वे इसे श्रेष्ठ कार्यों में लगा सकते हैं अथवा इसे भौतिक कार्यों में उड़ा सकते हैं। लेकिन नियंत्रण आपका कुछ भी नहीं रहेगा, आगे जाकर जब आपसे प्रश्न पूछा जाएगा कि तुमने अपने लिए क्या किया तो सम्भवतः आपका यही जबाब होगा कि मैंने रोजी-रोटी कमाने में और अपने वीर्यजात पुत्रों के पालन के लिए सब कुछ समाप्त कर दिया। स्वयं के लिए अथवा परमार्थ के लिए कुछ भी नहीं किया। क्या यह स्थिति आपको अनुकूल लगती है?

कौन याद करेगा आपको-

या तो आप जीवन में बहुत श्रेष्ठ व्यक्ति बन जाएं या दूसरों को पीड़ा पहुंचाने वाले बन जाएं, तो आपको बहुत सारे लोग याद करेंगे या फिर ऐसा कुछ कार्य करके चले जाएं जो कि वास्तव में आपने स्वकल्याण के साथ-साथ दूसरों के लिए भी किया हो और ऐसा दान, कर्म - दान की पूंजी ही आपके साथ जाएगी और आने वाली पीढ़ियां भी याद करेंगी कि हमारे पूर्वज ने अपने जीवन में श्रेष्ठ कार्य किया है और हमारे लिए धरोहर छोड़कर गए हैं।

जीवन्त गुरुदेव हैं आपके साथ -

आज से तीन-चार महीने पहले, जब सिद्धाश्रम के योगियों की पुकार पूज्य गुरुदेव जी के नाम आई और वह पत्रिका में प्रकाशित भी हो गई क्योंकि उस पत्र को, उस पुकार को पूज्य गुरुदेव की अनुमति प्राप्त थी, लेकिन उसके बाद जब भारत भर में पूज्य गुरुदेव के शिष्यों की जो प्रतिक्रिया हुई, उन्होंने जो अपन रूदन, क्रंदन प्रगट किया, जो उन्होंने आंसुओं से लिखे, अपने रक्त से अंकित पत्र यहां पत्रिका कार्यालय में पूज्य गुरुदेव के नाम भेजे, और स्थान-स्थान पर जो मीटिंगें हुई, लक्ष-लक्ष साधकों ने अपनी पूजा में जो अश्रु - धाराएं बहाई उन्हें देखकर सिद्धाश्रम के योगी भी निश्चय ही रो पड़े होंगे। उन्हें कलियुग में, इस धरती के शिष्यों से ऐसे प्रेम, भक्ति और निष्ठा की आशा नहीं थी। उन्होंने सोचा होगा कि ये सब अपने स्वार्थ से जुड़े हैं। अपना स्वार्थ पूरा होने तक रुके हैं, अपने स्वार्थपूर्ति हेतु यदि फिर **डा० नारायणदत्त श्रीमाली जी** नहीं तो कोई अन्य गुरु को अपना लेंगे, इनकी भक्ति तो ऊपरी है, केवल कुछ दिनों, कुछ महीनों की है, लेकिन यह सब देखकर उन्हें अप्रतिम आश्चर्य हुआ कि इस युग में भी ऐसा सम्भव है। एक गुरु के लिए जो तड़प सिद्धाश्रम में बैठे हुए योगियों के मन में है, उससे कहीं ज्यादा तड़पन धरती पर फैले लाखों शिष्यों के मन में हैं।

मुझे तो कहना ही था -

और जब उसके बाद भिलाई नवरात्रि महोत्सव आया तो मैं नित्य - प्रति शिष्यों की बातें सुन रहा था, वे अपनी

वेदना जिस रूप में प्रकट कर रहे थे, वह भी सुन रहा था, कुछ मूक भाषा में भरे हृदय से बैठे थे, उनकी बात भी सुन रहा था, समझ रहा था और इसी हेतु अष्टमी के दिन एक शुभ बेला में उन विशेष क्षणों में जो चैतन्य क्षण बन गयी, महान क्षण बन गई, मैंने अपनी बात कह दी ।

"मैं परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद महाराज (डा० नारायणदत्त श्रीमाली जी) का शिष्य, इस मंच से इन सब साधकों व शिष्यों की साक्षी में इन सब की अनुमति से यह सौगंध खाता हूं कि हम इस धरती पर नया सिद्धाश्रम बनाएंगे और पूज्य गुरुदेव को इस नए सिद्धाश्रम में ही अपने इसी सांसारिक रूप में रहना है, उन्हें हमारे बीच से सिद्धाश्रम का कोई भी योगी जुदा नहीं कर सकता, हमें इस धरती पर पूज्य गुरुदेव की निरंतर आवश्यकता है, उनकी छवि, स्वरूप, मुस्कान हर क्षण हमारे सामने जीवन्त रूप में बनी रहे, इसी रूप में वे हमारे समक्ष प्रवचन देते रहें, साधना ज्ञान देते रहें, और सबसे बड़ी बात अपना आशीर्वाद प्रदान करते रहें, जिससे उनके द्वारा बताए गए . . .।"

यह मेरा शिष्यों के नाम आह्वान नहीं था, शिष्यों द्वारा लिए गए संकल्प को शाब्दिक रूप से गुरुदेव के समक्ष प्रस्तुत किया था और उस लक्ष्य की पूर्ति हेतु शिष्यों ने जो भाव प्रकट किया था वह गुरुदेव को अपना निर्णय बदल देने के लिए क्या विवश कर देने वाला नहीं था।

और जब हमने संकल्प ले ही लिया है -

महान कार्य के लिए योजनाएं बड़ी बनानी पड़ती हैं और धरती पर सिद्धाश्रम तो वास्तव में अद्वितीय एवं महान होना ही चाहिए। उसमें वे सब कार्य होने चाहिए जो आम आश्रमों से अलग हो, वैसा वातावरण बनना चाहिए जहां प्रवेश करते ही ऐसा लगे कि हम वशिष्ठ, विश्वामित्र, पुलस्त्य, कणाद, भारद्वाज आदि के उस युग में पहुंच गए हैं, जब ऋषि-मुनि स्वयं साधना करते थे और अपने शिष्यों को साधना का व्यवहारिक ज्ञान तथा जीवन में हर क्षेत्र में पूर्ण बनाने की व्यवहारिक विधाएं सिखाई जाती थीं, जहां वेद - मंत्रों की ध्वनि के साथ यज्ञ कार्य निरंतर संपन्न होते हों।

- जहां आयुर्वेद से संबंधित प्रयोग शालाएं हों, आश्रम में ही जड़ी-बूटियां उगाई जाएं, शुद्ध क्रिया द्वारा औषधियों का निर्माण किया जाए, जहां आयुर्वेद पर नए-नए अनुसंधान होते रहें।
- जहां हर गरीब को, अमीर को अपने जीवन की मूलभूत कमियों के निवारण हेतु सरल-सुलभ वातावरण मिले।
- जहां सर्वजन शारीरिक रोग, मानसिक रोग के निवारण हेतु आश्रम में ही रहकर व्याधि से मुक्ति प्राप्त कर सकें।
- जहां गोवर्धन की रक्षा हेतु विशेष गौशाला हों। सभी प्रकार के पक्षी कलरव करते हुए अपनी समस्त क्रीड़ाओं के साथ निश्छंद रूप से विचरण कर सकें।
- जहां बालकों को वैदिक ज्ञान हेतु विद्यालय हों, शारीरिक क्षमता के पूर्ण विकास हेतु मल्ल शाला हो और बौद्धिक क्षमता के पूर्ण विकास हेतु ज्ञान शाला हों, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के उद्‌भट विद्वान् अपने प्रवचनों द्वारा ज्ञान दें।
- जहां समाज के पीड़ित वर्ग हेतु परोपकारी कार्य हों। देश भर में किसी भी प्रकार की प्राकृतिक आपदा होने पर आश्रम द्वारा व्यक्तिगत रूप से और आर्थिक रूप से अनुदान दिया जा सके।
- और सबसे प्रमुख जहां पूज्य गुरुदेव अपने साधना कक्ष में विराजमान हों और नित्य प्रति साधकों को अपनी मंद-मंद मुस्कान के साथ प्रवचन और आशीर्वाद देते रहें।

यह सब लक्ष्य नहीं हैं, कार्य योजना का एक अंग है, जिन्हें पूरा करने हेतु आप को एक संकल्प लेना है और केवल आर्थिक सहयोग ही नहीं देना है, अपितु भागीदार बनना है और इसमें नित्य प्रति कार्य करना है। इस महान कार्य हेतु हमें समाज के प्रत्येक वर्ग के व्यक्तियों की आवश्यकता पड़ेगी। आप में से कई डाक्टर होंगे, इंजीनियर होंगे, शिक्षक होंगे, ठेकेदार होंगे, मिस्त्री होंगे, कलाकार होंगे, लेखक होंगे, एकाउंटेंट होंगे, सब की आवश्यकता पड़ेगी और यदि आपने अपना सहयोग पूर्ण भाव से नहीं दिया तो मैं जबरदस्ती ले सकता हूं। मैं इस परिवार में आपका वरिष्ठ जो हूं क्योंकि आपने पूज्य गुरुदेव से दीक्षा ली है और अब आपका अपना स्वयं का कुछ नहीं रह गया है।

कई लोगों को तो महान कार्यों का फल अपने जीवन में प्राप्त नहीं होता है, लेकिन आपको तो इस महान कार्य का सुफल अपने जीवन में ही प्राप्त होने लग जाएगा। इस कार्य हेतु अपने हृदय की आवाज, यदि अपने पूजा कक्ष में अपनी पूजा के समय गुरुदेव का ध्यान कर सुनेंगे तो ज्ञात होगी और उस ध्यान में आपको जो भी आदेश प्राप्त हो, वह सहयोग अवश्य कर दें।

ट्रस्ट बनाना आवश्यक है -

इतने बड़े कार्य के लिए योजना बद्ध रूप से चलना आवश्यक था और ये कार्य पूज्य गुरुदेव को ही समर्पित हैं। इस कारण इस ट्रस्ट का नाम भी पूज्य गुरुदेव के नाम पर ही रखा गया और यह दिव्य ट्रस्ट है--

"डा० नारायणदत्त श्रीमाली फाउन्डेशन इन्टरनेशनल चेरिटेबल ट्रस्ट (रजि०)"

*इस ट्रस्ट का रजिस्ट्रेशन करवा दिया गया है, और साथ ही आयकर संबंधि छूट प्रमाण- पत्र भी प्राप्त कर लिया गया है। **इस कारण आप जो भी धन राशि भेजेंगे वह आपके लिए आयकर छूट के योग्य होगी।***

भिलाई में जिन शिष्यों ने संकल्प लिया था, उनके नाम इस अंक में प्रकाशित किए जा रहे हैं। इसके बाद कई और शिष्यों ने संकल्प पत्र भेजा है कुछ ने थोड़ा समय मांगा है।

मुझे इस प्रकार के उत्साह को देखते हुए हर्ष है, लेकिन अब हमारी योजना भारत के केंद्रीय स्थान दिल्ली के निकट ही आश्रम बनाने की है जैसा कि सभी साधकों ने लिखा है। दिल्ली के आस-पास जो जमीन का भाव है वह आपको भी ज्ञात होगा इसके अलावा भवन निर्माण में जो व्यय आता है वह भी आपको ज्ञात ही होगा क्योंकि अपने रहने का मकान आपने भी अवश्य बनवाया होगा और कम से कम एक कमरा तो बनाया ही होगा, इससे आपको अंदाज होगा कि भवन निर्माण की क्या लागत आती है।

अभी तक हमने आर्किटेक्ट द्वारा जो नक्शा बनवाया है, जो मॉडल तैयार करवाया है और जो वैल्युएशन निकाली है, उसके अनुसार -

प्रथम चरण - जिसमें जमीन बाऊंड्री, केंद्रिय भवन, सभाकक्ष, साधना स्थल एवं ठहरने की व्यवस्था का निर्माण होगा, उस पर तीन करोड़ रुपये व्यय आएगा और आगे - **द्वितीय चरण** - में विभिन्न केंद्रों का निर्माण होगा **तृतीय चरण** में लगभग २१ हजार साधकों के एक साथ ठहरने और उनके लिए सभी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु , जिस प्रकार के केन्द्र का निर्माण होगा उस पूरी योजना में अर्थात् **तृतीय चरण** तक ११ करोड़ रुपये व्यय अनुमानित किया गया है।

अब मेरा प्रश्न है कि जिस मंथर गति से हम चल रहे हैं, क्या उस गति से आने वाले तीन वर्षों में हम पूरा केन्द्र निर्माण कर पाएंगे? इस पर विचार आपको करना है और आप जैसा भी विचार रखेंगे वह मुझे मंजूर रहेगा क्योंकि यह 'सिद्धाश्रम' आपका है, जिसका उपयोग आप करेंगे, जो आप द्वारा अपने लिए तथा भावी पीढ़ी के लिए किया जाने वाला महान कार्य होगा।

साधक तो ऐसे होते हैं!

नवरात्रि २१ अक्टूबर ९३ को साधकों ने सहयोग देने की **''धरती पर सिद्धाश्रम''** बनाने की घोषणा की और दीपावली १३.११.९३ तक निम्न साधकों ने सहयोग राशि भेज दी है, यह है उनकी दृढ़ता, यह है निश्चय और यह है जबान के धनी होने का प्रमाण -

नाम	स्थान
श्री अश्विनी कुमार	दुर्ग
श्री राम चन्द्र रंगराज	दुर्ग
कुमारी बिंदिया उइके	बैतूल
श्री दिगम्बर दसरथ बन्धान	नासिक
श्री राम चन्द्र रंगारी	दुर्ग
श्री गोवर्धन वर्मा	बंगलौर
श्री मदन सिंह	बिलासपुर
श्री हरिशरण सोनी	रायपुर
श्री प्रकाश गौर	कानपुर
श्री एम. एल. श्रीवास	रायपुर
श्री भूराराम	राजस्थान
श्री नरोत्तम लाल साहू	बिलासपुर
श्री ओम प्रकाश जैसवाल	फैजाबाद
श्री राम स्वरूप बधवार	मण्डी
श्री सत्यनारायण पाण्डे	सासाराम
श्री के. डी. महतो	धनबाद
श्री राज कुमार यादव	अम्बिकापुर
श्री चन्द्र प्रकाश सोनी	रायगढ़
श्री आर. एस. साहू	बिलासपुर

नाम	स्थान
श्री मिश्री लाल शिल्पकार	बस्ती
श्री गिरधारी लाल चौधरी	बोकारो स्टील प्लांट
श्री छगन लाल लोन्हारे	रायगढ़
श्री तेजनाथ यादव	बिलासपुर
श्री एस. के. मिश्रा	इलाहाबाद
श्री ए. एन. राम	धनबाद
श्री जिगनेश आर. पटेल	खण्डवा
श्री के. राना पान्तजलि	सहरसा
श्री आर. डी. राम वर्मा	राजनांदगांव
श्री लोकेश्वर प्रसाद सिन्हा	रायपुर
श्रीमति सविता कौसिक	बिलासपुर
डॉ. रमेश पाननकर	बैतूल
श्री रमेश कुमार पोद्दार	सम्बलपुर
श्री विनोद कुमार मिश्रा	कटिहार
श्री गायत्री सोनी	दुर्ग
श्री धूलसिंह देवड़ा	भोपाल
श्री जितेन्द्र कुमार	दुर्ग

जिन्होंने मंच पर घोषणा तो की, तालियां भी बटोरी, पर अभी तक सहयोग राशि भेजी नहीं, उनकी सूची अगले अंक में प्रकाशित करेंगे, जिससे पूरे भारत वर्ष को ज्ञात हो सके।

लक्ष्मी-काली-जगदम्बा साधना शिविर

(गणपति शिवयुक्त)

१३.०१.६४ एवं १४.०१.६४

मकर संक्रांति

जो सिद्धिदायक मुहूर्त है। सौभाग्य से यदि मिल रहा हो ऐसा मुहूर्त और पूज्य गुरुदेव का सान्निध्य, तब तो जीवन में सम्पूर्णता आती ही है. . .

इसी से इन दो दिवसों को चिरस्मरणीय बनाने का निर्णय लिया **सिद्धाश्रम साधक परिवार** ने. . .

पूज्यपाद गुरुदेव से कृपापूर्वक अनुमति प्राप्त कर, भारत की सभ्यता के मूलभूत प्रदेश बिहार की नगरी. . .

बोकारो स्टील सिटी

(बिहार)

में

दो दिवसीय साधना शिविर आयोजित करके, जब एक नहीं पांच महत्वपूर्ण साधनाओं को, जीवन की प्रत्येक स्थिति को संवारने का क्रम सम्पन्न होगा। वैद्यनाथ धाम में हुए सफल शिविर के आयोजन से स्पष्ट हो गया है कि बिहार एवं संलग्न प्रांतों में, समस्त पूर्वी भारत में साधकों के मध्य किस प्रकार से चेतना की लहर दौड़ी है, उनमें उत्साह और समर्पण आया है।

तभी तो भगवान सूर्य के तेजस्वी दिवस को साधकों व तांत्रिकों की धरती पर अनूठी तांत्रिक साधनाओं का एक सघन क्रम आयोजित कर उसे महापर्व बना रहे हैं।

शिविर शुल्क - ६६०/-

सम्पर्क

- **श्री गिरधारी लाल चौधरी, २७४, कोऑपरेटिव कॉलोनी बोकारो स्टील सिटी, बिहार, फोन : ०६५४२-६६२४**
- **श्री ओमप्रकाश मित्तल -कोपरेटिव कॉलोनी**

आयोजन स्थल : सेक्टर-६,कम्यूनिटी सेण्टर हॉल, बोकारो स्टील सीटी, बिहार

जेहि पे हो सद्गुरुदेव कृपा, मार सके न कोई

मैं दिल्ली शहर में एक डॉक्टर हूं। मेरा निजी वाहन एक जीप है जिसे मैं पिछले ७ वर्षों से स्वयं चला रहा हूं। यह घटना दिनांक २४ जून १९९३ की है। प्रातः १० बजे का समय था, हल्की बारिश हो कर थम चुकी थी। मुझे गुरुधाम (कोहाट एन्क्लेव) किसी कार्य वश जाना था। मैं क्लिनिक से करीब एक किलो मीटर अपनी जीप से ठीक - ठाक गया। यहां से रिंग रोड जाने को बांयी ओर मुड़ना होता है तथा मुड़ते ही एक पुल की चढ़ाई शुरू हो जाती है। जैसे ही मैंने जीप बायीं ओर मोड़ी मेरी जीप एक सफेद एम्बेस्डर कार से टकराते- टकराते बची। पिछले चार दिनों में मेरे तीन भंयकर एक्सीडेंट होते - होते, मैं पूज्यनीय गुरुदेव की कृपा से बाल - बाल बचा था। अब मैं पुल की चढ़ाई पूरी कर रहा था। मेरी बांयी ओर एक गहरी खाई थी जिस में दुर्घटना से बचने के लिए कुछ रेलिंग लगी है। थोड़ी दूर के बाद रेलिंग नहीं लगी है व नीचे खाई है उससे कोई सीधा बचाव नहीं है। यह घटना जिस जगह की, है वहां रेलिंग नहीं है। सौभाग्य यह था कि मन में पूज्यनीय गुरुदेव का स्मरण था। अचानक जीप में चलते - चलते झटका लगा और जीप लट्टू की तरह घूमने लगी, क्यों और कैसे मुझे मालूम नहीं, जबकि मैं घूमने से पहले व बाद में भी पूरे होश में था। मैंने स्टीयरिंग व्हील कस कर पकड़ रखी थी। ब्रेकों पर पैरों की पूरी पकड़ थी। सड़क के दोनों तरफ कारों की लम्बी कतार थी, जो सभी रूक कर स्तब्ध हो जीप की आशंकित दुर्घटना का इन्तजार कर रहे थे। इस समय जो सबसे अविश्वसनीय पर सत्य यह है कि मुझे कोई डर अथवा आतंक नहीं था। पर गुरुदेव में पूरा ध्यान था।

जीप ने खड़े- खड़े एक अदृश्य धुरी पर पूरे दो चक्कर काटे। अंत में जीप सड़क पर बन्द होकर ऐसे खड़ी हो गयी जैसे कोई कार पार्किंग में खड़ी करता है। सभी दर्शक जो एक अति भयंकर दुर्घटना की अपेक्षा कर रहे थे, अविश्वसनीय दृष्टि डालते हुए ठगे से रह गए। मैंने जीप का दरवाजा बन्द कर पुनः जीप स्टार्ट कर यात्रा प्रारम्भ कर दी। गुरुधाम पहुंच कर पूज्यनीय गुरुदेव के दर्शन पाते ही मैं उनके चरण कमलों में झुक गया। पूज्यनीय गुरुदेव मुस्कुराते हुए बोले कि --"सत्य नारायण तेरी आयु बहुत लम्बी है। मैं तुझे अभी स्मरण कर रहा था और तू चला आया।" मैंने तुरन्त सारा वृतान्त सुनाया। गुरुदेव ने मुझसे कहा कि पिछले २-३ दिनों में तेरी ४ भीषण दुर्घटनाएं बची हैं। मैंने पूर्ण आश्वस्त होकर कहा कि -- गुरुदेव मुझे तो उस समय भी कोई भय नहीं लगा और अब भी कोई भय नहीं है क्योंकि मैं आपकी दुर्लभ कृपा का पात्र हूं और जिसकी रक्षा आप स्वयं कर रहे हैं उसे किससे भय होगा।

पूर्णतः भय मुक्त हो पूज्य गुरुदेव का स्मरण करते हुए दिल्ली की तूफानी यातायात में जीप, जो लगभग चलाने की स्थिति में नहीं थी, आसानी से वर्कशाप तक लाया। जब वर्कशाप में मैकेनिक ने जीप को देखा तो बिना किसी टक्कर हुए 'टाई एन्ड राड' के मुड़ने का कारण नहीं बता पाए पहिए खोलने पर बांए पहिए की बेयरिंग के टुकड़े - टुकड़े मिले। आश्चर्य होता है कि मुझ जैसे तुच्छ प्राणी पर पूज्यनीय गुरुदेव की असीम कृपा कैसे प्राप्त हो गयी। यह गुरुदेव की लीला है इसे समझ पाना हम सबके लिए असम्भव ही है।

डॉ० सत्य नारायण दुबे
ए-१/२८५-अ, लारेन्स रोड,
दिल्ली-३५, फोनः०११-७१८०६६६

(पृष्ठ १० का शेष)

के जीवन में अनुकूलता देते हुए मैंने अनुभव किया है, स्वामी विशुद्धानन्द जी ने ऐसा ही प्रयोग किया था, परन्तु अब यह विद्या भी भारतवर्ष में दो- चार गिने चुने लोगों तक ही सीमित रह गई है।

८. सूर्य विज्ञान

यह एक महत्वपूर्ण विज्ञान है, जो कि केवल भारत के योगियों को ही ज्ञात है, इसमें सूर्य की किरणों के माध्यम से एक पदार्थ को दूसरे पदार्थ में रूपान्तरित कर दिया जाता है। विशुद्धानन्द जी ने सैकड़ों लोगों के सामने कागज से गुलाब का पुष्प तथा रुई से ठोस सोने का पिण्ड बना दिया था। यह घटना तो मात्र पचास - साठ वर्ष पहले ही की है।

इसके माध्यम से संसार का कोई पदार्थ किसी भी अन्य पदार्थ में कुछ ही क्षणों में रूपान्तरित किया जा सकता है।

आज के युग में भी दिव्येन्दु घोष एवं कुछ अन्य योगियों के पास यह विद्या जीवित है, परन्तु लगभग समाप्त प्रायः ही है।

९. मृत संजीवनी विद्या

शंकराचार्य इस विद्या के जन्म दाता थे। इसमें मरे हुए प्राणी के जीवन में पुनः प्राणों का संचार किया जा सकता है। आज के युग में यह भले ही कपोल कल्पित सी बात लगे परन्तु गुरु गोरखनाथ ने कई बार इन प्रयोगों को दिखाया था, आज के युग में भी केवल दो या तीन ही ऐसे योगी भारत - वर्ष में हैं, जो इस विद्या के प्रामाणिक जानकार हैं।

हमारा दुर्भाग्य है कि हम समय रहते सावधान नहीं हो रहे हैं, अपने दिमाग के दरवाजे बन्द कर दिये हैं, पूर्वजों की थाती को मखौल बना दिया है और सही अर्थों में आस्थाहीन हो गए हैं।

जीवन की ये विद्याएं और यदि सही शब्दों में कहा जाए तो जीवन की स्वर्णिम विद्याएं आज भी जिस व्यक्तित्व में मूर्तिमंत स्वरूप से दृष्टिगोचर होती हैं, वे पूज्यपाद गुरुदेव ही हैं।

एक सामान्य से व्यक्ति को आश्चर्य हो सकता है कि यह कैसे सम्भव है कि एक ही जीवन में कोई व्यक्तित्व इन सभी परालौकिक विद्याओं में न केवल दक्षता अर्जित कर ले, वरन इस स्तर पर आ जाए कि अपने शिष्यों को भी दक्ष बना दे किन्तु जो विज्ञ हैं वे इस तथ्य से परिचित हैं कि **पूज्यपाद गुरुदेव अपने इसी सामान्य से बाह्य स्वरूप के अन्तर्गत परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी का ऐसा व्यक्तित्व समाहित किए हैं जिनकी दिव्यता और साधनात्मक श्रेष्ठता के समक्ष सम्पूर्ण विश्व के योगी प्रणम्य और नतमस्तक हैं।**

> **"सिद्धियां या साधनाएं चमत्कार और प्रदर्शन की वस्तुएं नहीं. . . ऐसा तो बाजीगर करते हैं।"**
>
> **--- यही गुरु दक्षिणा के रूप में मांगा था पूज्य गुरुदेव ने अपने शिष्यों से साधनाओं की पूर्णता पर. . .**

ये विद्याएं और सिद्धियां इतनी हल्की और सस्ती नहीं होती कि इनका प्रदर्शन और प्रचार किया जाए। आज संक्रमण के इस काल में जबकि भौतिकता निरन्तर बढ़ती हुई आध्यात्मिकता का सर्वनाश करने पर तुल गई है, जबकि अध्यात्म के नाम पर केवल छल - प्रपंच और व्यभिचार फैल गया है तब आवश्यक हो गया है कि न केवल ऐसी श्रेष्ठतम परालौकिक विद्याओं का पुनर्जागरण एवं पुनर्प्रसार हो, अपितु उससे भी अधिक आवश्यक हो गया है कि उस व्यक्तित्व को पहचाना जाए, जिनके पास ये दुर्लभ विद्याएं गुरु - मुख परम्परा से सुरक्षित हैं।

ये विद्याएं न तो कभी पन्नों के माध्यम से स्पष्ट की गईं और न इन्हें स्पष्ट ही किया जा सकता है। इसके लिए तो व्यक्ति को शिष्य बनने की आवश्यकता पड़ती है, अपना अहं और तर्क - वितर्क छोड़ कर समीप आने की क्रिया करनी पड़ती है और तभी वह एक श्रेष्ठ व्यक्तित्व प्राप्त कर सकने में समर्थ होता है।

यह मेरी एक प्रकार से धृष्टता ही है कि मैं बिना पूज्य गुरुदेव की अनुमति के, उनके व्यक्तित्व के इस पक्ष को इस महत्वपूर्ण विशेषांक में प्रकाशित कर रहा हूं क्योंकि **उनका तो दो टूक और सीधा सा मत है कि मैं बिना कठोर परीक्षा के इन विद्याओं को किसी को देने में विश्वास ही नहीं रखता।**

किन्तु लोप हो रही इन विद्याओं के प्रति हमारा आकर्षण और एक प्रकार से उत्तरदायित्व ही मुझे बाध्य कर गया कि मैं **पूज्यपाद गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी** के इस व्यक्तित्व को अपने चिन्तनशील पाठकों के समक्ष रखूं। उनके विविध रूपों के साथ - साथ उनके इस अचिन्त्य रूप को भी पुनः - पुनः मानसिक वंदन अर्पित करता हूं।

● योगी चैतन्य देव

राजनीतिक भविष्य एवं शेयर मार्केट

पहले की अपेक्षा व्यक्ति की मानसिकता में अब महत्वपूर्ण परिवर्तन हो चुके हैं। जहां पहले एक सामान्य नागरिक शेयर मार्केट की बात भी नहीं करता था वहीं अब शेयर न केवल उसकी चर्चा और विवेचन का मुख्य विषय हो गया है वरन अब झिझक छोड़कर वह धन- निवेश करने में भी रुचि दिखाने लगा है। प्रचार माध्यमों और विविध कारणों से शेयर मार्केट में आम व्यक्ति की रुचि अत्यधिक बढ़ गई है। पिछले वर्षों में हुए भारी उतार - चढ़ाव और वित्तीय अनियमितताओं के बाद भी उसके उत्साह में कमी नहीं आई है। शेयर मार्केट के सन्दर्भ में यह रोचक तथ्य है कि व्यक्ति आज जहां एक ओर कम्प्यूटर **जैसे आधुनिकतम तरीकों से स्थितियों का आंकलन कर रहा है, वहीं ज्योतिष और पूर्वानुमान के परम्परागत तरीकों का भी उपयोग समान रूप से कर रहा है।** इससे भी अधिक रोचक तथ्य यह है कि ज्योतिषीय एवं साधनात्मक उपायों से ज्ञात शेयर मार्केट में मूल्यों का उतार - चढ़ाव अन्य उपायों से अधिक सफल और निरापद सिद्ध होता जा रहा है।

हमने पिछले वर्ष से पत्रिका में शेयर मार्केट का विवरण देना आरम्भ किया। **पत्रिका में शेयर मार्केट से सम्बन्धित जो भविष्यवाणियां प्रकाशित हुई उनकी सत्यता तो स्वयं सिद्ध हो रही है।** जब पत्रिका टीम ने इस विषय में पाठकों के मध्य जानने के लिए सम्पर्क किया तो एक प्रकार से आश्चर्यचकित रह गई। उसे सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि व्यवसायिक रूप से शेयर मार्केट के कारोबार में लगे व्यक्तियों के साथ- साथ सामान्य नौकरी पेशा एवं अन्य व्यवसाय से जुड़े पाठक भी पत्रिका में प्रकाशित भविष्यवाणियों के आधार पर अपना धन सम्बन्धित कम्पनी में नियोजित करना निरापद समझते हैं।

एक प्रकार से देखा जाए तो ठोस आधार के बिना अपनी मेहनत की गाढ़ी कमाई को यों ही नियोजित कर देना, किसी ख्याति प्राप्त कम्पनी में लगा देना या आकर्षक विज्ञापनों को पढ़कर उनसे आकृष्ट हो जाने की अपेक्षा ज्योतिषीय ज्ञान का सहारा लेना अधिक उचित रहता है, क्योंकि इस प्रकार जो ज्ञान प्राप्त किया जाता है उसके पीछे साधना का पर्याप्त बल होता है। **ज्योतिष के श्रेष्ठतम विद्वानों के साथ पंचांगुली साधना एवं स्वप्न वाराही जैसी उच्चकोटि की साधनाओं में सिद्ध हस्त साधकों के एक समूह द्वारा विचार विमर्श कर जो निर्णय सर्वाधिक मान्य होता है, पत्रिका में केवल उन्हीं को स्थान दिया जाता है।** पाठकों की ही रुचि और आग्रह के पश्चात हमने किराना मार्केट भी देना प्रारम्भ किया और सम्बन्धित वर्ग लाभ प्राप्त कर सका।

हमारा यह प्रयास रहता है कि हम अपने विज्ञ पाठकों को किसी गम्भीर विवेचन की अपेक्षा दो टूक शब्दों में शेयर मार्केट में आने वाले उतार - चढ़ाव से अवगत करा दें, क्योंकि साधनात्मक ज्ञान द्वारा प्राप्त प्रामाणिक निष्कर्ष के उपरान्त विवेचन का कोई विशेष अर्थ नहीं रह जाता।

यह वर्ष शेयर मार्केट की दृष्टि से अत्यन्त श्रेष्ठ है और पहले के वर्षों में शेयर मार्केट से जुड़ी कतिपय अनियमितताओं के बाद जो प्रभाव इस व्यवसाय से जुड़े व्यवसायियों को देखना पड़ा उसकी पुनरावृत्ति या कोई नया स्कैन्डल उभरने की सम्भावना नहीं है। यह अवश्य है कि कुछ एक प्रमुख व्यवसायिक समूह न केवल बुरी तरह से लुढ़क जायेंगे वरन उनकी साख पर भी आघात पहुंचेगा।

मोहन मेकिन्ज, लारेन्स एंड टुब्रो, केल्वीनेटर, नेस्ले इंडिया लि०, रिलायन्स इंडस्ट्रीज (वस्त्र समूह) एवं बी.पी. एल. इंडिया -- यह इस वर्ष के ऐसे शेयर हैं जिनमें निश्चित रूप से लाभ होने के संकेत हैं, इनके भाव में बहुत तेजी से उछाल आऐंगे। डी. सी. एम. श्री राम इंडस्ट्रीज की स्थिति पूरे वर्ष डांवाडोल रहेगी जबकि एस्सार, हिन्दुस्तान लिवर एवं हीरो होंडा की स्थिति सामान्य से कुछ ही श्रेष्ठ रहेगी। पिछले वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष जे.पी. ग्रुप के सभी शेयरों में गहरा आघात आने के संकेत हैं, टाटा ग्रुप के शेयरों की स्थिति भी इसी प्रकार अनिश्चित रहेगी। मोदी ग्रुप की कम्पनियों में **मोदी लुफ्ट एवं मोदी अल्कलीज का व्यवसाय उच्चतम स्थितियों को छुएगा,** जबकि मोदी रबड़, मोदी थ्रेड्स, मोदी सीमेन्ट की स्थिति स्थिर रहेगी। **सम्पूर्ण रूप से मोदी ग्रुप को कोई विशेष उतार चढ़ाव नहीं देखना पड़ेगा** जबकि बिड़ला ग्रुप की अधिकांश कम्पनियों में उतार - चढ़ाव की स्थितियों से गुजरने की दशाएं निर्मित होंगी, यद्यपि यह समूह इसके उपरान्त भी अपनी साख बनाये रखेगा और ऐसे प्रभावों से अविचलित रहेगा। **जे. के. ग्रुप की सभी कम्पनियों के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ है।** जे.के. टायर की स्थितियों में आश्चर्य जनक रूप से उन्नति होगी।

एस्कोर्ट, बिन्दल एग्रो केमीकल, भीलवाड़ा स्पिनर्स लिमिटेड, जे.सी.टी. लिमिटेड, दीवान रबर इन्डस्ट्रीज, खेतान होस्टोम्ब एवं गुजरात नर्मदा फर्टीलाइजर- यह इस वर्ष के मध्यम दर्जे के शेयर हैं और अच्छा व्यवसाय देंगे। **ऑटो ग्रुप में अशोक लेलैण्ड का नाम निर्विवाद रूप से लिया जा सकता है।**

गेहूं, देसी दड़ा, चक्की आटा, सूजी सभी के भाव कुल मिला जुलाकर स्थिर रहेंगे। चावल बासमती का भाव चढ़ेगा लेकिन मोटे चावल के दाम गिरेंगे। हरी मटर की बाजार में तेजी से मांग बढ़ेगी। मक्का, जौ, काबुली चना, स्थिर रहेगा। दलहन में केवल अरहर के भाव चढ़ेंगे। मूंग, उड़द, मोठ, मसूर के भाव कुल मिलाकर स्थिर ही रहेंगे। राजमा के भाव में भारी गिरावट आयेगी। **किराना बाजार में भारी फेर बदल होने की सम्भावना है।** काली मिर्च बड़ी इलायची, तेजपत्ता, जायफल, जावित्री के भाव आसमान छूएंगे। जीरे के दामों में एकदम से गिरावट आयेगी। लाल मिर्च, धनियां अजवाइन के दामों में गिरावट आएगी।

राजनीतिक भविष्य

राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय दोनों ही स्तरों पर यह वर्ष उथल - पुथल और परिवर्तनकारी घटनाओं से भरा सिद्ध होगा। राष्ट्रीय स्तर पर भारत के लिए यह वर्ष अधिक सफलतादायक नहीं कहा जा सकता अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उसके सम्बन्ध विच्छेद हो जाएंगे किन्तु आन्तरिक रूप से वह अवश्य सुदृढ़ बनेगा। राजनीतिक अस्थिरता का दौर चलता ही रहेगा और केन्द्रीय स्तर पर निश्चित रूप से कोई भी दल अपना वर्चस्व स्थापित नहीं कर सकेगा। भारत - चीन सम्बन्ध जिस प्रगाढ़ता के साथ आरम्भ हुए थे, उसमें गतिरोध उत्पन्न हो जाएगा किन्तु आन्तरिक रूप से दोनों देशों के मध्य वैचारिक साम्य व अनुरूपता अवश्य आएगी। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के कारण सम्भव है चीन - भारत के विरुद्ध विपरीत टिप्पणी भी करे किन्तु उससे आगामी स्थितियों पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। अमेरिका अपनी घरेलू नीतियों को लेकर ही व्यस्त रहेगा, अतः भारत से उसके सम्बन्ध न तो विशेष सुधार की ओर अग्रसर होंगे और न उनमें कोई विपरीत स्थिति आएगी। यूरोपीय देशों में जातीय हिंसा का एक नया अध्याय शुरू हो जाएगा तथा ब्रिटेन व भारत के सम्बन्ध विशेष मधुर नहीं रह जाएंगे। **अप्रवासी भारतीयों को संकट की स्थितियों का सामना करना पड़ सकता है।** यूरोप अपने देशों में आतंकवाद के पनपने से चिंतातुर होगा युगोस्लाविया की स्थिति निरन्तर खराब ही होती जाएगी तथा इसी प्रकार रूस एवं यूरेशिया में भी जातीय तनाव भड़केगा। **दक्षिण पूर्व के देश पुनः सैनिक तानाशाहों के चंगुल में जा फंसेंगे।** जापान में भी पूरे वर्ष भर राजनैतिक अस्थिरता बनी रहेगी। आस्ट्रेलिया एवं कनाडा में बसे भारतीय मूल के निवासियों के लिए संकट की स्थितियां उत्पन्न होंगी। दक्षिण अफ्रीका, मिस्र एवं खाड़ी के देशों से भारत के सम्बन्ध कूटनीति के स्तर पर सुधार की ओर अग्रसर होंगे, जिनके संयुक्त प्रयास से पाकिस्तान पर भी पर्याप्त दबाव बना रहेगा। **ईराक व भारत के सम्बन्ध विशेष रूप से सुधार की ओर अग्रसर होंगे,** फलस्वरूप अमेरिका की आलोचना का पात्र बनना पड़ सकता है। इजराइल व भारत के सम्बन्ध मधुर होंगे। श्री लंका में तमिल उग्रवादियों की तीव्र आक्रामक कार्यवाहियों के कारण भारत को आलोचना का पात्र बनना पड़ सकता है। विदेशों में स्थिति भारतीय उद्योगपति भारत में पूंजी निवेश के प्रति रुचि दिखाएंगे किन्तु केन्द्र की अस्पष्ट नीतियों के कारण इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न नहीं किये जा सकेंगे। विदेशी सहयोग से आरम्भ होने वाली कई एक महत्वपूर्ण परियोजनाएं अस्त - व्यस्त हो जाएंगी। **कश्मीर में उग्रवाद की समस्या अभी और गहरायेगी** तथा अनेक चौंकाने वाले रहस्य ज्ञात होंगे। लीबिया एवं एक अन्य देश के उग्रवादियों का षड्यंत्र स्पष्ट रूप से सामने आएगा। किंतु केन्द्रीय शासन की नीतियों के कारण कोई उल्लेखनीय अथवा ठोस कार्यवाही सम्भव नहीं हो पाएगी तथा स्थायी समाधान प्राप्त करने में सफलता भी नहीं मिलेगी। साम्प्रदायिक तनाव में स्थिति ज्यों कि त्यों रहेगी फिलहाल कटुता की स्थितियों की चपेट में आने से देश बचा रहेगा। बिहार में जातीय हिंसा तथा उत्तर पूर्व में आतंकवादी गतिविधियां पूरे वर्ष भर सामान्य जनजीवन पर प्रभाव डालती रहेंगी। **यदि निष्कर्ष रूप में कहा जाय तो वर्ष १९९४ एक प्रकार से ढुल - मुल वर्ष रहेगा। अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर भी और राष्ट्रीय सन्दर्भो में भी। किन्तु यह वर्ष महत्वपूर्ण इस रूप से कहा जा सकता है कि इसी वर्ष के गर्भ में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तनों एवं भावी इतिहास की घटनाएं पलेंगी व बढ़ेंगी।**

इस स्तम्भ के अन्तर्गत इस बार हमने वर्ष १९९४ का शेयर मार्केट एवं राजनीतिक भविष्य की दृष्टि से एक संक्षिप्त आंकलन प्रस्तुत किया है। **आगामी अंकों में भी पूर्व की ही भांति अपने जिज्ञासु पाठकों को विश्वसनीय ज्ञान व नवीनतम शेयर मार्केट की जानकारी से अवगत कराते रहेंगे।**

(पृष्ठ ३८ का शेष)

है, लेकिन इस कथा के जो शेष रहस्य छुपे रह गए थे, वे आज तक प्रकाश में नहीं आ सके। एक निश्चित समय पर, अपने गुरु द्वारा प्रदत्त आज्ञा को पूर्ण करने के बाद अध्यात्मिकता और ज्ञान की चेतना फैलाने के बाद, जब वह व्यक्तित्व पुनः अपने गुरु के समीप पहुंचा या यूं कहा जाए कि जब उसके गुरु ने पुनः उचित समय पर उसको वापस बुलाकर साधना की आगे की उच्चतम स्थितियों में संलग्न कर दिया, वह क्रिया कैसे सम्पन्न हुई इसका तो रहस्य केवल आत्मानंद के गुरुदेव के पास ही सुरक्षित रहा।

प्राणों को उर्ध्वगति देकर सहस्रार से विस्तीर्ण कर देना और जीवात्मा को नाभि में स्थित कर स्पन्दनशील कर देना, यह रहस्य है परकाया प्रवेश का, जिससे कि फिर मूलदेह युगों-युगों तक न तो सड़ती है, न क्षतविक्षत होती है और सदैव उसके पास एक ऐसा तेज मंडराता रहता है जिससे कोई भी जंगली पशु-पक्षी या कीट-पतंग उसको हानि नहीं पहुंचा सकते।

भारत की लुप्त होती इस रहस्यमय विद्या के अंतिम आचार्य हैं **पूज्यपाद गुरुदेव डा० नारायण दत्त श्रीमाली जी**। हिमाचल प्रदेश में हुए योगियों के सम्मेलन में उन्होंने अपने एक शिष्य को इसी प्रकार एक मृत पशु की देह में प्रवेश दिलाकर सफलता पूर्वक प्रदर्शन किया, उनके अनुसार यह लुप्त प्राय-विद्या अभी भी सीखी जा सकती है और यदि व्यक्ति विशेष प्रयास करे तो स्वयं ऐसी स्थिति प्राप्त कर सकता है कि वह अपने-आप ही अपने प्राणों को उर्ध्वगति देकर और अपनी जीवात्मा को नाभि में स्थापित करने का रहस्य जानकर, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में जहां भी चाहे निर्बाध और निर्द्वन्द विचरण कर सकता है और पुनः अपनी मूल देह में वापिस आ सकता है।

पूज्यपाद गुरुदेव का यह रहस्य उद्घाटन अपने-आप में चौंकाने वाला, चमत्कृत कर देने वाला है, **क्योंकि फिर तो संसार में कुछ भी गोपनीय रह ही नहीं सकता। वायु से भी अधिक विरल और अदृश्य होने के कारण व्यक्ति कहीं भी प्रवेश कर सकता है, कुछ भी देख सकता है** और लौटकर अपने स्थूल शरीर के माध्यम से इसको ज्यों का त्यों व्यक्त कर सकता है, प्राचीन काल में तपस्वी इसी विद्या का प्रयोग कर अन्य ग्रहों की यात्रा सुगमता पूर्वक कर लेते थे -- चाहे वह इन्द्रलोक हो, वरुण लोक हो, ऋषि लोक, सूर्य लोक या इसी प्रकार का अन्य कोई स्थान।

परकाया प्रवेश के सुविस्तृत इतिहास में यहां एक छोटी सी घटना ही दी गई है, जबकि परकाया प्रवेश का तो अत्यन्त विस्तार रहा है। परकाया प्रवेश का अर्थ आज हमारे मन में बहुत छोटा सा रह गया है लेकिन परकाया प्रवेश भारतीय विद्याओं की आधार भूत एक ऐसी विद्या रही है जिसका योगियों ने कई प्रकार से लौकिक और आध्यात्मिक अर्थों के लिए प्रयोग किया है। ज्ञान-विज्ञान के नवीन तथ्यों की खोज की और जीवन के विविध पक्ष देखे ।

आप भी ज्योतिषी हैं!

निश्चित रूप से! क्योंकि प्रकृति ने प्रत्येक को समान रूप से शक्तियां जो प्रदान की हैं।। आप को भी समय- समय पर बिना ज्योतिष ज्ञान के भी अनुभूति होती ही होगी, भविष्य की गर्भ में छिपी घटनाओं के संदर्भ में, भावी उथल-पुथल को लेकर और देश-विदेश में होने वाली घटनाओं के प्रति भी. . .

आप ऐसी ही घटनाओं के प्रति जो १ फरवरी से २८ फरवरी ९४ के मध्य घटने जा रही हों, हमें लिखकर भेजें, जिसके आधार पर आपके कुशल भविष्यवक्ता होने का प्रमाण मिल सके। आपका विवरण संक्षिप्त, अप्रकाशित, अप्रचारित एवं मौलिक हो। इस विषय में समस्त दायित्व प्रेषित करने वाले व्यक्ति का ही होगा। **प्रविष्टियां पत्रिका कार्यालय की सम्पत्ति होंगी।**

भविष्यवाणियों के सत्यापित होने के बाद आगामी अंक में उनका प्रकाशन किया जाएगा साथ ही आकर्षक पुरस्कार के साथ - साथ आपका चित्र सहित परिचय भी पत्रिका में प्रकाशित किया जाएगा। प्रविष्टियों की संख्या अधिक होने पर निर्णय लॉटरी पद्धति द्वारा किया जाएगा। आपकी प्रविष्टियाँ हमें ३१ जनवरी के पूर्व अवश्य ही प्राप्त हो जाएं।

संम्पर्क

"आभास"

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली.३४ , फोन- ०११-७१८२२४८

(पृष्ठ ३६ का शेष)

विग्रह रूप, प्रकट स्वरूप श्री गणपति ही हैं। इस रूप में वे आदि और अंत रहित ब्रह्म स्वरूपमय ही हैं जो समस्त शुभता, दिव्यता और वरदायक प्रभाव अपने में समाहित किए हैं। श्री गुरुदेव के पश्चात् गणपति ही ऐसे देव हैं जो ब्रह्म की सर्वोच्चता को स्पष्ट करते हैं, अपनी शीतलता, मृदुता से अपने भक्त को आह्लादित करते हैं।

गणपति का एक अन्य स्वरूप भी है जिसका उल्लेख अपेक्षाकृत कम रूप से ही प्राप्त होता है और वह है उनका तांत्रोक्त स्वरूप। इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में विस्तृत होता विलक्षण और परालौकिक स्वरूप। इस रूप में वे वरदायक और अनुग्रहकारी होते हुए भी सौम्य नहीं अपितु कुछ तीक्ष्ण, क्रोध मुद्रा से युक्त, **''मदविह्वलम''** तथा कमलमुखी द्वारा सेवित अर्थात् स्वशक्ति से अभिन्न हैं, जिससे पद्महस्ता होने के कारण साधक प्रायः लक्ष्मी समझने की भूल कर बैठते हैं। वस्तुतः जहां-जहां गणपति का उल्लेख अथवा चित्रण इस प्रकार से प्राप्त होता है वहां वे अपनी सम्पूर्ण वरदायक ''शक्ति'' के साथ ही विद्यमान हैं एवं श्रीपति, गौरीपति, रतिपति की संज्ञा से विभूषित हैं जिनका शाब्दिक अर्थ कर लेना मात्र पर्याप्त नहीं होगा।

भगवान गणपति का ही एक विशिष्ट स्वरूप है- उच्छिष्ट गणपति अर्थात् जीवन की शेष रह गई इच्छाओं को पूर्ण करने वाले गणपति! इस वर्ष उच्छिष्ट गणपति दिवस २.३.६४ को पड़ रहा है। यदि इस दिन उच्छिष्ट गणपति यंत्र स्थापित कर तांत्रोक्त माला से 'ग्लौं' बीज मंत्र की केवल एक माला मंत्र जप कर ली जाए तो समस्त शेष रह गई कामनाएं पूर्ण होती ही हैं।

भगवान गणपति का मंगलमय स्वरूप, शुभ्र स्फटिक तुल्य आभामय स्वरूप जिस प्रकार श्रेष्ठ एवं वंदनीय है उसी प्रकार उनका तांत्रोक्त स्वरूप भी। **गणेश पुराण** में उल्लेख मिलता है कि इनका स्वरूप युग के अनुसार परिवर्तित होता रहा है। इस कलियुग में उनकी संज्ञा **''धूम्रकेतु''** है, धूम्र वर्ण है तथा मलिन पुरुषों का नाश ही प्रमुख लक्ष्य है। वास्तव में इस युग में ऐसे ही पूजन की आवश्यकता भी सर्वाधिक है। गणपति के जिस **''विघ्नहर्ता''** स्वरूप का भी वर्णन किया गया है उसी का साक्षात् और प्रकट रूप है **'''धूम्रकेतु''**। यह अनायास ही नहीं है कि धूम्रकेतु स्वरूप वास्तव में उनके समस्त ब्रह्माण्ड में विस्तारित होने का सूचक भी है। यह वर्ण केवल तांत्रोक्त एवं उग्र स्वरूप का ही परिचायक नहीं है, उनके इस स्वरूप के वर्णन की महत्ता को सहज ही नहीं समझा जा सकता और वास्तव में यही गणपति का तेजस्वी स्वरूप है। यद्यपि परम्पराओं में गणपति को भगवान शिव एवं पार्वती के पुत्र की संज्ञा दी गई है किंतु वास्तविकता यह है कि गणेश उनके **''योग-पुत्र''** हैं। शिव व शक्ति के गुणों का साकार रूप हैं। इसी कारण वश गणपति की शक्तियां, विस्तार और प्रथम पूज्य होने का गौरव सर्वोपरि रहा।

यह युग **''तंत्रकाल''** है। इस युग में जिस प्रकार की जीवन शैली है उसके अनुरूप केवल तंत्र का मार्ग ही निरापद और कल्याणकारी कहा जा सकता है। जहां आत्मोन्नति अथवा अध्यात्म का विषय हो वहां व्यक्ति फिर भी स्वतंत्र है कि अपनी रुचि के अनुसार योग, मंत्र, ध्यान अथवा साधना की कोई भी पद्धति चुन ले किंतु दैनिक जीवन में केवल तंत्र का मार्ग ही शेष रह गया है, एक प्रकार से विकल्प का कोई मार्ग शेष रह ही नहीं गया है। धन, पद, प्रतिष्ठा, शारीरिक स्वास्थ्य, शत्रु निवारण, आकस्मिक बाधा निवारण जैसी अनेक स्थितियों से निपटाने के लिए तंत्र का और प्रभावशाली तंत्र का अवलम्बन लेना ही सही उपाय है।

महागणपति न केवल अपने स्वरूप में पूरी तरह से तांत्रोक्त हैं वरन् महागणपति को आधार लेकर **''गाणपत्य तंत्र''** की एक पूरी पद्धति है जो किसी भी अन्य पद्धति से कम तीव्र या फलदायक नहीं है। तंत्र की पद्धतियों की विशेषता होती है कि जहां मंत्र के माध्यम से किसी देव की प्रार्थना की जाती है वहीं तांत्रोक्त पद्धति के अन्तर्गत उसकी सम्पूर्ण शक्तियों की

गणपति पूजन को तांत्रोक्त ढंग से सम्पन्न करने की दशा में उन्हें **"महागणपति"** की संज्ञा से विभूषित कर उनकी समस्त शक्तियों-गौरी, सिद्धि, बुद्धि, सरस्वती, कुबेर, के साथ आवाहित एवं स्थापित कर लाभ प्राप्त करने की क्रिया सम्पन्न की जाती है।

साधना विधि -

इस तांत्रोक्त महागणपति साधना में लाल रंग का विशेष अर्थ है। किसी भी बुधवार की रात्रि में लाल वस्त्र बिछाकर स्वयं भी लाल वस्त्र धारण कर लाल कम्बल के आसन पर बैठें। साधक का मुंह दक्षिण दिशा की ओर होना चाहिए। तांत्रोक्त रूप से चैतन्य किया गया **महागणपति यंत्र, दो धूम्रक, वैश्रव्य, एवं सरस्वती मुद्रिका** इस साधना की आवश्यक सामग्री है। मंत्र जप केवल तांत्रोक्त माला से ही करने का विधान है। इसके अतिरिक्त घी का दीपक, चंदन, केसर, सुगंधित पुष्प, धूप, नैवेद्य, यज्ञोपवीत, सुंगधित द्रव्य, दूर्वा इस साधना में अन्य प्रमुख सामग्री है। सामने लाल वस्त्र के मध्य में पुष्प पंखुड़ियों अथवा चावलों की ढेरी पर महागणपति यंत्र की स्थापना कर दायीं ओर चावलों की एक ढेरी पर लघु सुपारी रख ऋद्धि की तथा बांयी और इसी प्रकार सिद्धि की स्थापना करनी चाहिए। सामने वैश्रव्य की एवं उसी के बाईं ओर सरस्वती मुद्रिका की भी स्थापना पुष्प की ढेरी पर करनी चाहिए। मां गौरी का पूजन महागणपति यंत्र पर ही करने का विधान है। सर्वप्रथम संक्षिप्त गणपति पूजन करें और चंदन आदि यंत्र पर समर्पित करें तथा इसी यंत्र पर गौरी पूजन भी सम्पन्न कर ऋद्धि व सिद्धि का पूजन केवल कुंकुम व पुष्प की पंखुड़ियों से करें। वैश्रव्य- जो कि कुबेर का स्थापन है, इसका पूजन सुगंधित द्रव्य से करें एवं सरस्वती पूजन श्वेत पुष्पों व केसर की पंखुड़ियों से कर सम्पूर्ण पूजन को, प्रणाम कर अपनी मनोकामना एवं सर्व प्रकारेण उन्नति की प्रार्थना सभी देवी-देवताओं की स्थापना का आग्रह करते हुए **तांत्रोक्त माला** से निम्न मंत्र का जप करें –

मंत्र

ॐ गं ह्रीं श्रीं गणपतये नमः

इस मूल मंत्र की केवल पांच माला मंत्र जप करना ही पर्याप्त माना गया है, मंत्र जप के उपरान्त यंत्र पर दोनों धूम्रक चढ़ाकर भगवान गणपति से अपनी रक्षा की प्रार्थना कर स्थान छोड़ें।

दूसरे दिन प्रातः महागणपति यंत्र को पूजन में स्थापित कर दें। सरस्वती मुद्रिका धारण कर लें तथा वैश्रव्य को धन रखने के स्थान पर रख दें। तांत्रोक्त माला तथा दोनों धूम्रक को विसर्जित कर दें, जिससे समस्त अशुभ समाप्त हो। यह एक दिन का प्रयोग वास्तव में **महागणपति** का अपने घर में स्थापना ही है।

Indian Board Of Alternative Medicines

80, CHOWRANGHEE ROAD, CALCUTTA-700 020, INDIA

Ph. No.: (033) 247-0157, Telex No.: 021-7615 Nina In, Fax: 91334751799 / 91332486871

Ref. No. 1057/93. Date 01/11/93.

Patrons:

Dr. Pratap Chandra Chunder
Ex-Union Education Minister, Govt. of India

★

Mr. Probodh Chandra Sinha
Honourable Minister, Parliamentary Affairs Deptt. (Govt. of West Bengal)

★

Mr. Justice Samir Mukherjee
High Court, Calcutta

★

Prof. Dr. Sanat Biswas
Ex-Sheriff of Calcutta

★

Dr. Subodh De
M. I. C. (Health), Calcutta Municipal Corporation

★

Advisor:

Prof. Dr. Sunil Thakur
Presidency Surgeon, Head of the Deptt. of Orthopaedics, National Medical College & Hospital (Govt. of West Bengal)

1st. International Congress of Alternative Medicines & Convocation Ceremony on World AIDS Day 1st December, 1993 at Park Hotel, Calcutta

To
Dr. N. D. Shrimali,
Dr. Shrimali Marg,
High Court Colony, Jodhpur.

Sub: Appointment as Hony. Advisor.

Dear Sir,

You will be happy to know that the Indian Board of Alternative Medicines has been established for the promotion and popularisation of the various systems of treatment and healing.

We have already organised two All India Congress of Alternative Medicines in Calcutta which were supported and attended by a galaxy of V.I.P.s and the practitioners from all over India, and the neighbouring countries and Poland.

Now we are going to organise the 1st International Congress of Alternative Medicines on the occasion of the World AIDS day on 1st Dec.,1993 at Park Hotel, Calcutta.

I am very much pleased to inform you that in view of your keen interest and experience on **Astrology,** *the Indian Board of Alternative Medicines has decided to appoint your goodself as* **Hony. Advisor** *of the Indian Board of Alternative Medicines. It will be a great moral encouragement and honour to have you amidst us for the successful implementation of the activities of Board towards the development of the Alternative systems of medicines for the benefit of the people.*

It will be indeed very kind of you if you can drop a line in confirmation of your acceptance.

Thanking you,

Yours faithfully,

(Dr. S. K. Agarwal)
President.

N.B.: Please enclose two passport size photographs and a copy of the Bio-data alongwith your confirmation letter.

N.B.: The Indian Board of Alternative Medicines has been established for the promotion of the alternative medicines and registered under Act, XXVI of 1961, Govt. of West Bengal. Based on the Central Govt. Act, XXI of 1860 and Literary and Scientific Institution Act, 1854. And also affiliated with The Open International University for Complimentary Medicines which is established under World Health Organisation, Alma Ata U.S.S.R. Declaration 1962, and recognised by the United Nations Peace University constitued under resolution No. 35/55/5/XII/80 of August 15, 1988.

पूज्य गुरुदेव को इस अखिल भारतीय संस्था ने सम्मानित कर अपने आप को ही सम्मानित किया है।

(पृष्ठ ३६ का शेष भाग)

होते हुए देखकर . . . एक अदना सा साधक आज मुझे अपने वश में करने जा रहा है, लेकिन वह अदना भी कहां, जो उसे बांध लेने को ही उद्धत हो गया हो वह अदना रहा ही कहां? दूर बहती नदी में छपछपाहट कुछ और तेज हो गई थी पता नहीं हवा के प्रभाव से या उछल कर अघटित रही एक घटना को देखने के लिए . . .

. . . अन्तिम आहुति . . .

सारा वातवारण एक दम से कोलाहल पूर्ण हो उठा सैकड़ों प्रकार की चीखें हलचल और भगदड़, ज्यों कोई बहुत बड़ी दुर्घटना हो गई हो और तेज धमाका . . . ऐसा कि पृथ्वी फट ही जाएगी . . . मन ही मन मुस्कराया जयपाल। अब इन सबसे क्या होना है. . . **जो कुछ सम्पन्न करना था मुझे वह तो मैंने कर ही दिया, अब तो बाजी मेरे हाथ में हैं।** लाख भयभीत कर ले कोई भी मुझे लेकिन इन सबके स्वामी वीर वेताल को तो आज मैंने अपने वश में कर ही लिया है भला असफल कैसे हो सकती थी मेरे गुरु की दी अनुपम दीक्षा और उनके द्वारा बताया गया यह अद्भुत प्रयोग . . . और सचमुच यही क्षण था, ऐसा ही तो था, न कोई लम्बी चौड़ी आकृति, न कोई बहुत विशालकाय शरीर, एक सामान्य सा मानव देखने में प्रायः कृशकाय ताम्र वर्णीय लेकिन चेहरे पर बिखरी हुई ऐसी वीभत्सता जो कि देखते ही न बने। **अत्यन्त घृणित और भयास्पद चेहरा आंखें मानो गड्ढों में धंसी जा रही हो और उन क्रूरता से भरी आंखों में अग्नि की ज्वाला प्रगट हो रही थी,** लेकिन दोनों हाथ अभ्यर्थना में जुड़े हुए . . . एक प्रकार से अपनी पराजय स्वीकार करते हुए, मूक रहकर भी अपने दासत्व को कहते हुए . . . एक ओर रखी मदिरा की बोतल उछाल दी जयपाल ने उसकी ओर, साधना की पूर्णता और उसकी अभ्यर्थना को स्वीकार करने के लिए . . . तंत्र की एक ऐसी क्रिया जिसका रहस्य तो केवल और केवल **परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी** के पास ही सुरक्षित बचा रह गया था और **जिसे उन्होंने प्राप्त किया था अपने साधक जीवन में आद्य शंकराचार्य की आत्मा को अपने योग बल से प्रत्यक्ष कर** . . . रोम-रोम हर्षित हो रहा था, मानों शरीर का एक-एक कण कह रहा हो कि आज मैंने एक अप्रतिम साधना प्रत्यक्ष कर स्वयं तो एक सिद्धि प्राप्त की ही है, एक दुर्लभ शक्ति को हस्तगत किया ही है, साथ ही आज मैंने अपने गुरु के गौरव को भी प्रवर्धित किया है।

"तुझे जीवन भर मेरा गुलाम बन कर रहना ही होगा। दृष्टि झुकाए, भय से कांपते हुए . . . मेरे सामने चौबीस घंटे खड़ा रहना ही पड़ेगा।

. . . धिक्कार है मेरे जीवन पर और अपमान है मेरे गुरु का. . . यदि मैं आज्ञा दूं और बावन भैरव नृत्य न करने लगे . . . वीर वेताल तो फिर बहुत मामूली सी सिद्धि है मेरे लिए. . ."

वेताल साधना मूलतः तांत्रिक साधना होने के उपरांत भी यदि इस ढंग से की जाए तो एक सौम्य साधना है। **फाल्गुन कृष्ण तृतिया वेताल सिद्धि का अद्भुत दिवस है** लेकिन किसी भी रविवार को यह साधना सम्पन्न कर व्यक्ति अदृश्य रूप में एक ऐसा रक्षक प्राप्त कर लेता है कि फिर उसे जीवन में किसी प्रकार का भय रह ही नहीं जाता। **पूर्ण वेताल सिद्धि के उपरांत साधक ऐसे कार्य सम्पन्न कर सकता है जो कि चमत्कार पूर्ण, अचरज भरे ही कहे जा सकते है,** वेताल के कंधो पर बैठ कर हजारों मील की दूरी पलक झपकते ही पार कर लेना। भविष्य के बारे में कोई भी ज्ञान प्राप्त कर लेना या धन और भोजन की निरंतर प्राप्ति का जरिया बना लेना, उसके लिए बाएं हाथ का खेल हो जाता है। वास्तव में प्रत्येक गुरु अपने शिष्य को आंशिक रूप में ही सही, वेताल सिद्धि अवश्य प्रदान करते हैं। जिससे वह जीवन में निश्चिंत और जीवन यापन के प्रति चिंतामुक्त होकर साधना कर सके।

वेताल साधना के लिए आवश्यक है कि साधक हर हाल में **वेताल दीक्षा** प्राप्त कर ले क्योंकि बिना इस दीक्षा को प्राप्त किए साधक के अंदर वह साहस और बल आ ही नहीं सकता कि वह वेताल के तेजस्वी स्वरूप का दर्शन कर सके। अधिकांशतः वेताल सौम्य स्वरूप में ही उपस्थित होता है, लेकिन उसका वास्तविक स्वरूप विकराल और भयानक है। इसी से कमजोर दिल वाले साधकों और वृद्ध या अशक्त व्यक्तियों को वेताल साधना करने से पूर्व पूज्य गुरुदेव से अनुमति प्राप्त करना आवश्यक हो जाता है।

इस प्रयोग में न तो कोई पूजा है और न कोई विशेष सामग्री की आवश्यकता होती है, तांत्रिक ग्रंथों के अनुसार इस प्रयोग में केवल तीन उपकरणों की जरूरत होती है। **१. सिद्धिप्रदायक वेताल यंत्र २. सिद्धिदायक वेताल माला और ३. भगवान शिव अथवा महाकाली का चित्र।** इसके अलावा साधक को अन्य किसी प्रकार की सामग्री जल पात्र या कुंकुम आदि की जरूरत नहीं होती, यह साधना रात्रि को संपन्न की जाती है, परंतु साधक भयभीत न हो, और न विचलित हो, वह

निश्चिन्त रूप से इस साधना को संपन्न कर सकता है।

साधक रात्रि को दस बजे के बाद जल से स्नान कर ले और स्नान करने के बाद अन्य किसी पात्र या वस्त्र को छुए नहीं, पहले से ही धो कर सुखाई हुई काली धोती को पहिन कर काले आसन पर दक्षिण की ओर मुंह कर घर के किसी कोने में या एकांत स्थान में बैठ जाए।

फिर सामने एक लोहे के पात्र या स्टील की थाली में **वेताल यंत्र** को स्थापित कर दे जो कि मंत्र सिद्ध एवं प्राणश्चेतना युक्त हो। इसके पीछे भगवान शिव अथवा महाकाली का चित्र फ्रेम में मढ़वा कर स्थापित कर दें, फिर साधक हाथ जोड़ कर वेताल का ध्यान करें।

ध्यान

धूम्र-वर्ण महा-कालं जटा-भारान्वितं यजेत्
त्रि-नेत्रं शिव-रूपं च शक्ति-युक्तं निरामयं।
दिगम्बरं घोर-रूपं नीलांछन-चय-प्रभम्
निर्गुणं च गुणाधारं काली-स्थानं पुनः पुनः।

ध्यान के उपरांत साधक **वेताल माला** से निम्न मंत्र की २१ माला मंत्र जप संपन्न करे। यह मंत्र छोटा होते हुए भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है और **मुण्ड माला तंत्र** में इस मंत्र की अत्यन्त प्रशंसा की गयी है।

वेताल मंत्र

।। ॐ वेताल यच्छ यच्छ क्षं क्षीं क्षूं क्षैं क्षः स्वाहा।।

जब मंत्र जप पूर्ण होता है, उससे पहले ही या मंत्र जप सम्पन्न होते-होते अत्यन्त सौम्य स्वरूप में वेताल स्वयं हाथ जोड़ कर कमरे में प्रगट होता है, तब पहले से ही लाकर रखे गए बेसन के चार लड्डुओं का भोग वेताल को लगा दे, और अपने हाथ में जो वेताल माला है वह उसके गले में पहिना दें, ऐसा करने पर वेताल वचन दे देता है, कि जब भी तुम उपरोक्त मंत्र ग्यारह बार उच्चारण करोगे, तब मैं अदृश्य रूप में उपस्थित होऊंगा और आप जो भी आज्ञा देंगे उसे पूरा करूंगा, ऐसा कह कर वेताल माला को वहीं छोड़ कर अदृश्य हो जाता है।

दूसरे दिन साधक प्रातःकाल उठ कर स्नान आदि से निवृत्ति होकर वेताल यंत्र, वेताल माला और वह भोग किसी मंदिर में रख दें, अथवा नदी तालाव या कुंए में डाल दें। महाकाली या भगवान शिव के चित्र को पूजा स्थान में स्थापित कर दें।

इस प्रकार करने पर वेताल साधना सिद्ध हो जाती है, और इसके बाद साधक जब भी मात्र ग्यारह बार मंत्र का उच्चारण करता है तो अदृश्य रूप में वेताल उसकी आंखों के सामने प्रकट होता है, और उस समय साधक उसे जो भी आज्ञा देता है, वेताल तत्क्षण उस आज्ञा का पालन कर साधक का कार्य सम्पन्न कर लेता है।

मैंने यम दूत को लाठी मारी

बात १९७१ की है। मेरे मन में गंगोत्री धाम तथा गोमुख के दर्शन करने का विचार आया। विचार आते ही यह सोच कर कि 'शुभ कार्य' में देरी नहीं करनी चाहिए, सो ही दूसरे दिन ज्येष्ठ मास पूर्णिमा सम्वत् २०२१ दिन मंगलवार दिल्ली से हरिद्वार, ऋषि केश से उत्तर काशी पहुंच गया। उत्तर काशी में एक रात रह कर 'पार-पत्र' प्राप्त किया, क्योंकि उन दिनों गंगोत्री से आगे जाने के लिए स्वीकृति प्राप्त करना अनिवार्य था। दूसरे दिन प्रातः बसें चलीं तथा सायंकाल 'लंका' नमक स्थान पर रात गुजारी क्योंकि उन दिनों बसें सीधी गंगोत्री तक नहीं जाती थीं। प्रातः जाह्नवी नदी पार कर भैरव घाटी पहुंचा। यहां से गंगोत्री केवल चार कि०मी० की दूरी पर तथा १०८०० फुट की ऊंचाई पर है। मैं पैदल सायं काल अकेला गंगोत्री पहुंच गया। रात सिंध पंजाब क्षेत्र में गुजारी। प्रातः स्नान आदि से निवृत्त हो कर गायत्री मंत्र के जप के पश्चात् गंगा मंदिर के दर्शन किए। ठंड इतनी अधिक थी कि शरीर में कम्पन पैदा हो रही थी। फिर भी कुछ यात्रियों से मुलाकात की तथा बातचीत में पता पड़ा कि कोई भी गोमुख चलने के लिए तैयार नहीं था। गोमुख यहां से १८ कि० मी० दूर दुर्गम पहाड़ों के बीच में से होकर जाना पड़ता है। रास्ते में १२ कि० मी० पर केवल एक आश्रम है, 'भोज वासा' उन दिनों यात्रियों के लिए केवल यही विश्राम गृह था। गोमुख भगीरथी का उद्‌गम स्थान है। महाराज भागीरथी के प्रयत्नों से यह उत्तर भारत में जीवों को जीवन दान देती है। मेरे मन ने मुझे कहा कि अकेला चला जा! गायत्री मां की कृपा से मैं अकेला चल पड़ा, केवल अपनी लाठी लेकर, जिसका होना अत्यंत आवश्यक है। सारा समय दुर्गम स्थान पार करता जा रहा था। मेरी जिह्वा गायत्री मंत्र का जाप जारी रखे हुए थी। मेरा मन श्रद्धा से ओत-प्रोत था। शीत पवन भी तीव्र गति से चल रही थी, मेरा मनोबल ऊंचा था । ठीक सायं ५ बजे गोमुख के दर्शन किए। यह स्थल ११५०० फुट की ऊंचाई पर है। यह दिन मंगलवार, ७ आषाढ़ (१५ जून १९७१) था। भगीरथी के उद्‌गम स्थान को देख कर मेरा मन उछल पड़ा। गायत्री मंत्र का जप करता रहा। मुझे नहीं मालूम कि वहां कितनी देर ठहरा, परंतु जब चेतना लौट आई तो उस समय ६ बज चुके थे। सूर्य अस्त हो चुका था। अंधेरा छाया हुआ था। वापस जाने का प्रयास किया परंतु रास्ता दिखाई नहीं दिया। आकाश में बादल छाए हुए थे। रात्रि के ८ बज चुके थे। चारों ओर भयानक तथा डरावने वातावरण का आभास हो रहा था। एका-एक बूंदा-बांदी आरंभ हो गई, बिजली कड़क कर चमक रही थी। ऐसी परिस्थितियों में अकेला मानव, खुले आकाश के नीचे बेसहारा! न कोई साथी!! बूंदा-बांदी के कारण ओवर कोट गीला हो चुका था। काल देवता विकराल रूप धारण किए खड़ा था। डर के मारे आंखें बंद कर ली तथा सिद्ध आसन लगाकर गायत्री जप आरम्भ कर दिया। अब मुझे कोई डर न था। अपने को मां की गोदी में बैठा पाया। मां की गोदी कितनी प्यारी थी, वर्णन करना कठिन है। मां बड़े प्रेम से मुस्करा रही थी।

ऐसे समय अचानक बड़ा शोर हुआ। दो व्यक्ति आपस में लड़ रहे थे। जिसका रूप विकराल था वह कह रहा था "मैं इसे ले जाऊंगा", दूसरा कह रहा था "ऐसा नहीं होगा", तब मैंने अपनी लाठी संभाली और गायत्री मंत्र पढ़ कर उसे दे मारी। वह आकृति अदृश्य हो गई तथा दूसरी मुस्करा कर अंतर्ध्यान हो गई, ऊपर देखा आकाश साफ था। बादल छंट चुके थे, चंद्रमा की चांदनी से सारी वादी प्रकाशमान हो रही थी, मेरा मन शांति का अनुभव कर रहा था। मैंने धन्यवाद दिया उस दैवी शक्ति को जिस ने इन कठिन परिस्थितियों में मेरा साहस ऊंचा बनाए रखा था।

चेला राम आर्य
१६/२६४, दक्षिणपुरी एक्स,
नई दिल्ली-६२

(पृष्ठ ४६ का शेष)

और शरीर पर अनोखी तांबई चमक बनी थी जिससे देखने वाला एक क्षण के लिए उसे ठिठक कर देखता ही रह जाता था।

उर्वशी के प्रत्यक्षीकरण की सबसे प्रामाणिक विधि महर्षि विश्वामित्र द्वारा प्रणीत पद्धति रही है जब उन्होंने उर्वशी को आज्ञा दी कि वह उनके आश्रम में उपस्थित होकर उसी प्रकार से नृत्य करे, जिस प्रकार वह देवराज इंद्र के दरबार में करती है। उसने हेठी से भर कर मना कर दिया। उस विख्यात महायोगी ने भी जिद ठान कर सर्वथा एक नूतन तंत्र की रचना ही कर दी और यही नहीं मेनका को अपनी पत्नी बना लिया। **किंतु नागा साधु द्वारा प्राप्त यह विधि तो महर्षि विश्वामित्र के तंत्र प्रयोग से भी अधिक तीक्ष्ण और शत - प्रतिशत प्रामाणिक है।** ऐसा हो ही नहीं सकता कि साधक इस प्रयोग को पूर्णता से सम्पन्न करे और उर्वशी शिख से लेकर नख तक अंग-अंग को सजा, यौवन और मादकता की मूर्ति बन कर साधक के समक्ष नृत्य न कर उठे . . . क्योंकि नागा साधुओं की पद्धति तो तंत्र से भी अधिक तीक्ष्ण और हठभरी रही है . . . उनके पास तो केवल और केवल प्रत्यक्षीकरण के ही उपाय हैं और वह भी पूरी मस्ती के साथ।

मैंने नागा साधु के बताए ढंग से ही एक रविवार की रात्रि को रात में एकान्त में बैठ कर लाल रंग के वस्त्र पहने और उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ गया तथा अपने सामने जमीन पर रक्त चंदन से **मुक्तामणि उर्वशी यंत्र** स्थापित कर दिया।

इस यंत्र के चारों कोनों में एक-एक **हकीक पत्थर** रख, बांई हथेली को उसके ऊपर स्थापित कर, दाहिने हाथ में **मूंगे की माला** से निम्न गोपनीय मंत्र की ११ माला मंत्र जप किया, यह मंत्र था --

मंत्र -

ॐ श्रौं उर्वश्यै आगच्छ प्राणाय जाग्रय फट्

क्योंकि यह नागा तंत्र की पद्धति है! . . .ऐसा हो ही नहीं सकता कि साधक इस प्रयोग को पूर्णता के साथ सम्पन्न करे और उर्वशी शिख से नख तक अंग - अंग श्रृंगार युक्त कर यौवन और मादकता की मूर्ति बन कर साधक के समक्ष नृत्य न कर उठे. . . . . . बिखर न जाए बेसुध सी होकर. . .

. . . मंत्र का पूरा होना ही था कि मेरे कमरे का दरवाजा खुला और एक प्रकार से जैसे उर्वशी विवश होकर और बंधकर मेरे आसन से थोड़ी ही दूर पर आकर बिछ सी गई, ज्यों कोई दौड़कर आए और पहुंचकर अपने शरीर को संभाल न पाए . . . यही तो दशा हो गई थी उसकी . . . **श्रृंगार, स्वेद के कणों से भीग गया था, कंचुकी तन से चिपक गई थी और सांसों के उतार-चढ़ाव से सुगठित विशाल वक्षस्थल ऊपर नीचे हो रहा था।** सारे तन में भूचाल सा आ गया था और उसका यह रूप भी कितना मनोहर और मन में स्फुरण पैदा करने वाला था, इसकी तो पाठक स्वयं कल्पना कर सकता है . . .

सौन्दर्य और यौवन मेरे चरणों में बिखरा पड़ा था . . . सच कहूं, मुझे खुद नहीं विश्वास था कि यह मंत्र इतना अधिक प्रभावशाली, इतना अधिक बाध्यकारी सिद्ध हो सकता है। ज्यों-त्यों स्थिति शांत हुई और उर्वशी मेरे चरणों में विनम्रता और सलज्जता की प्रतिमूर्ति बनी बैठी रही . . . एक प्रकार से मुझे उसकी इस विवशता पर दया आ रही थी। **नृत्य की कौन कहे, मैं उस बेचारी की इस दुर्दशा पर सोच में पड़ गया कहां देवराज इंद्र का स्वर्णमय रत्नजटित सभा कक्ष और कहां मेरी यह एकान्त सी कुटिया!** और उसमें भी देवराज इंद्र की सर्वश्रेष्ठ नृत्यांगना आज मेरे सामने इस प्रकार से भयभीत हिरणी की भांति बैठी हुई है . . . लेकिन साधक की मर्यादा होती है, व्यर्थ का अपमान और हेठी साधक के जीवन का अंग नहीं होता, मैंने उसे प्रेम और सम्मान दिया और एक प्रकार से उसका स्वागत किया क्योंकि साधना की स्थितियां एक अलग विषय थी। मेरे सामने उस समय पौरुषता और प्रतिष्ठा का प्रश्न था और सिद्ध होने के बाद तो वह मेरी प्रिया रूप में थी और अपनी प्रिया का सम्मान करना और स्नेह प्रकट करना-- यह भी पुरुषोचित लक्षण है।

और मै दावे से यह कह सकता हूं कि उर्वशी को प्रत्यक्ष करने की और जीवन भर के लिए उसका हृदय जीत लेने की यह विधि प्रामाणिक और सत्य है किसी भी तांत्रिक पद्धति से कहीं अधिक तीव्र सफलता दायक और प्रत्यक्ष रूप से उर्वशी को आंखों के सामने स्पष्ट कर देने के लिए मेरी अनुभूत है।

गौरी स्वरूप में महालक्ष्मी साधना

जीवन में शिवत्व अर्थात् सम्पूर्णता जो कि शिव भाव एवं लक्ष्मी भाव दोनों से युक्त हो . . .

शिव आराधना के साथ शिव की शक्ति गौरी की साधना करना नितांत आवश्यक है।

गौरी पूजन केवल स्त्रियों के लिए ही नहीं पुरुषों के लिए भी आवश्यक है. . .इस प्रकार

जब तक किसी वस्तु के मूल को, उसके बीज स्वरूप को नहीं पकड़ते हैं तब तक उस कार्य में पूर्णता नहीं आ सकती है। क्योंकि बीज अर्थात् मूल ही आधार है उस कार्य को तेजी से विकसित करने का जिस प्रकार कुण्डलिनी जागरण में साधक सबसे पहले मूलाधार में अर्थात् मूल में, कुण्डलिनी रूप में छिपी शक्ति को जाग्रत करता है और फिर एक-एक चक्र को जाग्रत करता हुआ सहस्रार अर्थात् आज्ञा चक्र तक पहुंचता है, तभी उसकी कुण्डलिनी पूर्ण रूप से जाग्रत हो पाती है।

ठीक इसी प्रकार जब आदि शक्ति उत्पन्न हुई तो उन्होंने तीन स्वरूप प्रकट किए महाकाली, महासरस्वती और महालक्ष्मी। यह महालक्ष्मी स्वरूप, मूल रूप से तो आदि शक्ति का गौरव स्वरूप है जो कि सारे संसार का पालन करती है। इसलिए जब शिव की पूजा की जाए तो उस समय शिव के इस चैतन्य स्वरूप जिसे पार्वती कहते हैं, गौरी कहते हैं, दक्षा एवं हिम पुत्री विभिन्न रूपों में जाना जाता है; पूजा करना आवश्यक है।

हर गौरी साधना

महाशिव रात्रि केवल एक विशेष दिवस का पर्व नहीं है , यह भगवान शिव और गौरी के मिलने का, उनके विवाह का दिवस है और इसलिए इसे उत्सव के रूप में बड़े राग - रंग के साथ मनाया जाता है। जब तक पार्वती का पूजन नहीं किया जाता तब तक शिवरात्रि को शिव की कितनी ही प्रवल साधना क्यों न कर लें, कितने ही मंत्र जप क्यों न कर लें, यह साधना अधूरी ही रहती है अतः यह बात विशेष ध्यान रखने योग्य है कि शिवरात्रि के दो दिन बाद **''हर - गौरी सिद्दि दिवस ''** को गौरी पूजन विशेष विधि - विधान से अवश्य सम्पन्न करना चाहिए।

गौरी पूजन स्त्रियों के लिए तो विशेष महत्व का है ही लेकिन उसी प्रकार पुरुष साधकों के लिए, इसके महालक्ष्मी स्वरूप की साधना, जीवन में महालक्ष्मी को इस विशिष्ट स्वरूप में पूर्ण रूप से प्राप्त करने की साधना है।

क्योंकि जहां गौरी अपने पूर्ण स्वरूप के साथ है वहां शिव भी वास करते हैं, वहां साहस रूपी भगवान कार्तिकेय और वैभव रूपी गणपति अवश्य ही विराजमान रहते हैं। अतः इस एक साधना को सम्पन्न करने से तीन अन्य देवों की साधना का सुफल प्राप्त होता है। जहां भगवान गणपति हैं, वहां ऋद्धि- सिद्धि तो उपस्थित रहेंगी ही।

इस वर्ष शिवरात्रि १०.०३.६४ (फाल्गुन कृष्ण १३) को है और उससे दो दिन बाद १२.०३.६४ (फाल्गुन कृष्ण ३०) को प्रत्येक साधक चाहे वह शैव अथवा वैष्णव हो,' गृहस्थ अथवा सन्यासी , विवाहित हो अथवा अविवाहित, पुरुष हो अथवा स्त्री, उसे गौरी के इस

महालक्ष्मी स्वरूप को जिसे **त्रैलोक्य मोहन स्वरूप** कहा गया है साधना अवश्य ही करनी चाहिए, क्योंकि भगवान शिव ने भी स्वयं गौरी के महालक्ष्मी स्वरूप की साधना इस दिन सम्पन्न की थी।

साधना विधान

इस दिन प्रातः साधक स्नान कर, शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण करे और प्रसन्न मन से कामना पूर्ति की प्रार्थना के साथ अपने पूजा स्थान में प्रवेश करे अपने सामने शिव और पार्वती का संयुक्त चित्र रखे। पूजा स्थान में सुगन्धित पुष्प लाकर रखे तथा अपने सामने एक बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा कर उस पर ताम्र पात्र में पुष्पों का आसन देकर **''त्रैलोक्य मोहन गौरी महायंत्र''** स्थापित करे। सबसे पहले साधना में संकल्प ले और विनियोग करे। गौरी यंत्र का पूजन चंदन और पुष्पों से करना है। तदन्तर **आठ लक्ष्मी चक्र** स्थापित करे। ये लक्ष्मी चक्र गौरी के आठ शक्तियों के प्रतीक स्वरूप हैं। ये शक्तियां हैं-**ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी, चामुण्डा, और महालक्ष्मी।**

इन आठों को आठ दिशाओं में स्थापित करना है और इनके मंडल के मध्य विराजमान गौरी का ध्यान करना है। अब साधक शिव पूजा भी सम्पन्न करे तथा पंचाक्षरी शिव मंत्र **''नमः शिवाय''** की एक माला मंत्र जप अवश्य सम्पन्न करे।

नमो ब्रह्म स्वरूपाय सती प्राणपराय च।
नमस्याय च पूज्याय हृदाधाराय ते नमः।।

ब्रह्म स्वरूप, भगवती पार्वती के लिए प्राणों से भी अधिक प्रिय वन्दनीय, पूज्य तथा हृदयाधार आप श्री शिव को प्रणाम है।

विनियोग-

अस्य श्री गौरी मंत्रस्य अजऋषिः निचृदगायत्री छन्दः गौरी देवता ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः मम अखिलकार्य सिद्धये महालक्ष्मी प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः।

अब अपने हृदय में अपनी कामनापूर्ति की प्रार्थना करते हुए, पुनः गौरी स्वरूपा महालक्ष्मी का ध्यान कर इस त्रैलोक्य मोहन महालक्ष्मी मंत्र का जप प्रारम्भ करें-

मंत्र

ऐं ह्रीं श्रीं आद्यलक्ष्मी महागौरी शिवशक्ति ह्रीं नमः

यहां यह बात ध्यान रखें कि गौरी साधना में **स्फटिक माला** से मंत्र जप किया जाता है और शिव साधना में **रुद्राक्ष माला** से मंत्र जप किया जाता है।

इस दिन इस मंत्र की पांच माला जपना अनिवार्य है और जो साधक महा शिव रात्रि का पूजन करते हों उस दिन भी उन्हें शिव पूजन के साथ इस सिद्ध यंत्र की पूजा अवश्य करनी चाहिए। आठों लक्ष्मी चक्र एक लाल कपड़े में बांधकर शिवालय में अर्पित कर देना चाहिए।

जो साधक वशीकरण साधना में इच्छुक हों, वे इस मंत्र का सवा लाख जप कर मधु, घी, शर्करा के साथ कमलगट्टे के बीज मिलाकर हवन करें। जो साधक **इच्छित विवाह** की कामना करते हैं वे अशोक वृक्ष की लकड़ियों पर घी और चावल मिलाकर यज्ञ सम्पन्न करें। **पुलस्त्य संहिता** में तो यहां तक लिखा है कि जो साधक इस प्रकार का मंत्र अनुष्ठान और यज्ञ अनुष्ठान आदरपूर्वक करता है उसे लक्ष्मी छोड़ती नहीं और उसमें वशीकरण की शक्ति आ जाती है।

अघोरी के शव साधना

> **"निश्चय ही ये नरमुण्ड उन्हीं लोगों के होंगे जो इससे पहले इस अघोरी के हाथों फंसकर यहां आने को मजबूर हुए होंगे, आज मेरा भी नरमुण्ड इसी कड़ी में पिरोकर यह अघोरी अपनी माला के १०८ मनके पूरा करेगा"**
>
> **... सोचकर आंखों के सामने अंधेरा छा गया हरिराम जी के, सारा शरीर पीपल के पत्ते की तरह कांप गया, किंतु करें भी तो क्या?**

हरिराम जी एक सीधे-साधे गायत्री उपासक थे और उन्हें यह ज्ञान भी हो गया था कि मानव के अष्टपाश (आशा, तृष्णा, जुगुप्सा, भय, विषय, घृणा, मान और लज्जा) उसकी मुक्ति में बाधक हैं। अब उनकी उद्विग्नता बढ़ गयी थी। वे सोचते थे कि कब इन अष्टपाशों से मुक्त होकर ब्रह्म में लीन हो सकूंगा, पर इन पाशों से मुक्त होने की आधारभूत साधना **अघोर साधना** है जिसके लिए श्मशान विचरण और श्मशान में साधना आवश्यक है। हरिराम जी के लिए ऐसी स्थिति की कल्पना ही कठिन थी। वे मुक्त अवश्य होना चाहते थे परंतु सात्विक साधना के द्वारा। अघोर शब्द से ही उन्हें घृणा थी।

इसी उधेड़वुन में उन्होंने भगवान विश्वनाथ जी के दर्शन करने का निश्चय कर लिया और काशी पहुंच गए। सीधे गंगा घाट पर जाकर जी भर कर स्नान किया और जल पात्र लेकर भगवान विश्वनाथ के मंदिर में पहुंच गए। मंदिर में काफी गहमागहमी व भीड़ थी परंतु रास्ता निकालकर उन्होंने वह गंगाजल बाबा विश्वनाथ पर उड़ेल दिया और शिव स्तुति करते-करते ही गाल बजाकर भगवान शिव के ध्यान में लीन हो गए।

कितना समय बीत गया यह पता नहीं, पर जब आंखें खुलीं तो मृगचर्म पहने एक सन्यासी को खड़े पाया **लम्बी और भूरी जटाएं पीठ पर बिखरी हुई, साधना के भार से भरा हुआ चेहरा, बड़ी-२ लाल सुर्ख आंखें। एक हाथ में चिमटा और दूसरे में कमण्डल, मानों बाबा विश्वनाथ ही साक्षात् सामने आ गए हों।** उन्होंने सरल चित्त से सन्यासी को प्रणाम किया तो सन्यासी ने दोनों आंखें मिचका कर भरपूर दृष्टि से हरिराम जी को देखा और आगे बढ़ गया।

अनायास बिना इच्छा के भी हरिराम जी के पांवों ने सन्यासी का अनुसरण कर लिया। उन्हें कुछ होश नहीं था क्यों वे पीछे भाग रहे हैं और होता भी कैसे? सन्यासी तो मंत्र पाश में बांधकर उनके पूरी शरीर को खींच रहा था। लगभग पौन घंटे की दौड़ के बाद गंगा के

उस पार श्मशान के बीच सन्यासी रुक गया। सामने एक छोटी सी झोंपड़ी थी जो भीतर से कंकाल और नर मुण्डों से सजी हुई थी। पहली बार हरिराम जी को लगा कि वे गलत स्थान पर आ गए हैं और यह मात्र सन्यासी नहीं बल्कि पक्का अघोरी है।

> **''ग्यारह बिंदियां प्रतीक हैं एकादश रुद्रों की और इन्हीं स्थानों से काटकर भगवान रुद्र को तेरा भोग लगाया जाएगा''**
> **हा ह ह हा . . . और तभी. . .**
> **. . . किन्तु यह शरीर बड़ी मुश्किल से प्राप्त हुआ है और यह पैशाची शरीर है . . .**

हरिराम जी ने बलपूर्वक पीछे मुड़ने की कोशिश की ही थी कि अघोरी के मुंह से अजस्र गालियां निकलीं और एक झन्नाटेदार थप्पड़ उसने हरिराम जी के गाल पर जड़ दिया। हरिराम जी की आंखों के सामने तारे नाच उठे और दूसरे ही क्षण वे धम्म से जमीन पर बैठ गए।

यहां तक तो फिर भी ठीक था, पर अचानक वह अघोरी आगे बढ़ा और हरिराम जी को खींचता हुआ बोला, ''तू कपालेश्वर का प्रसाद है। यह तो तेरा सौभाग्य है कि तू महाकाल का भक्ष्य बनने जा रहा है। भागने की चेष्टा करना व्यर्थ है। मैंने तुझे कील दिया है अतः रुद्र भक्ष्य के लिए तैयार हो जा। अब तक मैं १०७ लोगों को भक्ष्य दे चुका हूं जिनके नर मुण्ड सामने लटके हैं। आज १०८ की संख्या पूरी होगी और इस पूर्णाहुति के साथ ही मेरी साधना भी सम्पन्न हो जाएगी'' कहते-कहते अघोरी जोरों से अट्टहास कर उठा।

हरिराम जी का खून अंदर ही अंदर जम गया, आंखें बंद हो गईं और शरीर पीपल के पत्ते की भांति कांपने लगा। सामने दूसरी ओर उस अघोरी ने कुटिया के पास ही गड्ढा खोदकर तीन - चार मदिरा की बोतलें निकालीं और एक के बाद एक गले के नीचे उतार दीं।

बड़ी मुश्किल से हरिराम जी की आंखें खुली। उस चांदनी रात में अघोरी की लाल सुर्ख डरावनी आंखें ऐसी दिखाई दे रही थीं जैसे कि उनमें से खून टपक रहा हो। दूसरे ही क्षण अघोरी ने मृग चर्म उतार फेंका और गंगा में कूद गया। तीन - चार डुबकियां लगाकर बाहर निकला और तुरंत जली हुई चिता में से राख लेकर पूरे शरीर पर मल ली। **पास में ही चट्टान पर सिंदूर बिखरा हुआ था, सिंदूर से ललाट पर लम्बा सा तिलक लगाया और कुटिया के अंदर जाकर अस्थियों की माला पहन ली। इस वीभत्स रुप को देखकर हरिराम जी के गले से चीख निकल पड़ी।** एक ही झटके में अघोरी ने हरिराम जी को उठा कर खड़ा कर दिया। अब वह अघोरी मस्ती में उन्हें खींचता हुआ गंगा तक ले गया और दूसरे ही क्षण उनके कपड़े खींचकर फाड़ दिए और सर्वथा नग्न कर दिया और तीन चार डुबकियां लगवा दी, फिर उसी रौ में खींचता हुआ चट्टान पर लाकर बिठा दिया। तभी न जाने कहां से उसका एक अघोरी शिष्य निकल आया। उसने चिता से गर्म-गर्म राख लाकर हरिराम जी के सारे शरीर पर मल दी, सिंदूर का तिलक किया और पूरे शरीर पर ग्यारह बिन्दियां सिंदूर से लगा दी और बोला ''ये ग्यारह बिन्दियां एकादश रुद्रों की प्रतीक हैं और इन ग्यारह स्थानों से ही काट-काट कर भगवान पशुपति को तुम्हारा भोग लगाया जाएगा।''

हरिराम जी का शरीर सफेद पड़ता जा रहा था। उनके अंगों का पूजन प्रारम्भ हो गया था। सर्वप्रथम अघोरी ने भूतशुद्धि व आत्म शुद्धि से उनके आंतरिक शरीर को पवित्र किया और उड्डामरेश्वर तंत्र के अनुसार उनके बाह्य शरीर को दिव्य बनाया। इसके बाद खड्ग को गंगाजल से धोकर उस पर स्वरक्त से तिलक किया और महाकाल भैरव का आह्वान करना आरंभ किया।

भैरव स्तुति समाप्त कर ज्योंही अघोरी हरिराम जी का वध करने को उद्यत हुआ कि पीछे से जोरों की हुंकार ध्वनि सुनाई दी। पलट कर उसने देखा तो उसका ही गुरु भाई खड़ा था। उसने अपने कंधे पर एक मृत मनुष्य का शरीर डाल रखा था, जो अभी ताजा ही लगता था।

''यह शरीर बड़ी मुश्किल से प्राप्त हुआ है और यह पैशाची शरीर है, मैंने परीक्षण कर लिया है।'' गुरु भाई उतावली से बोला।

''पैशाची शरीर'' शब्द सुनते ही अघोरी की आंखों में चमक दौड़ गई। उसने हरिराम को धक्का दे दिया और उनकी जगह उस मुर्दे शरीर को लिटा दिया। सर्वप्रथम अघोरी ने गंगाजल से उस शरीर को स्नान करा कर पवित्र किया। वह लगभग बीस -बाईस वर्षों का जवान शरीर था आंखें विस्फारित सी फटी हुई थीं।

> **''यह तो तेरा सौभाग्य है कि तू भगवान महाकाल का प्रसाद बनने जा रहा है, अतः भागने की चेष्टा मत करना। वैसे भी मैंने तुझे कील दिया है।''**

''शायद कुछ घण्टों पहले ही इसकी मृत्यु हुई होगी'', हरिराम जी दहशत से भर उठे।

(शेष पृष्ठ ७७ पर)

जिन्हें हम अंधविश्वास कहकर टाल देते हैं वह हमारी न्यूनता है क्योंकि हमने उसको समझा ही नहीं। उनके मूल में भी वैज्ञानिक तथ्य छिपे रहते हैं। बिल्ली का रास्ता काटना या छींक होने पर अपशकुन अनुभव करना अथवा अकारण कुत्तों का जोर-जोर से रोना, अंग फड़कना आदि अंधविश्वास नहीं अपितु इनके पीछे ठोस वैज्ञानिक सत्य है, आवश्यकता है उसे समझने की और उसके वैज्ञानिक तथ्यों को पहचानने की. . .

जटिल समस्याओं का समाधान साधारण से दिखने वाले आदिवासियों के तंत्र प्रयोगों से

आज के युग में हम अपने-आप को बहुत ज्यादा बुद्धिमान समझने लगे हैं और ३०० वर्षों की अंग्रेजी दासता ने हमें अपनी ही जड़ों से काट दिया है। अंग्रेजों ने हमारी मानसिकता पर भी आक्रमण कर हमारे पूर्वजों से हमें अलग - थलग कर दिया है।

हमने यह मान लिया है कि पश्चिम ही सर्वोपरि है और समस्याओं का समाधान विज्ञान के माध्यम से ही हो सकता है। पश्चिम में प्रति वर्ष ४२ प्रतिशत से भी ज्यादा लोग आत्महत्या कर लेते हैं, अमेरिका जैसे देश में भी ७० प्रतिशत से ज्यादा लोग गरीबी की रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे हैं और पिछले सर्वेक्षण में आंकड़े उपलब्ध हैं कि अमेरिका में ८२ प्रतिशत लोग धर्म में विश्वास करते हैं तथा अपने पूर्वजों के रीति-रिवाजों या उनके बताए हुए टोटकों पर यकीन करते हैं।

आखिर क्यों?

जब कि उनके जीवन में बाधाएं या परेशानियां आती हैं तो वे उन बाधाओं के निराकरण के लिए, उनके पूर्वजों ने जो टोटके अपनाए हैं उन टोटकों को ही वे भी अपनाते हैं, और वे यह स्वीकार करते हैं कि आज के युग में भी इन टोटकों से हम अपनी समस्याओं से मुक्ति पा सकते हैं।

आदिवासियों के टोने-टोटके -

विज्ञान भले ही कितनी प्रगति कर ले यह एकतरफा प्रगति है, हमारे जीवन के सुख-दुःख से इस विज्ञान का कोई लेना-देना नहीं है, हमारे जीवन की छोटी-मोटी समस्याओं का समाधान इन वैज्ञानिक यंत्रों के माध्यम से सम्भव प्रतीत नहीं होता।

हमारे पूर्वज या आदिवासी भले ही अशिक्षित हों, निर्धन हों, पश्चिम की चकाचौंध से ग्रस्त न हों पर फिर भी वे हम से ज्यादा सुखी थे। उनके जीवन में तनाव मात्र ८ प्रतिशत है, उनके जीवन की समस्याओं से तुलना करें, तो वे हमसे ज्यादा सुखी, हमसे ज्यादा आनन्दमय और हमसे ज्यादा अनुकूल जीवन जी रहे हैं।

टोने-टोटकों का आधार अन्धविश्वास नहीं। ये पूर्णतः विज्ञान पर आधारित हैं और इनके परिणाम भी अनुकूल अनुभव होते हैं। आज का पढ़ा लिखा सभ्य शहरी व्यक्ति भले ही इसको न माने, परन्तु यदि इन टोने-टोटकों के मूल में जाकर देखें तो ये हमारी समस्याओं के समाधान में पूरी तरह से सहायक हैं और रोजमर्रा के जीवन में जो छोटी-मोटी बाधाएं आती हैं, उनका समाधान आदिवासियों के इन टोने-टोटकों में मिल जाता है।

हम एक बार प्रयत्न करके तो देखें और फिर प्रयत्न करने में हर्ज ही क्या है? मैंने तो अपने जीवन में इन टोने-टोटकों को जब-जब भी आजमाया है, मुझे तो पूर्णतः अनुकूल फल मिला है। नीचे मैं मध्यप्रदेश में रहने वाले आदिवासियों के टोने-टोटकों में से कुछ टोटके लिख रहा हूं जो आजमाये हुए हैं, जो अचूक हैं, और जिनके अनुकूल परिणाम मैंने अनुभव किए हैं।

रोग मुक्ति के लिए -

कई बार डॉक्टरों का इलाज करने के बावजूद भी रोगी ठीक नहीं हो पाता या रोग का पता ही नहीं चलता और शरीर दिनों-दिन कमजोर होता जाता है, ऐसी स्थिति में मैंने अपने भाई के लिए सम्बन्धित टोटके का प्रयोग किया था और मेरा भाई जो हजारों रुपयों की दवाईयों से भी ठीक नहीं हुआ था वह इस टोटके से पूर्णतः निरोग और स्वस्थ हो गया।

इसमें **११ हकीक** का प्रयोग होता है, ये हकीक विशेष प्रकार के होते हैं। नित्य प्रातः काल उठकर तांबे का एक लोटा जल से भरकर रोगी के ऊपर १०१ बार घुमा दें और ११ बार एक हकीक घुमा दें, फिर इस हकीक पत्थर और पानी के लोटे का जल, जहां चार रास्ते मिलते हैं, वहां पर डाल दें, नित्य नया हकीक प्रयोग में लें। इस प्रकार ११ दिन में वह स्वस्थ होने लगता है।

धन प्राप्ति प्रयोग -

यदि घर में गरीबी या दरिद्रता हो और प्रयत्न करने पर भी दरिद्रता समाप्त नहीं हो रही हो तो आदिवासी इसके लिए एक टोटके का प्रयोग करते हैं।

अमावस्या की रात्रि को तेल का एक दीपक लगाकर घर के दरवाजे के पास रख दें और उसके चारों ओर **११ ''तांत्रोक्त फल''** रख दें। पहले प्रत्येक तांत्रोक्त फल पर सिन्दूर की बिन्दी लगा दें, फिर घर का मुखिया और उसकी पत्नी दोनों हाथ जोड़कर दरिद्रता से प्रार्थना करें कि वह हमेशा-हमेशा के लिए घर से चली जाए और भगवती लक्ष्मी से प्रार्थना करें कि वह मेरे घर में आएं तथा स्थायी रूप से निवास करें, जिससे कि मेरे जीवन में सुख, सफलता और समृद्धता आ सके।

फिर सुबह लगभग ४ या ५ बजे उठकर उस तेल के दीपक और ११ तांत्रोक्त फल ले जाकर जहां तीन रास्ते मिलते हों, वहां पर रखकर वापिस आ जाएं। वापिस लौटते समय पीछे मुड़कर नहीं देखें तो उसी दिन से उनके घर में सुख, सौभाग्य और समृद्धि आने लगती है एवं अनुकूल अवसर प्राप्त होने लगते हैं।

तांत्रिक बाधा मुक्ति प्रयोग -

यदि किसी ने घर पर या व्यापार पर रोक लगा दी है अथवा घर में कलह और तनाव है या प्रयत्न करने पर भी व्यापार में उन्नति नहीं हो रही है, तो समझ जाना चाहिए कि जरूर किसी ने घर पर या व्यापार पर तांत्रिक प्रयोग करा रखा है। इसके लिए भी आदिवासियों के पास अचूक उपाय हैं।

किसी भी रविवार से यह प्रयोग प्रारम्भ होता है और प्रत्येक

रविवार को यह प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार चार रविवार यह प्रयोग होना चाहिए।

काली हकीक माला लेकर उसे एक थाली में रख दें और माला के बीच में एक दीपक लगा दें। फिर माला के प्रत्येक मनके पर सिन्दूर का तिलक करें और यह प्रार्थना करें कि मेरे घर में या दुकान में जो तांत्रिक बाधा है वह दूर हो और मेरा जीवन अनुकूल रहे।

फिर रात को १० बजे उस माला को और दीपक को गांव के बाहर रख दें या कहीं पर भी जमीन में खोदकर माला और दीपक को डाल दें तथा गड्ढे को बंद कर दें। इस प्रकार चार रविवार अर्थात् चार -चार प्रयोग करने से निश्चय ही किसी भी प्रकार की तांत्रिक बाधा दूर हो जाती है। **यह हकीक माला आदिवासियों के तांत्रिक मंत्र से सिद्ध होनी चाहिए, तभी इसका प्रभाव होता है।**

वशीकरण प्रयोग -

किसी भी व्यक्ति को, पति या पत्नी को, प्रेमी या प्रेमिका को, शत्रु या मित्र को पूर्णतः अपने वश में करने के लिए यह प्रयोग सम्पन्न किया जाता है। यदि लड़की गलत रास्ते पर जा रही हो, या पुत्र आज्ञा पालन नहीं कर रहा हो तब भी इस प्रयोग को किया जा सकता है। **इस प्रयोग का कोई साइड इफेक्ट या दुष्प्रभाव नहीं होता,** अपितु जिस उद्देश्य के लिए यह प्रयोग किया जाता है, उस कार्य में पूर्णतः अनुकूलता प्राप्त होती है और जिस पर हम वशीकरण प्रयोग कर रहे हैं, वह हमारे अनुकूल हो जाता है।

एक कागज पर सिन्दूर से उस पुरुष या स्त्री का नाम लिख देना चाहिए। जिसे हमें वश में करना है। फिर **कमल गट्टे की माला** से निम्न मंत्र का जप १०८ बार करना चाहिए। आदिवासियों से इस सम्बन्ध में जो मंत्र मिला है वह निम्न प्रकार से है।

मंत्र -

ॐ ऐं ई ऊं अमुकं वश्यं
वश्यं ऊं ई ऐं फट्

जब मंत्र जप पूरा हो जाए तो रात को १० बजे के बाद उस माला को किसी चौराहे पर रख देना चाहिए और कागज पर जो सिन्दूर से नाम लिखा था, उस सिन्दूर से अपने ललाट पर तिलक कर, कागज को दक्षिण दिशा की ओर फाड़ कर फेंक देना चाहिए।

ऐसा करने पर निश्चय ही वशीकरण प्रयोग सिद्ध होता है और वह चाहे कितना ही कठोर हो फिर भी उसका मन पिघल जाता है और हमारे अनुकूल बन जाता है। पांच - सात दिनों में ही उसकी तरफ से अनुकूल समाचार प्राप्त हो जाते हैं।

६ इंच का एक छोटा सा अंकुश पूरे हाथी को अपने नियंत्रण में कर लेता है। ठीक इसी प्रकार छोटा सा भी टोना-टोटका पूरे जीवन को बदलने में सहायक होता है . . .
. . . और ये सभी टोटके पूरी तरह से निरापद भी हैं।

भाग्योदय प्रयोग -

यदि हमारी कोई इच्छा है वह पूरी नहीं हो रही है वह चाहे प्रमोशन से सम्बन्धित हो, या किसी और वजह से, तब यह प्रयोग सम्पन्न किया जाता है।

प्रयोग करने वाला व्यक्ति रविवार के दिन प्रातः काल उठकर, अपने पूजा स्थान में **सात लघु नारियल** एक पंक्ति में रखे और प्रत्येक नारियल पर कुंकुम (रोली) से तिलक करे और प्रार्थना करे कि मेरा अमुक कार्य सफल हो जाए।

इस प्रकार सात दिन करे। सातवें दिन प्रयोग करने के बाद उन सातों नारियलों को ले जाकर किसी शिव मंदिर में शिव के सामने चढ़ा दे अथवा किसी अन्य मन्दिर में दे दे।

ऐसा करने पर यह प्रयोग सम्पन्न हो जाता है और उसकी जो इच्छा या आकांक्षा होती है, वह पूरी हो जाती है।

इसके अलावा भी आदिवासियों के पास कई अन्य टोने-टोटके होते हैं, जैसे - किसी से मिलने के लिए जाना है तो घर के आगे सिन्दूर छिड़क दें और उस पर पांव रखकर जाएं तो अवश्य ही मिलने वाले से कार्य सिद्धि हो जाती है।

यदि मुकदमा चल रहा है तो कोर्ट, कचहरी जाने से पूर्व सात काली मिर्च के दाने तथा थोड़ी सी शक्कर चबा कर जाएं तो उस दिन मुकदमे में अनुकूल वातावरण मिलता है। यदि किसी से पैसे मांगते हों और वह पैसे नहीं दे रहा हो, तो अगली बार उसके पास जाते समय सात लौंग जमीन पर रखकर, उस पर दाहिना पैर रखकर घर से निकलें और फिर उससे मिलें तो वह अनुकूल व्यवहार करता है और हम जैसा चाहते हैं, वैसा हो जाता है।

आज के इस युग में भी इन टोने-टोटकों का महत्व है, यदि आप स्वयं इनका उपयोग करके देखें, तभी आपको एहसास होगा कि वैज्ञानिक युग में भी इन टोने- टोटकों का महत्व निर्विवाद रूप से सत्य है।

मनोरंजन व ज्ञान का भरपूर खज़ाना

ज्ञान और मनोरंजन के जगत में नूतन प्रयोग। जटिल ज्ञान को सप्रमाण और शीघ्र सिद्धि प्रदान करने वाले तांत्रोक्त विधियों के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास . . . एक - एक पुस्तक मन मस्तिष्क को झकझोर देने वाली। सोचने के साथ प्रयोग विधि अपनाने को बाध्य कर देने वाली. . .

अप्सरा साधना

जो अभी तक केवल कथाओं का विषय रही, उसके यौवन और जीवन का रहस्य खोलती साधनाएं, साक्षात् उपस्थित होने के लिए बाध्य कर देने की विधियों को अपने में समेटे मानों गागर में सागर आ समाया हो. . .

त्रिजटा अघोरी

जिनकी तो कोई मिसाल ही नहीं। अद्‌भुत जीवन्त व्यक्तित्व और तंत्र के क्षेत्र में जाना- पहिचाना नाम अपनी तीव्रता, अक्खड़पन और दमखम से भरे व्यक्तित्व के कारण।

भुवनेश्वरी साधना

महासरस्वती का शीघ्र साध्य और प्रकट रूप साथ ही महालक्ष्मी के समस्त गुणों को अपने में समाए. . . इस को स्पष्ट करती लघु पुस्तक. . . सप्रमाण और दुर्लभ तांत्रोक्त पद्धतियों को समाहित करती हुई।

एस-सीरिज

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य ५/-

मैं बांहे फैलाए खड़ा हूं

एक सशक्त आह्वान, इस आपाधापी से भरे युग में सुखद छांव जैसी पूज्यपाद गुरुदेव की एक अनमोल कृति, अपने कथ्य एवं शैली के कारण जो एक कालजयी कृति बन गई है।

सिद्धाश्रम

इस धरा पर साक्षात् देवलोक! इन्द्र के वैभव और देवताओं के ऐश्वर्य से भी उच्च भूमि, जहां कोई भी साक्षात् अपनी आंखों से जाकर अनिवर्चनीय सुख का साक्षात्कार कर ही सकता है. . . आंखों देखा विवरण

हंसा! उड़हूं गगन की ओर

जहां शीतलता है, शांति है और प्राणों का उच्छवास है. . . ऐसे ही जगत में ले जाएगी साहित्य की यह दुर्लभ कृति, जिसे स्पर्श मिला है पूज्य गुरुदेव की वाणी का।

पूर्ण जानकारी के लिए
सम्पर्क

मंत्र-तंत्र - यंत्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी
जोधपुर, (राज.) - ३४२००१
फोन : ०२९१-३२२०६

अथवा

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव,
पीतमपुरा, नई दिल्ली-११००३४,
फोन-०११-७१८२२४८

प्रकाशन
अरविन्द प्रकाशन, जोधपुर

(पृष्ठ ७२ का शेष)

और मुर्दा जीवित हो उठा

अघोरी ने भूत सिद्धि, आसन सिद्धि और दिग्बन्धन कर भूतोपसान किया फिर शव के ऊपर चिता भस्म का लेप किया और शुक्राचारित कृत संजीवनी विया का मंत्र पाठ कर ज्योंही मूल मंत्र का उच्चारण कर अंजलि में लिए हुए रक्त जल को उसके ऊपर फेंका तो वह मुर्दा शरीर हरकत में आ गया और उठ बैठा। प्राणों का संचार देखते ही अघोरी खुशी से किलक उठा। वास्तव में ही यह पैशाची शरीर थी। अघोरी ने अपने गुरु भाई के साथ भैरव पूजन का उच्चारण किया -

''यो भूतानामित्यस्य कौण्डिन्य ऋषिरनुष्टुब्छन्दो नारायणो देवता भैरव नमस्कारे विनियोगः''

तत्पश्चात् हाथ में रक्त जल लेकर उसके ऊपर छिड़का -

''यो भूतानामधिपति र्यस्मिल्लोका अधिश्रिताः
य ई शे महास्तेन गृह्णामि त्वाम् हस्तयोः
ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय, कल्पान्त दहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुर्महसि।''

और दूसरे ही क्षण खड्ग का प्रहार उसकी गर्दन पर कर बलि के रूप में भैरव को समर्पित कर दिया।

थर-थर कांपते हुए हरिराम जी ने यह सब देखा और भय के मारे उनकी आंखें मुंद गई, यही प्रहार उनकी गर्दन पर होना था, परंतु न मालूम किस अदृश्य शक्ति से वह बच गए थे।

तत्पश्चात् अघोरी और उसके गुरु भाई ने भैरव नृत्य सम्पन्न किया और भैरव भोग में कुछ भाग उदरस्थ कर उस पैशाची शरीर को पुनः गंगा में प्रवाहित कर दिया। अब उन्हें हरिराम जी से कोई सरोकार न था।

भय से क्लान्त हरिराम जी तुरंत वहां से भागे, न मालूम कहां से पांवों में इतनी शक्ति आ गई थी और लगभग पांच किलोमीटर दूर स्थित पुल से गंगा के उस पर आ गए।

आज भी साधक हरिराम जी उस दृश्य का स्मरण कर कांप उठते हैं। उन्होंने अपने जीवन में प्रामाणिक अघोरियों की शव साधना देखी है, संजीवनी विया का चमत्कार देखा है और आज भी इन रोमांचक अनुभवों को सुनाते समय उनकी आंखों में अनोखी चमक छा जाती है।

(पृष्ठ २३ का शेष)

प्रकार से समय का अपव्यय हो तो उसके व्यापार पर असर पड़ता ही है। केवल व्यापारी ही नहीं सामान्य वर्ग भी राज्यपक्ष से विवाद से फंसना नहीं चाहता क्योंकि सामान्य व्यक्ति के पास इतने साधन नहीं होते जिससे वह पूरे राजतंत्र और उसकी जटिलताओं से बच कर निकल सके। ऐसे में क्या उपाय शेष रह जाता है? क्या व्यक्ति ऐसे ही विभिन्न कार्यालयों के चक्कर काटता रहे और अपने जीवन के सुख चैन शांति के क्षण दिन-दिन भर कोर्ट कचहरी के जटिल और उबाऊ कार्य पद्धति में खपा दें? क्या वह एक सामान्य से कार्य के लिए अधिकारियों के दरवाजे पर नाक घिसता रहे और अपने स्वाभिमान व आत्मसम्मान को गिरवी रख दे? निश्चित रूप से नहीं। ऐसी दशा में तो एक ही प्रयोग शेष रह जाता है कि वह अपने जीवन में पूर्णता से राज्यलक्ष्मी का प्रयोग संपन्न करे। इस लेख में दिए गए अन्य प्रयोगों की भांति यह प्रयोग भी तांत्रोक्त प्रयोग है।

जीवन में व्याप्त ऐसी प्रत्येक कटु व अपमानजनक स्थितियों के निवारण की व्यवहारिक विधि है। निवारण का तात्पर्य यह नहीं होता कि हम किसी का विनाश कर देंगे अपितु यह होता है कि दुर्भाग्यवश जो हमारे जीवन में प्रतिकूल स्थिति है वह समाप्त हो तथा अनुकूलता प्रारम्भ हो। राज्यलक्ष्मी प्रयोग ऐसा ही प्रयोग है, राज्यपक्ष से मधुरता व सहजता की स्थिति निर्मित करने का प्रयोग है।

साधक के लिए आवश्यक है कि वह पूर्ण रूप से **सिद्ध लक्ष्मी लघु शंख** प्राप्त करें और उसे पूरी तरह से काजल से रंग दें तथा **मूंगे की माला** द्वारा निम्न मंत्र का पांच माला मंत्र जप करें।

यह प्रयोग मंगल के ही दिन किया जा सकता है। मंत्र जप की समाप्ति पर साधक मूंगे की माला को स्वयं धारण करें तथा शंख को काले कपड़े में लपेट कर जेब अथवा बैग में रखे जिस पर किसी की नजर न पड़े।

मंत्र

ॐ श्रीं श्रीं राज्यलक्ष्म्यै नमः

जब भी आवश्यकता हो तब उपरोक्त शंख को वार्तालाप करने के समय अपने साथ ले जाएं और आप पाएंगे कि स्थितियां आपके अनुकूल हो रही हैं। अनावश्यक रूप से लगने वाली बाधाएं और अड़चनें समाप्त हो रही हैं तथा आपके प्रति सहयोग का वातावरण बनने लगा है। सामान्य साधक भी ऐसे शंख को अपने साथ रखकर जिस दिन मुकदमों में पेशी हो या कहीं अन्य कोई महत्वपूर्ण कार्य हो तो इसका प्रभाव प्रत्यक्ष अनुभव कर सकते है।

मैं आपकी जवानी लौटाने का वायदा करता हूं इस 'अमृतो' प्रयोग से

यौवन लौट सकता है जीवन में इस प्रकार. . . एक ऐसी अद्भुत विधि जिसका समय- समय पर प्रयोग कर योगीजन अपने- आप को चिरयौवन युक्त बनाए रखते हैं और प्राप्त करते हैं साधना के गुप्त रहस्यों को . . .

यौवन का अर्थ हमने बहुत सीमित किया है और यौवन का तात्पर्य केवल एक ही पक्ष से संबंधित मान लिया। और इसी गलत धारण के कारण फिर व्यक्ति अपने को कहीं बूढ़ा मानने लगता है तो कभी जीवन के दिन बीत जाने जैसी बात . . . लेकिन यह तो केवल एक बात हुयी, सही अर्थों में कहा जाए तो जीवन न इतनी शीघ्र थक जाने की बात है और न रुक जाने की . . . स्त्री -पुरुष संबंध तो यौवन के ग्रंथ का एक पृष्ठ या अधिक से अधिक एक अध्याय मात्र है। सच तो यह है कि यौवन का अर्थ, जीवन को पूरी तरह से जी लेने का हौसला, उफनती नदी को इस पार से उस पार तक तैर कर पार कर लेने का हौसला है और जब तक जीवन में ऐसा कुछ बना रहे तब तक फिर यौवन गया ही कहां . . . **इसी से आपने भी देखे होंगे ऐसे वृद्ध या प्रौढ़ जो जीवन की इन्हीं उमंगों के कारण चिर युवा दिखते रहते हैं,** क्योंकि उनके पास होता है जीवन के प्रति एक आशावादी दृष्टिकोण। इस 'अमृतो' प्रयोग का भी यही तात्पर्य है। यह ऐसा कोई प्रचार या दावा नहीं है कि बाल सफेद से काले हो जाएंगे या मांस-पेशियां तन जाएंगी लेकिन क्या मन में उमंगों का प्रवाह उमड़ जाना किसी भी तरह से युवावस्था से कम है और सच तो यह है कि आज की स्थितियों में आज के युवाओं की दशा को देखने के बाद तो बहुत से पचास - पचपन वर्षीय प्रौढ़ भी अधिक स्फूर्ति दायक दिखते हैं।

यौवन का सही अर्थ है जीवन में आकांक्षाओं और उनकी पूर्ति के लिए निरंतर चलते रहना। यह चलना ही सही अर्थों में युवावस्था का पर्याय है, क्योंकि युवावस्था बहती धारा का नाम है, क्योंकि यौवन किसी झील का नाम नहीं यौवन तो एक नदी का नाम है।

जीवन में जब भी ऐसी स्थिति आ जाए तब समझ लेना चाहिए कि मेरा यौवन मुझको वापस मिल गया। जब भी कभी ऐसा प्रयोग का अवसर मिल जाए तो विश्वास कर लेना चाहिए कि अब उदासी और निराशा के बादल

छूट गए, एक बार फिर से उमंगों और आकांक्षाओं के बीच जीने के दिन वापिस आ गए . . . और उमंगें व जीवन की कामनाएं क्या कभी समाप्त होती हैं। आयु के कुछ वर्ष बीतने के साथ ही हम बहुत कुछ अप्रासंगिक मानकर पीछे हट जाते हैं और अपनी ही कमजोरियों की तरह जीवन के उन शैलियों को अपना लेते हैं जिससे उन्हीं हताश और निराश लोगों के बीच में घुल - मिल सकें। लेकिन यह तो एक प्रकार का पलायन है और वृद्धावस्था पलायन की सही परिभाषा है। ऐसी स्थिति में यौवन प्राप्त करने का निश्चय कर ही लेना चाहिए। कार्य करने में आयु कभी भी बाधक नहीं बनती। इतिहास के पन्नों को पलट कर देखिए तो विश्व के प्रमुख राजनीतिज्ञों, वैज्ञानिकों, कलाकारों और ख्याति प्राप्त व्यक्तियों ने अपने जीवन के उतरार्द्ध में ही जीवन के महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न किए हैं . . . तब उनमें एक अतिरिक्त परिपक्वता जो आ जाती है और यह परिपक्वता फिर न योग के आसनों से आ सकती है और न कायाकल्प की औषधियों से।

वास्तव में **आंतरिक रूप से सकारात्मक चिंतन और उपयुक्त साधना का बल - ये दोनों मिलकर ही व्यक्ति को सदैव युवा बनाए रखते हैं। व्यक्ति की गति शीलता ही जीवन के प्रति प्रेम और आह्लाद देती है** और इन्हीं की पूर्ति होती है साधना द्वारा प्राप्त उर्जा से। इन दोनों का तालमेल ही व्यक्ति के चेहरे पर यौवन की गुलाबी आभा खिला सकता है जो वास्तव में तृप्ति की और मानसिक संतोष की झिलमिलाहट होती है ज्यों किसी बच्चे की आंखें किसी नए रहस्य को प्राप्त कर उल्लास से चमक जाती हैं, वैसी ही मनः स्थिति सदैव यौवन प्राप्त करने का सीधा और सरल उपाय साधना है। ऐसी मानसिकता मिलती है इसी अमृतो प्रयोग से। यह केवल एक प्रयोग नहीं यह अमृत का पान है। ऐसे अमृत का पान जिसे व्यक्ति अपने अंदर मंथन कर स्वयं उत्पन्न करता है और इसका पान कर चिरयुवा बना रहता है। तभी तो उसे यह प्रकृति सदैव नूतन और नवीन दिखती रहती है। ऊपर का खुला नीला स्वच्छ आसमान प्रतिदिन मन में आनन्द जगाता है और नित्य झूमते फूल उसके रोम-रोम को हर्षित करने का कारण बन जाते हैं। प्रकृति का प्रत्येक उपादान उसे अपना लगने लगता है और प्रकृति से एक रस हो जाना, नित्य युवा बने रहने का रहस्य है। क्योंकि प्रकृति कभी भी वृद्ध नहीं होती। नित्य नूतन ढंग से स्पन्दित प्रकृति से क्या किसी का मन भरा है। प्रकृति के इस तादात्म्य का उपाय है प्रकृति से ही प्राप्त यह अमृत प्रयोग।

अपने सौन्दर्य से ही नहीं प्रकृति ने तो अपने गुणों से, अपनी औषधियों से अपने एक-एक कण से मनुष्य का जीवन परिपूर्ण बनाना चाहा। **प्रकृति किसी भी रूप में व्यक्ति को अशक्त, उदास, एकांगी या निराश रहने ही नहीं देना चाहती** और इसी का उपाय है यह प्रयोग।

युवावस्था और आयु. . . दोनों में कोई विरोधाभास ही नहीं, विश्व के ख्याति प्राप्त राजनीतिज्ञों, कलाकारों, वैज्ञानिकों ने अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में ही महत्वपूर्ण कार्य किए हैं . . . तब एक अतिरिक्त परिपक्वता जो आ जाती है!

इस अमृतो प्रयोग में एक ऐसा ही अभी तक अप्राप्त रहा विधान स्पष्ट किया जा रहा है जिसके प्रभाव से व्यक्ति के अंदर अमृत की रस धाराएं सी प्रवहित होने लगती हैं और शोक, जड़ता, उदासी, मानसिक दौर्बल्य जैसे विष के स्रोत समाप्त होकर सहज ही अमृतमय बनने के क्रिया प्रारम्भ हो जाती है। प्रयोग में **चार अमृत बीजों** की आवश्यकता पड़ती है और एक **विशिष्ट संजीवनी माला** की। यह एक माह तक किया जाने वाला प्रयोग है। साधक अपने बाएं हाथ की मुट्ठी में चार अमृत बीजों को दबाकर उपरोक्त माला से निम्न मंत्र का जप करें।

मंत्र -

ॐ हुं हुं हुं चैतन्य स्वर्ण देह यौवनागम हुं हुं हुं फट्

इसमें साधक प्रतिदिन कम से कम पांच माला मंत्र जप अवश्य करे, २१ माला से अधिक मंत्र जप करने की आवश्यकता नहीं है। ऐसा वह प्रतिदिन एक माह तक नियमपूर्वक करे। उसके पश्चात् साधना के अंतिम दिन, मंत्र जप की समाप्ति पर चारों अमृत बीज चारों दिशाओं में उछाल दे एवं माला को किसी शिव मंदिर में भेंट कर दे। इसके उपरान्त साधक के शरीर में एक विशेष प्रकार की स्थिति का निर्माण होने लगता है।

परालौकिक रहस्य रोमांच विशेषांक : दीक्षा व सामग्री परिशिष्ट

पत्रिका- पाठकों की विशेष सुविधा को ध्यान में रखते हुए, पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक साधना में संबंधित सामग्री की व्यवस्था करने का अथक प्रयास किया जाता है, दुर्लभ एवं कठिनाई से प्राप्त होने वाली सामग्री को उचित न्यौछावर पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाती है, तथा साधना से संबंधित दीक्षा की विशेष व्यवस्था भी की जाती है।

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
अनंग - रति यंत्र	०६	३००/-
चार कामदेव हेत्वा	०६	२४०/-
मंजरी माला	०६	१५०/-
स्फटिक माला	०६	३००/-
सरस्वती यन्त्र	०७	७५/-
छिन्नमस्ता यन्त्र	१३	२४०/-
छः छिन्नमस्ता आयुध	१३	१५०/-
छिन्नमस्ता माला	१३	२४०/-
१ हकीक पत्थर	२१	११/-
१ गोमती चक्र	२१	२१/-
पद्मावती यन्त्र	२१	३००/-
मूंगे की माला	२१	१५०/-
लघु नारियल	२२	२१/-
हिरण्य गर्भ	२३	८०/-
बिल्ली की नाल	२३	८०/-
सिद्धि गुटिका	२४	१००/-
रुद्राक्ष माला	२६	२४०/-
वीर विक्रम हनुमन्त यंत्र	२६	१२०/-
हनुमान मुद्रिका	२६	४०/-
महाशिव पार्वती सर्वकामना सिद्धि पैकेट	३४	३००/-

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
नवनाथ गुटिकाएं	४१	४५/-
वैद्यनाथ यंत्र	४४	१५०/-
काली हकीक माला	४४	१५०/-
पांच ब्रह्म रुद्राक्ष	४४	७५/-
लक्ष्मी यंत्र	५२	३००/-
लक्ष्मी माला	५२	१५०/-
महागणपति यंत्र	६३	२४०/-
दो धूम्रक	६३	२५/-
वैश्रव्य	६३	११/-
पारद सरस्वती मुद्रिका	६३	१५०/-
तांत्रोक्त माला	६३	३००/-

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
सिद्धि प्रदायक वैताल यंत्र	६४	३००/-
वैताल माला	६४	२४०/-
भगवान शिव एवं महाकाली का चित्र	६४	२५/-
मुक्ता मणि	६८	२४०/-
उर्वशी यंत्र	६८	२४०/-
त्रैलोक्य मोहन गौरी महायंत्र	७०	१५०/-
१ लक्ष्मी च क्र	७०	२१/-
१ तांत्रोक्त फल	७४	२१/-
१ अमृत बीज	७६	११/-
विशिष्ट संजीवनी माला	७६	२४०/-

दीक्षा

दीक्षा	पृष्ठ	न्यौछावर
वैताल दीक्षा	६४	५१००/-
कुण्डलिनी जागरण दीक्षा		३१००/-
रोगमुक्ति धनवन्तरी दीक्षा		२१००/-
महालक्ष्मी साफल्य दीक्षा		३५००/-
अप्सरा या यक्षिणी दीक्षा		२४००/-
सर्वकामना पूरिणी दीक्षा		२४००/-
राजयोग दीक्षा		६०००/-
क्रिया योग दीक्षा		६०००/-

चेक स्वीकार्य नहीं होंगे। ड्राफ्ट किसी भी बैंक का हो, वह **''मंत्र शक्ति केन्द्र''** के नाम से बना हो, जो जोधपुर में देय हो।

मनिऑर्डर या ड्राफ्ट भेजने का पताः-

मंत्र शक्ति केन्द्र, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,जोधपुर-३४२००१(राज.),टेलीफोन : ०२९१-३२२०९

दीक्षा के लिए पहले से ही समय एवं स्थान तय कर अनुमति लेकर ही आएं

३०६,कोहाट इन्क्लेव,नई दिल्ली, टेलीफोन : ०११-७१८२२४८

वर्ष १४ **अंक १** **जनवरी ९४**

प्रधान संपादक - नन्दकिशोर श्रीमाली

सह सम्पादक मण्डल - डॉ. श्यामल कुमार बनर्जी, सुभाष शर्मा, गुरुसेवक,गणेश वट्टाणी, नागजी भाई

संयोजक - कैलाश चन्द्र श्रीमाली, वित्तीय सलाहकार - अरविन्द श्रीमाली

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान , डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - ३४२००१ (राज.) ,फोन : ०२९१ - ३२२०९

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली - ११००३४, फोन : ०११-७१८२२४८, फेक्स : ०११-७१८६७००

प्रकाशक एवं स्वामित्व श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली द्वारा नव शक्ति इन्डस्ट्रीज, C. १३ , न्यू रोशनपुरा, नजफगढ़ दिल्ली से मुद्रित तथा गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली से प्रकाशित।

है, कि हम ऐसे देवत्व ऋषि तुल्य मनीषि के शिष्य हैं। **पूज्य श्रीमाली जी के हम शिष्य हैं यह कहने में हमें गौरव की अनुभूति होती है, हमारा सिर गर्व से तन जाता है, और सारा विश्व हम पर रश्क करता है।**

सिद्धाश्रम के सप्राण -

सर्वोच्च आध्यात्मिक शक्ति का आधार सिद्धाश्रम हजारों-हजारों योगियों, गृहस्थों का आराध्य स्थल रहा है, और प्रत्येक अपने आप में सपना संजोए रहते हैं कि कल्प वृक्ष युक्त **परम हंस स्वामी सच्चिदानन्द जी** की तपस्या से आपूरित सिद्धाश्रम में जाकर जीवन का सौभाग्य प्राप्त करें, उन योगियों के दर्शन करें जो सैकड़ों वर्षों की आयु प्राप्त है; उन ऋषियों का सत्संग साहचर्य अनुभव करें जो तपस्या के पूंजीभूत स्वरूप हैं।

ऐसे सिद्धाश्रम के प्राण, संचालक और आधार तुल्य गुरुदेव श्रीमाली जी के साथ ही ऐसी दिव्य भूमि में जाने की कल्पना कर सकते हैं उनके सान्निध्य से ही हम सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सकते हैं, उनकी कृपा से ही हमारा स्वप्न साकार हो सकता है और यह सम्भव है परम पूज्य गुरुदेव की कृपा से, उनके साहचर्य से, उनकी उपस्थिति से, उनकी जीवन्तता, सप्रणता, चैतन्यता और आशीर्वाद से।

हीरक जयन्ती -

और यह हम लोगों का सौभाग्य है कि **२१ अप्रेल १९९४** को उनकी भौतिक देह का ६० वां वर्ष प्रारम्भ हो रहा है, **६० वां वर्ष यानी हीरक जयन्ती, साठवां वर्ष यानी अद्वितीय जयन्ती शिष्यों के लिए आह्लाद जयन्ती, अहोभाव जयन्ती, उल्लास उमंग।**

और हमारे जीवनकाल में पूज्य गुरुदेव की हीरक जयन्ती का अवसर हम समस्त संसार के शिष्यों और साधकों ने उच्च कोटि से अद्वितीय स्तर से सम्पन्न करने का निश्चय कर रहे हैं, और इसके लिए एक अलग से **''प्रकोष्ठ गठन''** कर रहे हैं, जो पूरे वर्ष भर अद्वितीय समारोह सम्पन्न करेंगे. . . शिष्यों का पारस्परिक मिलन, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सेमीनार, सन्यासी शिष्यों एवं गृहस्थ शिष्यों का सुखद आश्चर्यजनक समागम, मिलन, दादा गुरु श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी को हम गृहस्थ शिष्यों के बीच निमंत्रण एवं **परम पूज्य गुरुदेव को अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट।**

यह पूरा वर्ष समारोह वर्ष होगा जो अप्रेल ९४ से अप्रैले ९५ तक गतिशील रहेगा, प्रत्येक महीने किसी न किसी स्थान पर **शिविर, स्वागत-समारोह, अपने घर पर गुरुदेव निमंत्रण, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सेमीनार, गुरुदेव के सम्पूर्ण जीवन की फिल्म दूरदर्शन से धारावाहिक रूप में प्रस्तुति करण और उनके जीवन से सम्बन्धित उच्च कोटि के ग्रन्थों का लेखन-प्रकाशन आदि - आदि।**

इसके लिए बहुत बड़ी धनराशि की जरूरत है, फिल्म निर्माण व अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशन में ही लाखों रुपये व्यय होंगे, फिर कई कार्यक्रम सेमीनार आदि, इसके लिए आपके सहयोग की जरूरत है और मुझे विश्वास है कि ''सहयोग'' शब्द उच्चारण करने की जरूरत ही नहीं है, **हम सब लोगों का कर्त्तव्य है कि हम ललक कर आगे आवें, अपनी प्रतिभा का प्रस्तुति करण करें और ज्यादा से ज्यादा धनराशि सहयोग स्वरूप में समर्पित करें।** बैंक ड्राफ्ट से, व्यक्तिगत रूप से मिलकर, मनिआर्डर द्वारा और अन्य स्रोतों से।

पर इतना बड़ा कार्य सौ- पांच सौ, हजार रुपयों के सहयोग से गतिशील नहीं होगा, इसके लिए तो लाखों रुपयों का कोष बनाना होगा, जल्दी से जल्दी इस कार्य को सम्पन्न करना होगा, तभी यह कार्य -- हम सभी शिष्यों का कार्य गतिशील होगा, हम में से प्रत्येक शिष्य चाहे छोटा हो चाहे बड़ा, इस अद्वितीय कार्य में **योगदान देगा ही, देना ही है, सब कुछ त्याग कर, समर्पित कर, न्यौछावर कर।**

इस कोष में जो भी सम्भव हो बड़ी से बड़ी धनराशि बैंक ड्राफ्ट या व्यक्तिगत रूप से देनी ही है, पर छोटी से छोटी इकाई पांच हजार से कम तो क्या होगी, तभी तो हम इतना बड़ा आयोजन सम्पन्न कर सकेंगे, तभी तो इस वर्ष को **''गुरुदेव हीरक जयन्ती''** के रूप में मना सकेंगे. . . पर यह सहयोग समर्पण तुरन्त करना है. . . आज ही अभी. . . सहयोग राशि बैंक ड्राफ्ट या मनिआर्डर से भेजें बैंक ड्राफ्ट --- **''डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली फाउन्डेशन इन्टरनेशनल चेरिटेबिल ट्रस्ट ''** --- के नाम से बना हो तथा रजिस्टर्ड डाक से भेजें, पता लिखें --

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर (राज.) ,

मनिआर्डर भेजें तो **''डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली फाउन्डेशन इन्टरनेशनल चेरिटेबिल ट्रस्ट ''** के नाम से भेजें, तथा उपरोक्त पता लिखें।

इसके अतिरिक्त जानकारी के लिए पत्र लिखें या टेलीफोन करें-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर(राज.), ३४२००१,
फोन-०२९१-३२२०९

अथवा

गुरुधाम,
३०६, कोहाट एन्क्लेव,
पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४,
फोन-०११-७१८२२४८,फेक्स-०११-७१८६७००